¶ इन काली कुर्तीवालों को हम पहिचानते थे। ये भी ग़रीब ही थे, परन्तु एक ख़ास किस्म के ग़रीब। अमीरों और हाकिमों के ख़िलाफ़ विद्रोह करने की शक्ति और आत्मविश्वास न होने से ये किसानों और ग़रीब मज़ूरों पर अत्याचार करने और लूटने के लिए मालदारों के तलुवे सहलाना पसन्द करते थे। पिछले कुछ बरसों से इन्हें एक खास ढंग की वर्दी और ख़ास ढंग के हथियार देकर एक विशेष फौज में भर्ती करना बिलकुल नई और अजीब बात थी।

फ़ाशिस्ट नाम से पुकारे जानेवाले सब ऐसे ही उचक्के और लफंगे हैं। ¶

◆ एक फौजी दस्ते का फ़ाण्टामारा में आकर औरतों के साथ बलात्कार करना तो उजागर था; परन्तु पुलिस-अफ़सर की मौजूदगी में और क़ानून के नाम पर औरतों के साथ ज़िनाकारी की जा सकती है, यह बात हमारी समझ में साफ़-साफ़ नहीं आती थी।

उसी तरह फ़ाशिस्टों ने बेगुनाहों को पीटा, घायल किया और मार डाला। और यह उजागर है। लेकिन उनके इस कुकर्म को सदा राज्य से उत्तेजना मिली और वे पुरस्कृत भी हुए और यही बात हमारी समझ में नहीं आती थी। ◆

फा रटा मा रा

[इटली के साम्यवादी लेखक इग्नाज़ियो सिलोनी के सुप्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी अनुवाद]

: अनुवादक :

श्यामू संन्यासी

सरस्वती प्रेस
बनारस

: प्रकाशक :

सरस्वती प्रेस,

बनारस ।

प्रथम संस्करण, १९४२

द्वितीय संस्करण, १९४६

मूल्य : २॥)

: मुद्रक :

श्रीपतराय, सरस्वती-प्रेस, बनारस ।

प्राक्कथन

मैं जिन घटनाओं के बारे में लिखनेवाला हूँ, वे पिछली ग्रीष्म में फाण्टामारा में हुई थीं।

खेती के लिए सुखाई हुई फ्युसिनो झील के उत्तर में बसे फाण्टा-मारा की कल्पना मार्सिका के एक अत्यन्त दरिद्र और बाबा आदम के जमाने के गाँव के रूप में कीजिए। ऊँची पहाड़ी पर, एक जर्जरित गिर्जाघर के चारों ओर बसे, युगों पुराने, बेडौल, एक-मंजिले, आँधी-पानी से पिटे और कई तरह के स्लेट-कवेलू से किसी तरह छाये एक सौ टूटे-फूटे झोपड़े! कच्ची फर्शवाले इन अधिकांश झोपड़ों में दरवाजे, खिड़की और चिमनी के लिए केवल एक ही रास्ता है। इनके अन्दर आदमी, औरतें और बच्चे, गदहे, मुर्गियाँ और बकरियाँ रहती, सोती, खाती-पीती और अपनी वंशोत्पत्ति करती हैं।

जिन घटनाओं का मैं वर्णन करनेवाला हूँ, यदि वे न हुई होतीं तो फाण्टामारा के बारे में उल्लेखनीय कुछ न होता। मैंने अपने जीवन के प्रारंभिक बीस वर्ष फाण्टामारा में बिताये और इस बारे में सिवा इसके कि मैं वहाँ बीस वर्ष तक रहा, अधिक कहने जैसा कुछ नहीं है।

बीस वर्षों तक मैंने वहाँ की अपरिवर्तनशील धरती और आस-मान, वर्षा और हिमपात, झोंपड़े और खान-पान, गिर्जाघर, संत-दिवस और वहाँ की गरीबी देखी और जानी है: फाण्टामारा की वह अनन्त दरिद्रता जो दारिद्र्य के वारिस पितामहों और प्रपितामहों द्वारा पिताओं और पुत्रों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में मिलती चली आ रही है। ऐसा लगता है कि वहाँ के मनुष्य, पशु और स्वयं धरती का जीवन ही परिवर्तनशील समय से अप्रभावित, प्रकृति के किसी अन्तहीन चक्र में बँधा घूम रहा है।

पहले बोनी होती, फिर निराई, फिर छटाई (क़लम) होती, तब दवा छिड़की जाती, फिर कटनी होती, फिर अंगूर चुने जाते और तब . उसके बाद ?

बोनी, निराई, छँटाई, छिड़काव, कटनी और अंगूरों का चुना जाना।

हमेशा वही-का-वही। कभी कोई परिवर्तन नहीं। ढेरों वर्ष आये और चले गये; जवान बूढ़े हुए और बूढ़े मर गये। बोनी, निराई, छँटाई, छिड़काव, कटनी और खेती होती रहती। और उसके बाद? बस वही-का-वही क्रम। और बाद में भी कभी कोई परिवर्तन नहीं। प्रत्येक वर्ष पिछले वर्ष की तरह, प्रत्येक मौसम पिछली मौसम की-सी और प्रत्येक पीढ़ी अपने से पिछली पीढ़ी जैसी होती थी।

जब मौसम ख़राब होता, देहाती कौटुम्बिक मामलों में लगे रहते यानी मुक़दमे लड़ते। फाण्टामारा में ऐसा एक भी परिवार नहीं है जो एक दूसरे से सम्बन्धित न हो। छोटे गाँवों में, जैसा कि नियम है, प्रत्येक परिवार एक दूसरे से सम्बन्धित होता है और इसलिए उनके स्वार्थ भी आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इन स्वार्थों को लेकर वे उन्हीं पुराने-धुराने, कभी फ़ैसला न होनेवाले झगड़ों के बारे में पीढ़ी-दर-पीढ़ी कभी समाप्त न होनेवाली मुक़दमेबाज़ी करते हैं। और इन झगड़ों और मुक़दमेबाज़ियों का एकमात्र उद्देश्य रहता है किसी कँटीली झाड़ी पर अपना स्वामित्व स्थापित करना। झाड़ी जला दी जा सकती है, पर उससे कुछ मुक़दमे का अन्त नहीं हो जाता।

कोई चारा नहीं था। प्रतिमास बीस सॉल्डी (एक सिक्का), तीस सॉल्डी, गर्मियों में सौ सॉल्डी महीना तक बचाया जा सकता था, जो वर्ष के अन्त तक लगभग तीस लीरा (सिक्का) तक पहुँच जाता। पर तब कोई बीमारी या कोई दुर्घटना आ पड़ती और दस वर्ष की बचत चट कर जाती। फिर से बीस सॉल्डी, तीस सॉल्डी, सौ सॉल्डी महीना करके शुरू करना पड़ता। फिर कुछ गड़बड़ हो जाती और तब फिर से कौड़ी-कौड़ी जोड़ने की शुरुआत होती।

इस बीच नीचे मैदान में कई परिवर्तन हुए, पर फाण्टामारा पर उनका कोई असर न हुआ। वहाँ की धरती ऊसर, खुश्क और पहाड़ी थी। छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटवारा की हुई उस ऊसर जमीन का बन्धकों द्वारा भीषण दोहन हो रहा था। दो-चार एकड़ से किसी भी किसान के पास ज्यादा जमीन न थी।

अस्सी वर्ष पूर्व फ्युसिनो झील के सुखाये जाने से मार्सिका का जलवायु स्थायी रूप से इस हद तक उष्ण हो गया था कि पास-पड़ोस की पहाड़ियों पर होनेवाली खेती नष्ट हो गई। जैतून के कुञ्ज बुरी तरह से बर्बाद हो गये। अंगूरों को बीमारी लग गई और उनका पूरी तरह से पकना रुक गया। हिमपात प्रारम्भ होने से पहले ही, अक्तूबर के अन्त में उन्हें चुन लेना पड़ता था। ये अंगूर एक खट्टी, और तेजाब जैसी तेज शराब बनाने के काम में आते थे। और दुर्भाग्यवश यह शराब इसे पैदा करनेवाले अभागे किसान ही को अधिकांश में पीना पड़ती थी।

फ्युसिनो झील सुखाकर जो जमीन खेती के काम में लाई गई थी, वह इटली की सर्वश्रेष्ठ और उपजाऊ जमीनों में से थी; परन्तु उस पर होनेवाले शोषण से इन हानियों की क्षति-पूर्ति नहीं हो पाती। सारा इलाका बिलकुल गुलामी की दशा को पहुँच गया था। प्रति वर्ष इससे उत्पन्न होनेवाली विशाल सम्पत्ति उत्पादन-क्षेत्र में न रहकर राजधानी पहुँच जाती थी। रोमन कम्पाना और टस्कानी प्रान्त के एक विशाल हिस्से के साथ ही फ्युसिनो की ८००० एकड़ जमीन पर एक कथित राजकुमार (प्रिन्स) टोर्लोनिया का अधिकार था।

यह राजकुमार, पिछली शताब्दी के प्रारम्भ में एक फ्रान्सीसी रेजीमेण्ट के साथ रोम आनेवाले टोर्लोन नामक किसी 'औवरनाट' का वंशज था! पहले उसने युद्ध पर और तब शान्ति पर सट्टा किया। तब उसने नमक का सट्टा किया। उसने १८४८ और १८५९ की लड़ाइयों और उनकी सुलहों पर, तथा बोअरबॉन्स वंश के उत्थान-पतन पर भी सट्टा किया। १८६० के बाद वह फ्युसिनो झील को खाली करने

के लिए मुहाना बनानेवाली एक फ्रैंको स्पेनिश-नैपोलिटन कम्पनी का अधिकार पा गया। बहुत ही सस्ते दामोंमें उसने हिस्से खरीदे। नेपुल्स के बादशाह द्वारा कम्पनी को प्रदान की गई सुविधाओं के अनुसार टोर्लोन को नई जमीन की उत्पन्न नब्बे वर्ष तक उपभोग करने का अधिकार मिल गया। लेकिन पिडमॉण्टेसी वंश को राजनैतिक सहायता देने के उपलक्ष में यह अधिकार अनन्तकालीन कर दिया गया और उसे ड्यूक की और बाद में राजकुमार की उपाधि प्रदान की गई। इस तरह पिडमाण्टेसी वंश ने उसे वह दिया जो स्वयं उसके अधिकार में भी नहीं था।

अपनी ईश्वरीय सम्पत्ति की रक्षा के लिए इन दिनों कथित राजकुमार टोर्लोनिया के पास निजी सशस्त्र रक्षकदल है। एक चालीस मील लम्बी नहर उसकी विशाल जागीर को घेरे हुए है। उस पर पहुँचने के लिए एक पुल पर होकर जाना पड़ता है, जो रात में उठा लिया जाता है।

लगभग दस हजार गरीब किसान इस पर काम करते हैं। कथित राजकुर टार्लोनिया अपनी जमीन समीपवर्ती बैरिस्टरों, डॉक्टरों, सॉलिसिटरों, अध्यापकों और अमीर किसानों को किराये पर उठा देता है, जो या तो बाँटे पर या स्वयं ही गरीब किसानों को रोज-मजूरी पर रखकर खेती कराते हैं। फ्युसिनो तलहटी के सभी प्रमुख स्थानों में हर सबेरे किसानों का एक बाजार लगता है, जहाँ पर खेती करानेवाले किसान दिन में एक मर्तबा अपने मजूर नियुक्त करते हैं। किसानों को अपने काम पर पहुँचने के लिए नित्य तीन से आठ मील तक चलना पड़ता है।

फ्युसिनो से राजकुमार टोर्लोनिया को मिलनेवाली अपार सम्पत्ति किसानों की विपत्ति में चौंका देनेवाला वैषम्य है। फ्युसिनो से प्रतिवर्ष चालीस हजार टन मीठा चुकन्दर, पन्द्रह हजार टन नाज और दो हजार टन सब्जियाँ उत्पन्न होती हैं।

फ्युसिनो का चुकन्दर यूरोप के एक अति प्रमुख शकर बनानेवाले

कारखाने के लिए कच्चा माल है, परन्तु इसे उत्पन्न करनेवाले किसानों के लिए तो शक्कर एक विरल सुखोपभोग की वस्तु ही रहती है। वह उनके घरों में, वर्ष में केवल एक बार ईस्टर-केक्स के रूप में पहुँचती है। फ्युसिनो का लगभग सभी अनाज शहर में डबल-रोटियाँ, केक और बिस्किट बनने चला जाता है। वहाँ कुत्ते और बिल्लियाँ तक उसे खाते हैं, लेकिन अनाज पैदा करनेवाले किसानों को तो वर्ष में अधिकतर मक्का की रोटी ही खानी पड़ती है। फ्युसिनो से उन्हें अधपेट मज़दूरी भर मिलती है; इतनी मज़दूरी जिससे वे अपने आपको किसी तरह टिकाये रख सकें।

एक समय था जब किसान अमेरिका जा सकते थे। युद्ध से पहले फाण्टामारा के कुछ निवासियों ने सचमुच अर्जेण्टाइन और ब्राज़ील में क़िस्मत आजमाई थी। जिन्हें सफलता मिली वे फिर फाण्टामारा नहीं लौटे और पड़ोस में ही, जहाँ उनकी बचत से लाभ होने की संभावना थी, बस गये। जो असफल रहे वे फाण्टामारा लौट आये और फिर से वहाँ की पशुतुल्य सुस्ती के अधीन हो गये। उनके पास समुद्र-पार बिताये हुए सुखमय जीवन के सपने लुप्त स्वर्ग-दृश्य की तरह बचे रह गये थे।

कई वर्षों से यहाँ का जीवन स्थिर होते हुए भी, पिछले साल कुछ सप्ताहों में एक के बाद दूसरी लगातार होनेवाली घटनाओं ने फाण्टामारा को जड़-मूल से हिला दिया। ये घटनाएँ उसी समय समाचार-पत्रों तक नहीं पहुँचीं। कुछ महीनों के बाद ही इटली और विदेश में इसके सम्बन्ध में अफ़वाहें उड़ने लगीं।

फाण्टामारा, जो गाँव नक्शे तक पर न था, शीघ्र ही सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गया। कई लोग तो इसे इटली के एक बड़े हिस्से का—खासकर दक्षिणी इटली का—प्रतीक समझने लगे।

मैं कह ही चुका हूँ कि मेरा जन्म फाण्टामारा के पड़ोस में ही हुआ था और बीस वर्षों तक मैं वहीं रहा था। परन्तु कई वर्षों तक दूर रहने के कारण मैं इस विचार को रोक न सका कि फाण्टामारा में हुई

कही जानेवाली ये घटनाएँ बिलकुल बेसिर-पैर की हैं या वे हुई ही नहीं हैं, अथवा दूसरी कई कहानियों की तरह इस या उस कारण से महज गढ़ी जाकर, इस एकाकी गाँव से संलग्न कर दी गई हैं, ताकि उनका पता लगाना और भी कठिन हो जाय। मैंने उसी समय वहाँ से सीधे समाचार पाने की कोशिश की, पर मेरे सभी प्रयत्न निष्फल रहे।

यह सब कुछ मैं भूलने ही लगा था कि एक अप्रत्याशित घटना हुई। एक रात जब मैं देर से घर लौट रहा था, मैंने अपने मकान के प्रवेश-द्वार पर तीन किसानों को जिनमें दो पुरुष और एक स्त्री थी, एक साथ बैठे देखा। उनके शिरोवस्त्र और सन के थैलों से मैंने उन्हें एकदम पहचान लिया। वे फाण्टामारा के रहनेवाले थे। जैसे ही मैं पहुँचा, वे उठ खड़े हुए। गैस के उजाले में मैंने उनके चेहरे देखे। हाँ, वे फाण्टामारा ही के थे।

भूरे, ठूँठ-से, डरे हुए चेहरे और रीछ-सी धीमी गतिवाला एक लम्बा, पतला, बेहद बूढ़ा आदमी मेरे सामने खड़ा था। उसके पीछे, उसी की छाया में, उसकी स्त्री और बेटा खड़ा था। वे भीतर आये, बैठे और अपनी कथा प्रारम्भ की।

आरम्भ बूढ़े ने किया। तब उसकी स्त्री कहने लगी। फिर बूढ़ा सुनाने लगा, तब उसकी स्त्री, फिर बूढ़ा तब उसकी स्त्री और तब उनका लड़का। समाप्ति भी फिर बूढ़े ही ने की।

जब उसने समाप्त किया, सबेरा हो चुका था।

उन्होंने जो कुछ कहा, वह इस पुस्तक में है।

लेकिन सबसे पहले दो बातों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। इस कहानी में और दक्षिणी इटली के लोकसंगत साहित्यिक वर्णन में जमीन-आसमान का अन्तर है। सभी जानते हैं कि पुस्तकों में दक्षिणी इटली एक सुखी और रम्य प्रदेश है; वहाँ के किसान मंगल-गीत गाते हुए प्रसन्नतापूर्वक काम पर जाते हैं; सुन्दर और स्थानीय परम्परागत पोशाक पहने देहाती लड़कियाँ उनके राग में राग मिलाती हैं; पास-पड़ोस के वन-प्रदेश में बुलबुल गाती रहती है।

लेकिन फाण्टामारा में ऐसा कभी नहीं हुआ।

इस कहानी में 'स्थानीय रंग' ढूँढ़नेवाले को निराश होना पड़ेगा। उसे न तो फाण्टामारावालों की परम्परागत पोशाक के बारे में कोई शब्द मिलेगा और न स्थानीय बोली के बारे में ही। फाण्टामारा में जंगल है ही नहीं। वास्तव में, सारा पहाड़ी-प्रदेश एपिनाइन्स के अधिकांश भाग की तरह सूखा और उजाड़ है। चिड़ियाँ बहुत थोड़ी हैं और बुलबुल तो बिलकुल ही नहीं। स्थानीय बोली में बुलबुल के बारे में एक शब्द तक नहीं है। किसान न तो मिलकर गाते हैं और न अकेले ही। नशा करने पर भी वे नहीं गाते, और काम पर जाते हुए तो बिलकुल ही नहीं।

वे गाते नहीं, क़समें खाते हैं। क्रोध हो या प्रसन्नता, किसी भी बलशाली भावना को प्रदर्शित करने के लिए वे क़सम खाते हैं। उनके सौगन्ध खाने में भी किसी तरह की कोई विचित्रता नहीं है। वे इस दिशा में फ़्लोरेण्टाइन्सवालों की आलंकारिक कल्पना से भी शून्य हैं। वे सदा अपने दो-तीन परिचित सन्तों के नाम की ही और सदा उन्हीं-उन्हीं शब्दों में सौगन्ध खाते हैं।

मेरी जवानी के दिनों फाण्टामारा में गानेवाला केवल एक ही व्यक्ति था। वह मोची था और एक ही गीत जानता था, जिसका सम्बन्ध एबिसीनिया की लड़ाई से था। गीत यों शुरू होता था—

ओह, बाल्डीसेरा,
कालों से रहना होशियार...

साल के बारहों महीने, सबेर से साँझ मोची की उम्र के साथ ही निरन्तर बढ़ती जाती, एक शोक-सूचक ध्वनि में दुहराई जानेवाली इस सलाह से फाण्टामारा में यह भय फैल गया था कि अंत में कहीं मूर्खता, अन्यमनस्कता या महज लापरवाही से ही जनरल बाल्डीसेरा का अन्त न हो जाय। कई वर्षों के बाद हमें मालूम हुआ कि हमारे जन्म से पहले सचमुच ही यह दुर्घटना घट चुकी थी।

दूसरी बात है भाषा-सम्बन्धी। मैं किस भाषा में यह कहानी कहूँ?

क्षण-भर के लिए भी यह न सोचा जाय कि फाण्टामारावाले इटालियन बोलते होंगे। हमारे लिए इटालियन लेटिन, फ्रेञ्च या एस्परेण्टो की ही तरह स्कूल में सीखी हुई एक भाषा है। इटालियन विदेशी भाषा के समान है, एक मरी हुई भाषा, एक ऐसी भाषा जिसके शब्द-भण्डार और व्याकरण की उन्नति से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है और न कोई सम्बन्ध है हमारी विचारशैली या भाव-प्रकटीकरण से ही।

मुझसे पहले भी अवश्य ही अन्य दक्षिण-वासियों ने इटालियन भाषा बोली और लिखी है। यह ठीक वैसा ही है जैसा कि शहरों में जाते समय हम साफ़ जूते, कॉलर और टाई पहनते हैं। लेकिन हमारी ओर एक दृष्टिपात ही हमारा कष्ट प्रकट करने के लिए काफ़ी है।

इटालियन जबान हमारे विचारों को निर्बल और कुरूप बना देती है। अनुवाद से भावों की मौलिकता नष्ट होकर वे ओजहीन तथा नीरस हो जाते हैं। यदि अनुवाद करना पड़े तो आदमी अपने आपको ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। अगर यह सच है कि किसी भी भाषा में विचार प्रकट करने से पहले उस भाषा में सोचना सीखना चाहिए, तो हमें इटालियन बोलने में होनेवाली कठिनाई से यह स्पष्ट है कि हमें उसमें सोचना नहीं आता। दूसरे शब्दों में, इटालियन संस्कृति हमारे लिए विदेशी संस्कृति है।

परन्तु, चूँकि हमारे पास दूसरों को अपनी दशा समझाने का और कोई साधन न होने से और अपने बारे में समझाने का यह प्रश्न हमारे लिए जीवन मरण का प्रश्न होने से—हमें स्कूल में सीखी भाषा में अनुवाद करने का अच्छा-से-अच्छा उपयोग करना चाहिए। दर-असल हम चाहते यह हैं कि सभी फाण्टामारा का किस्सा जान जायँ।

यद्यपि हम एक उधार ली हुई भाषा में अपनी कहानी कहते हैं, परन्तु उसे कहने का ढंग हर हालत में हमारा अपना ही रहेगा। और कम-से-कम यह फाण्टामारा की कलाओं में से एक है, जिसे बचपन की लम्बी रातों में करघे की तालबद्ध गति के साथ हमने सीखा है।

कहानी कहने की कला, एक शब्द के बाद दूसरा, एक लकीर के

बाद दूसरी और एक वाक्य के बाद दूसरा वाक्य रखने की कला, बुनने की प्राचीन कला के सदृश है—उस पुरानी कला के समान जिसमें एक धागे के बाद दूसरा धागा और एक रंग के बाद दूसरा रंग सफाई से, सलीके से, सँभालकर रखा जाता है, ताकि सब साफ़-साफ़ देख सकें। पहले गुलाब का तना दिखाई देता है, फिर पत्तियाँ, तब कली और अन्त में पंखुड़ियाँ। आरम्भ से ही दीख जाता है कि यह गुलाब का फूल होनेवाला है, और इसी कारण से शहराती हमारी कृति को भद्दी और असंस्कृत समझते हैं। परन्तु क्या कभी शहर में जाकर हमने उसे उनके हाथ बेचने की कोशिश की है? कभी उन्हें बाज़ार में भी रखा है? कभी शहरातियों को हमारी तरह बोलने के लिए कहा है? नहीं, कभी नहीं!

तो, प्रत्येक आदमी को अपनी बात अपने ही ढंग से कहने का अधिकार रहे।

ज्यूरिच, ग्रीष्म, १९३०

इग्नाज़ियो सिलोनी

—एक—

पिछले साल एक जून को फाण्टामारा में पहली बार बिजली नहीं जली। दूसरी, तीसरी और चौथी जून को भी फाण्टामारा बिना बिजली के ही—अँधेरा—रहा।

ऐसा कई दिनों और महीनों तक जारी रहा। अन्त में फाण्टामारा फिर से चाँदनी रात का अभ्यस्त हो गया। चाँद के उजाले से बिजली के उजाले तक आने में पूरे सौ वर्ष लगे थे—इन सौ वर्षों में तेल और पेट्रोल का जमाना भी था। परन्तु हमें बिजली के उजाले से फिर चाँद के उजाले में ले जाने के लिए केवल एक ही साँझ काफी थी।

जवानों को यह किस्सा नहीं मालूम, पर हम बड़े-बूढ़े जानते हैं। पिडमाण्टेसी शासन के पूरे सत्तर वर्ष हम दक्षिणी किसानों के लिए जो नये परिवर्तन लाये वे कुल दो थे—बिजली और सिगरेट। बिजली तो उन्होंने फिर से ले ली; और रही सिगरेट सो उन्हें पीनेवालों का दम घुटे, हमारी बला से। हमारी चिलम भली और हम भले।

पहले-पहल बिजली का कट जाना हमारे लिए कोई अचम्भा नहीं होना चाहिए था, फिर भी वह अचम्भे से कम नहीं था।

फाण्टामारा में चूँकि कभी किसी ने बिजली के लिए कुछ खर्च नहीं किया, वह भी एक प्राकृतिक देन की तरह ही समझी गई थी। महीनों किसी ने उसका बिल नहीं चुकाया। सच तो यह है कि उगाही करने-वाला ही मासिक बिल और हिसाब न चुकानेवालों के नाम नोटिस तामिल करवाने नहीं आया था। कागज के जो टुकड़े वह बाँट जाता, उनका उपयोग हम पाइप-चिलम साफ करने के लिए करते थे। पिछली बार जब वह आया तो किसी तरह सही-सलामत बचकर निकल गया। यह उसका सौभाग्य ही था कि बस्ती के बाहर उसे गोली न लगी।

वह वीरता की अपेक्षा विवेक को ही ज्यादा ठीक समझता था। फाण्टामारा में वह उस समय आता जब कि आदमी काम पर चले जाते और केवल स्त्रियाँ और बच्चे ही घर रह जाते थे। वह बेहद विनम्र था। एक मूर्खतापूर्ण और मनानेवाली मुस्कराहट के साथ वह अपने कागज के टुकड़े बाँट जाता।

'यह ले लो', वह कहता—'इससे तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। घर-गृहस्थी में कागज का टुकड़ा हमेशा काम ही आता है।'

लेकिन खाली विनम्रता काफ़ी नहीं थी। एक दिन नीचे, हमारे स्थानीय शहर में—फाण्टामारा में आना तो उसने बहुत पहले से ही छोड़ दिया था—एक गाड़ीवान ने उसे बिलकुल साफ़-साफ़ कह दिया कि यदि एक गोली उस पर छोड़ी गई तो वह इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी—यह उसका नाम था—पर व्यक्तिगत न होकर आमतौर से करों पर होगी। लेकिन यदि गोली निशाने पर ठीक लगी तो खात्मा होनेवाली चीज कर न होकर वह इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी ही होगा। इसलिए उसने आना ही बन्द कर दिया था और किसी को उसका अभाव न खटका। फाण्टामारावालों के खिलाफ क़ानूनी कार्रवाई करना उसने बेकार समझा।

उसने कहा—यदि जुएँ पकड़नी संभव हों तो क़ानूनी कार्रवाई निश्चय कारगर हो सकती है। परन्तु ऐसा करने का कोई क़ानूनी साधन न होने से बिजली काट देना ही एकमात्र उपाय है।

बिजली पहली जनवरी को काटी जानेवाली थी। तब बढ़ाकर पहली मार्च कर दी गई, फिर पहली मई और तब पहली जून तक बढ़ाई गई। अन्त में पहली जून को बिजली काट दी गई।

स्त्रियों और बच्चों के ध्यान में, जो कि घर पर रहते हैं, यह बात बहुत देर में आई। लेकिन काम पर से घर लौटते समय हम आदमियों का ध्यान इस ओर अवश्य गया। हममें से कुछ कारखाने गये थे और बड़ी सड़क से घर लौट रहे थे; कुछ कब्रस्तान गये थे और पहाड़ की ओर से घर आ रहे थे; कुछ बालू खोदने गये थे और नाले की ओर

से आ रहे थे; और दूसरे, जो दिन मजूरी के लिए गये थे, सब ओर से घर लौट रहे थे। अँधेरा बढ़ता जा रहा था। पड़ोस के गाँवों की बिजलियाँ हमने जलती देखीं। लेकिन फाण्टामारा वृक्षों, झाड़ियों और घूरों में एकरूप हो अन्धकार में खो रहा था। हम एकदम समझ गये कि माजरा क्या है। अचम्भा होते हुए भी यह अचम्भा नहीं था।

बच्चों के लिए यह अच्छी खासी मजाक थी। हमारे बच्चे मजा लूटने के अवसर बहुत कम पाते हैं, इसलिए जब कभी मौका मिलता है वे उसे नहीं छोड़ते; जैसे—मोटर साइकल का गुजरना, गधों की प्रणय-चेष्टा या किसी चिमनी का जल उठना।

जब हम लौटे तो बेचारे जनरल बाल्डीसेरा को निराश पाया। गर्मियों में देर तक वह अपने घर के सामने सड़क की बिजली के उजाले में जूते दुरुस्त किया करता था। बच्चों के एक झुण्ड ने उसकी टेबल घेर ली, उसकी कीलें, और रांपी और सुतार; उसका मोम और सन और चमड़े के टुकड़े बिखेर दिये और गन्दे पानी की बाल्टी उसके पावों पर उलट दी। वह पास-पड़ोस के सभी सन्तों—देवी-देवताओं के नाम ले-लेकर जोर-शोर से शाप दे रहा था। और जानना चाहता था कि इस उम्र में उसने ऐसा क्या किया है कि आधा अन्धा बेचारा वह सड़क की रोशनी से भी वंचित कर दिया जाय; और बादशाह हम्बर्ट इस उपद्रव के बारे में क्या सोचेंगे!

यह अनुमान लगाना कि बादशाह हम्बर्ट इसके बारे में क्या सोचेंगे, कठिन था।

हाँ, बहुत-सी स्त्रियाँ भी थीं जो जोर-जोर से शिकायत कर रही थीं। नाम लेने से कोई फायदा नहीं। वे या तो अपने घरों के सामने जमीन पर बैठी थीं, या बच्चों को दूध पिला रही थीं या खाना पकाने में लगी थीं, और उनमें से कुछ इस तरह बिलख रही थीं मानो हाल ही में कोई मर गया हो। वे बिजली कटने पर रो रही थीं, मानो अन्धकार ने उनकी विपत्ति अधिक दयनीय बना दी हो।

मैं और माइकेल जोम्पा मेरीटा सार्सानेरा के शराबखाने के बाहर टेबल के पास आकर रुके ही थे कि ग्यासोबी लोसुर्डो अपनी गधी के साथ जिसे वह थान पर जनने ले गया था, आया। और थोड़ी ही देर बाद पॉन्ज़ियो पिलाटो अपनी पीठ पर गन्धक की पिचकारी लटकाये आया, और तब एंटॉनियोरनाक्चयो और बाल्डोविनो स्यारपा, जो क़लम कर रहे थे, और ग्यासिंटो बारलेट्टा, वेनेर्डी सेण्टो, सिरोजी रोण्डा, पेपासिस्टो और दूसरे वे जो बालू खोदने गये थे, आ पहुँचे। आते ही हम सब अपनी पुरानी बातें दुहराकर, जिन्हें पहले सैकड़ों बार कह चुके थे, क्योंकि ये बातें नहीं बदलतीं—बिजली के बारे में और नये करों, पुराने और ज़िला करों, सरकारी करों—सभी तरह के करों के बारे में बातचीत करने लगे। एकाएक हमारा ध्यान एक अजनबी की ओर गया, जो बाइसिकिल लिये हमारे बीच खड़ा था। उसके बारे में यह अन्दाज़ लगाना कठिन था कि ऐसे समय वह अजनबी कौन हो सकता है।

वह बिजली कम्पनी का आदमी नहीं था, और न ज़िला-अफ़सर ही था; न वह पुलिस थाने ही का आदमी था। अच्छी तरह हजामत बने हुए उत्कृष्ट चेहरे और छोटे से मुँहवाला वास्तव में वह एक बहुत ही चपल युवक था। उसका हाथ, जिससे वह अपनी बाइसिकिल का हत्था पकड़े था, छोटा और छिपकली के निचले हिस्से जैसा चिपकनेवाला था। वह सफ़ेद स्पैट्स* पहने था।

हमने बातचीत बन्द कर दी। अवश्य ही वह नाटा आदमी किसी नये कर की घोषणा करने आया था। इसमें किसी तरह का कोई सन्देह हो ही नहीं सकता। न इसमें कोई सन्देह था कि वह अपना समय पूरी तरह से बर्बाद करेगा और यह कि उसके काग़ज़ के टुकड़े भी इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी के काग़ज़ों का ही अनुसरण करेंगे। अनिश्चय केवल इस बात पर था कि दुनिया में ऐसा क्या बाक़ी

*स्पैट्स—पाँवों को गर्म रखने के लिए जूतों पर पहिना जानेवाला एक मोटा कपड़ा।

बचा है जिस पर नया कर लगाया जा सके ? हमने बहुत सिर खपाया, पर किसी के ख्याल में कुछ न आया।

इसी बीच आगन्तुक ने दो-तीन बार एक मूर्खता-पूर्ण और बकरी की-सी आवाज़ में पूछा कि कोई उसे वीर सॉर्सोनेरा की विधवा के घर का रास्ता बतला सकता है ?

वीर सॉर्सोनेरा की विधवा वहीं थी। वह शराबखाने का दरवाजा अपने शरीर द्वारा, जो गर्भ-धारण से बेढंगा हो रहा था, रोके खड़ी थी। उसके पति की मृत्यु के बाद से यह उसका तीसरा या चौथा गर्भ था। उसका पति उसके लिए चाँदी का तमग़ा और एक पेन्शन छोड़ गया था; पर ये तीन-चार गर्भ उसने नहीं छोड़े थे। एक वीर पति की विधवा होने के कारण सॉर्सोनेरा को अकसर महत्त्व-पूर्ण व्यक्तियों से व्यवहार करने के मौके आते रहते थे। एक बार, स्थानीय नगर में एक पवित्र राष्ट्रीय उत्सव के समय, सॉर्सोनेरा को मंच पर बिशप (धर्माध्यक्ष) के पास जगह दी गई थी। उसकी सन्तानों की शकल सदा मनहूस और डरावनी हुआ करती थी। धर्माध्यक्ष अन्धा नहीं था।

जब उसने उससे पूछा कि क्या उसने फिर से शादी कर ली है तो उसने इन्कार किया और बोली की नहीं, शादी नहीं की। धर्माध्यक्ष ने साश्चर्य उसके गर्भ की ओर, जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता था, संकेत किया। मेरीटा ने असावधानी से उत्तर दिया—यह मेरे मृत पति का उत्तर-दान है।

इससे यह तो स्पष्ट है कि सार्सोनेरा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने में कुशल थी। उसने अजनबी को मेज़ के पास बैठने की जगह दी। अपनी जेब से काग़ज़ों का एक बड़ा पुलिन्दा निकालकर उसने मेज़ पर फैला दिया।

काग़ज़ों को देखकर हमारा रहा-सहा सन्देह भी दूर हो गया। वे काग़ज़ कर-सम्बन्धी ही थे। पर यह सवाल अभी रह ही गया था कि कर कौन-सा था ?

अजनबी ने बोलना शुरू किया। सुनकर हम एकदम समझ गये कि वह शहर का रहनेवाला है। यहाँ-वहाँ से कुछ शब्द हमने समझ भी लिये, पर हमारी समझ में यह नहीं आया कि वह कौन-से कर के बारे में बोल रहा है।

देर हो रही थी। हम अपने-अपने औजारों-सहित—कुदाली, फावड़े, दन्ताली (जंट्रा) और बेलचे तथा गन्धक की पिचकारी और ग्यासोबी लोसुर्डो की गधी-सहित—वहाँ थे। हममें से कुछ चले गये। वेनेर्डी सेण्टो, ग्यासिण्टो बार्लेट्टा और पेपासिस्टो चले गये थे। बाल्डोविनो स्यारप और एण्टानियो रनॉक्च्या भी थोड़ी देर तक उसका भिनभिनाना सुनकर चले गये। ग्यासोबी लोसुर्डो ठहरना चाहता था, लेकिन गधी ने, जो थकी हुई थी, उसे घर जाने को बाध्य किया।

उस शहराती के सिवा वहाँ हममें से तीन और रह गये थे।

वह बोलता रहा, लेकिन एक शब्द भी किसी की समझ में नहीं आया। मेरा मतलब है कि यह किसी के पल्ले न पड़ा कि नया कर किस पर लगा है या ऐसी क्या चीज़ है जिस पर कर लगाया जा सकता है।

अन्त में वह आदमी चुप हो गया। वह मेरी ओर—क्योंकि मैं ही उसके सबसे अधिक समीप था—मुड़ा और एक पेन्सिल तथा कोरा काग़ज़ बढ़ाकर बोला—

'कृपया, दस्तख़त कीजिए।'

वह हमारा दस्तख़त क्यों करवाना चाहता था? हम उसकी बात के कुल जमा दस शब्द भी नहीं समझे थे, और अगर समझते होते तब भी ऐसा था ही क्या जिसके लिए हम दस्तख़त करते?

उसने मेरे पासवाले आदमी की ओर काग़ज़-पेन्सिल बढ़ाई और फिर एक बार कहा—

'कृपया, दस्तख़त कीजिए।'

मेरे पासवाले ने भी कोई जवाब नहीं दिया। शहरवाला तीसरे आदमी की ओर मुखातिब हुआ और फिर एक बार काग़ज़-पेन्सिल बढ़ाकर बोला—

'पहले तुम दस्तख़त करो। यदि तुम दस्तख़त कर दोगे तो दूसरे भी कर देंगे।'

वह मानो पत्थर की दीवाल से बोल रहा था। किसी ने हूँ-चूँ तक न की। हमें यह ज़रा भी नहीं मालूम था कि यह सब किस बारे में है, इसलिए हमें क्या पड़ी थी, जो अपने दस्तख़त करते?

वह आदमी ज़रूर ही गुस्सा हो गया था। उसकी आवाज़ से हमें लगा कि वह हमारा अपमान कर रहा है। लेकिन उसने करों के बारे में कुछ नहीं कहा। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह नये कर के बारे में बोलना शुरू करे, लेकिन वह दूसरी चीज़ों के बारे में ही बोलता रहा। एक बार उसने अपनी बाइसिकल में बँधा चाबुक खोला और उसे मेरे चेहरे के सामने हिलाते हुए चिल्लाया—

'बोलते क्यों नहीं हो? क्या तुम बहरे हो? जब तुमसे कुछ कहा जाता है तो जवाब क्यों नहीं देते? दस्तख़त क्यों नहीं करते?'

मैंने उसे समझाया कि हम मूर्ख नहीं हैं। हमारी समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा है और यह कि बावजूद उसके बोलने के हम निश्चयपूर्वक जानते हैं कि वह एक नये कर के बारे में आया है।

मैंने उससे कहा—'हम इसके बारे में पहले से ही जानते हैं। हम इसके बारे में काफी अच्छी तरह से जानते हैं। पर हम यह कर नहीं दे सकते। पहले से ही मकान पर कर है, अंगूरों के बगीचों पर कर है, गदहे पर कर है, कुत्ते पर कर है, और चरागाह पर कर है, सूअर पर और गाड़ी पर और शराब पर कर है, और इतना बहुत है। अब और किस नई चीज पर तुम कर लगाना चाहते हो?'

उसने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो मैं फारसी भूँक रहा हूँ। वह हतप्रभ हो गया और बोला—

'हम बोल रहे हैं, पर एक दूसरे को समझ नहीं रहे हैं। हम एक ही भाषा बोलते हैं और फिर भी वह भाषा एक नहीं होती।'

यह बिलकुल सच था। यह सम्भव नहीं कि शहराती और किसान एक दूसरे को समझ सकें। वह शहरवाले की तरह बोलता है, शहरवाले की तरह बोले बिना वह रह ही नहीं सकता, वह और किसी तरह से बोल ही नहीं सकता। और हम किसान थे। हमारे ढंग से, यानी किसानों की रीति से हम प्रत्येक बात समझते थे। अपने जीवन में मैंने हाज़ारों बार देखा है कि शहरवाले और किसान बिलकुल भिन्न-भिन्न हैं। अपनी जवानी के दिनों मैं अर्जेण्टाइन में पम्पास* पर था। वहाँ मैं स्पेन-वासियों से लेकर इण्डियन्स तक सभी जातियों के किसानों से बोलता था, और हम एक दूसरे को इतनी आसानी से समझ जाते थे मानो फाण्टामारा ही में हों। शहर से आनेवाले एक इटालियन से, जिसका सम्बन्ध कॉन्सुलेट कौन्सिल से था, मैं हर रविवार को बात करता था। बिना एक दूसरे को समझे और कई बार तो बिलकुल उलटा मतलब समझे ही हम बातें करते थे।

इसलिए जब उस अजनबी ने फिर से अपनी दास्तान शुरू की तो मुझे कुछ भी आश्चर्य न हुआ। उसने हमें समझाया कि वह करों के बारे में नहीं बोल रहा है, करों से उसका कोई भी सम्बन्ध नहीं है, और वह फाण्टामारा एक दूसरे ही मतलब से आया है, और पैसा देने की तो कोई बात ही नहीं है।

देर हो गई थी और इस समय तक अँधेरा बढ़ गया था, इसलिए उसने दियासलाइयाँ जलाना शुरू कीं। एक-एक करके उसने हमें काग़ज़ दिखलाये। वे सचमुच कोरे थे; और कर-वसूली सम्बन्धी नहीं थे। वे सारे-के-सारे बिलकुल ही कोरे थे। केवल एक काग़ज़ के

* पम्पास—दक्षिण अमेरिका के वृक्षहीन समतल मैदान।

सिरे पर कुछ लिखा था। हमें वह बतलाने के लिए उस आदमी ने दो काँड़ियाँ जलाईं।

"उपर्युक्त बात के उत्साह-पूर्ण समर्थन में नीचे दस्तखत करनेवालों ने माननीय कप्तान पेलिनो के हक़ में अपनी राजी-खुशी से दस्तख़त किये हैं।"

उस आदमी के कहने से हमें मालूम हुआ कि वही स्वयं माननीय पेलिनो है और दस्तख़त हो जाने पर सब काग़ज़ सरकार को भेज दिये जायँगे।

माननीय पेलिनो को ये काग़ज़ अपने उच्चाधिकारियों से मिले थे। ये केवल फाण्टामारा ही के लिए खास तौर से नहीं थे। सभी गाँवों के लिए थे। ऐसे ही और काग़ज़ लेकर उसके अन्य सहयोगी दूसरे गाँवों में भी गये थे। दरअस्ल उनका सम्बन्ध सरकार को भेजे जानेवाले एक प्रार्थना-पत्र से था, जिसके लिए कई दस्तख़तों की आवश्यकता थी। यह ठीक है कि प्रार्थनापत्र उसके पास नहीं था और न उसे यही मालूम था कि उसमें क्या लिखा है। प्रार्थनापत्र उसके उच्चाधिकारियों द्वारा ही लिखा जानेवाला था। उसे खाली दस्तख़त इकट्ठे करने थे, और किसानों को खाली दस्तख़त करने थे।

उसने हमें बतलाया कि देहातियों को तुच्छ समझने और उनकी बात न मानने का ज़माना बिलकुल लद गया है। आजकल तो किसानों की राय की क़द्र करनेवाली और उन्हें प्रतिष्ठित समझनेवाली नई सरकार का राज्य है। इसलिए मैं आपसे अपने दस्तखत मुझे देने की प्रार्थना करता हूँ। आपकी राय जानने के लिए एक अफ़सर भेजकर सरकार द्वारा किये गये सम्मान की आप उचित ही क़द्र करेंगे।

हमें थोड़ा सन्देह अभी था ही कि इसी बीच जनरल बाल्डीसेर वहाँ आ गया और उसने अफ़सर के अन्तिम शब्द भी सुने। उसने बिना अधिक बखेड़े के (इन मोचियों को तो तुम जानते ही हो) कहा—बहुत अच्छा। यदि श्रीमान् मुझे आश्वासन देते हैं कि पैसे-कौड़ी देने का कोई मामला नहीं है, तो मैं पहले दस्तख़त करता हूँ।

पहले उसने दस्तखत किये। तब मैंने दस्तखत किये, और तब मेरे पास खड़े पॉन्ज़ियो पिलाटो ने, और तब माइकेल ज़ोम्पा और मेरीटा ने। लेकिन दूसरों के बारे में कैसे क्या करते? रात में उस वक्त दस्तखत कैसे लिये जा सकते थे? घर-घर जाकर इतनी रात बीते दस्तखत करवाना असम्भव ही था। माननीय पेलिनो को एक बात सूझी। हम फाण्टामारा के सभी किसानों का नाम उसे लिखवा दें। और हमने ऐसा ही किया। सिर्फ बेरार्डो बायला का नाम लिखवाते समय ही एक गरमागरम बहस हुई। हमने माननीय पेलिनो को समझाने की भी कोशिश की कि बेरार्डो कभी दस्तखत न करेगा, परन्तु उसका भी नाम लिख लिया गया।

दूसरा कागज़ भी नामों से भर चुका था और अजनबी तीस या चालीस दियासलाइयाँ जला चुका था कि उसने मेज़ पर कोई चीज़ देखी। उसे देखकर वह चकित और भयभीत हो गया। लेकिन उसमें भयभीत या थक्क होने जैसा कुछ न था। एक सलाई की काड़ी जलाकर उसने सावधानी से मेज़ का निरीक्षण किया। वह इतना झुका कि उसकी नाक ही लगभग उस चीज़ से छू गई। तब मेज़ की ओर अँगुली से संकेत करते हुए अपनी बकरी की-सी आवाज़ में वह जोर से चीखा—

'यह क्या है? यह गन्दी चीज़ किसकी है? किसने उसे मेज़ पर रखा है?'

साफ़ तौर पर वह आफ़त मोल ले रहा था। किसीने जवाब नहीं दिया। जनरल वॉल्डीसेरा ने पहले ही समझदारी से काम लिया और घर चला गया। अजनबी ने तीन-चार बार अपनी बात दुहराई और भरपूर उजाले के लिए एक साथ तीन सलाइयाँ जलाईं। तब हमने मेज़ पर हिलती हुई कोई चीज़ देखी।

पहले पॉन्ज़ियो पिलाटो उठा, मेज़ पर झुका, सावधानी से देखा और बोला—

'यह मेरी नहीं है।'

मैंने भी ऐसा ही किया। मैंने उसे देखा, छुआ और अपने पाइप की नली से इधर-उधर घुमाया। मेरी जवानी की क़सम, वह सचमुच मेरी नहीं थी। माइकेल ज़ोम्पा ने ऐसा बहाना किया मानो वह कुछ समझा ही न हो और 'आसमान में ताकता हुआ तम्बाकू पीता रहा। मेरीटा भी मेज़ पर झुकी; और कीड़े को, जो अब इस समय तक नाम लिखे हुए काग़ज़ पर बीचोबीच पहुँच गया था, ग़ौर से देखने के बाद अपनी हथेली पर लेकर सड़क में फेंक दिया।

'कितनी अद्‌भुत!' वह बोली। 'बिलकुल ही अद्‌भुत! लम्बी, मटमैली और पीठ पर क्रासवाली एक नई तरह की जूँ...'

सुनते ही माइकेल ज़ोम्पा उछल पड़ा और चिल्लाया—

'क्या! क्या सचमुच उसकी पीठ पर क्रास था? और तुमने उसे फेंक दिया? क्या तुम्हारा यह मतलब है कि तुमने सचमुच ही पोप की खास अपनी जूँ फेंक दी? शान्ति की जूँ? तुम्हारा बहिष्कार किया जाना चाहिए, पवित्र वस्तुओं का निरादर करनेवाली ऐ निकम्मी औरत, तू ..'

हममें से कोई इस चीख़-पुकार का कारण न समझा, इसलिए माइकेल ने खुलासा किया—

'मुझे पिछली शरद् में एक सपना हुआ था। वह सपना मैंने डॉन अबाकच्यो को सुनाया और उन्होंने मुझे मना कर दिया कि वह मैं और किसीसे न कहूँ। लेकिन, यदि मेरीटा का कहना सच है, तो वह अब प्रकट हो गई है। और चूँकि वह प्रकट हो गई है, इसलिए मैं तुम्हें सुना सकता हूँ। सपना यह था—

"पोप और सरकार में सुलह हो जाने के बाद, तुम्हें याद होगा, डॉन अबाकच्यो ने मन्दिर में एक प्रवचन में कहा था कि किसानों के लिए अच्छा समय आनेवाला है। पोप को ईसा से यह वर मिला था कि वह किसानों को जो कुछ भी वे चाहें, दे सकते हैं। मैंने पोप को सपने में ईसा से बात करते देखा था।

"ईसा ने कहा—शान्ति होने के उपलक्ष में फ्युसिनो की ज़मीन उस पर काम करनेवाले किसानों में बाँटनी ठीक होगी।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन्, राजकुमार टोर्लोनिया इसके लिए राजी न होंगे...आप यह न भूलें कि राजकुमार टोर्लोनिया सेण्टपीटर्स की निधि में काफी दान देते हैं।

"ईसा ने कहा—तो इस शान्ति के परिणाम-स्वरूप किसानों को सब तरह के करों से मुक्त कर दिया जाय।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन्, इसके लिए सरकार राजी न होगी। आप न भूलें कि किसानों से दिये जानेवाले करों की बदौलत ही सरकार से सेण्टपीटर्स की निधि को दो अरब लीरा मिलता है।

"ईसा ने कहा—तो फिर इस शान्ति के परिणाम-स्वरूप सभी किसानों और छोटे-बड़े खेतिहरों को एक अच्छी फसल प्रदान की जाय।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन्, यदि फसल ख़ूब हुई तो नाज के भाव गिर जायँगे। आप यह न भूलें कि हमारे सभी धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारी बड़े जागीरदार हैं।

"ईसा दूसरों को किसी तरह की हानि पहुँचाये बिना किसानों के लिए कुछ न कर सकने के कारण बहुत दुःखित हुए। और इसलिए किसानों को अत्यन्त प्रेम करनेवाले पोप ने कहा—

"स्वामिन्, हम स्वयं चलकर देखें। किसानों के लिए शायद ऐसी कोई संभावना निकल आये जिसमें प्रिन्स टोर्लोनिया, सरकार, धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारियों को अप्रसन्न न होना पड़े।

"इसलिए सुलह की रात को ईसा और पोप सारे फ्युसिनो और मार्सिका के सभी गाँवों पर आकाश में उड़े। आगे-आगे अपने कन्धों पर एक बड़ा थैला लिये ईसा थे और उनके पीछे पोप जिन्हें थैले में से, किसानों के लिए वह जो कुछ भी उपयोगी समझें, लेने की अनुमति थी।

"प्रत्येक गाँव में उन पवित्र दर्शकों ने एकसाँ बातें देखीं। सर्वत्र किसान असन्तुष्ट होकर बड़बड़ा रहे थे, गालियाँ बक रहे थे, लड़ रहे थे और निरन्तर दरिद्र हो रहे थे और उनकी समझ में नहीं आ रहा

था कि अन्न-कपड़े का प्रबन्ध कैसे किया जाय। यह सब देखकर पोप का हृदय व्यथित हो उठा। इसलिए उन्होंने ले में कैसे जुँओं का एक बादल-का-बादल यह कहते हुए मार्सिका पर बिखेर दिया—

"मेरे प्यारे बच्चो, यह लो और खुजलाओ। ये फुर्सत के समय तुम्हारे विचारों को पाप की ओर जाने से रोकेंगी!' "

माइकेल जोम्पा का यह स्वप्न था। प्रत्येक अपने ढंग से स्वप्नों का अर्थ लगाते हैं, और कई ऐसे भी हैं जो स्वप्नों को बिलकुल महत्त्व नहीं देते। कई उनपर से भविष्य-वाणियाँ करते हैं। मैं उन्हें नींद लाने के बारे में उपयोगी समझता हूँ। लेकिन धार्मिक वृत्तिवाली मेरीटा सॉर्सानेरा का विचार और तरह का था। कुछ भी हो, वह बहुत ही करुण विलाप करने लगी और सिसकियों में बोली—

'सच है, बिलकुल सच है। हमारे लिए यदि प्रार्थना करने को पोप न हों, तो हमें पापों से कौन बचायेगा? विनाश से हमारी रक्षा कौन करेगा?'

लेकिन माननीय पेलिनो ने इसका और ही अर्थ लगाया। जोम्पा और सॉर्सानेरा की ओर चाबुक हिलाते हुए वह चिल्लाया—

'तुम मुझे लेकर हँसी कर रहे हो। तुम अधिकारियों की खिल्ली उड़ा रहे हो। तुम सरकार और पवित्र चर्च की—गिर्जा की—खिल्ली उड़ा रहे हो।'

और इसी दौर में वह बोलता चला गया। हमारी समझ में कुछ न आया कि उसका मतलब क्या है।

वह बोला—सरकार तुम्हारा बन्दोबस्त कर देगी। वह तुम्हें सजा देगी। अधिकारी तुम्हें इसका मजा चखायेंगे।

हमने सोचा कि वह थोड़ी देर बोलता रहेगा और अन्त में चुप हो जायगा। लेकिन वह बोलता रहा। वह चुप होता ही न था।

उसने माकेइल को डाँटा—क्या तुम नहीं जानते कि यदि मैं तुम्हारी रपट—रिपोर्ट—कर दूँ तो तुम कम-से-कम दस वर्ष के लिए धर दिये

जाओ ? क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि जो कुछ अभी तुमने कहा है, उससे कम विद्रोहात्मक और कम हानिप्रद बातें कहने के लिए कई दस-दस साल के लिए चक्की पीस रहे हैं ? भले आदमी, रहते किस दुनिया में हो ! तुम यह भी जानते हो या नहीं कि इन पिछले सालों में कितनी घटनाएँ हो गईं ? तुम्हें नहीं मालूम, आजकल स्वामी कौन है ? नहीं जानते कि राज्य किसका है ?

जोम्पा ने उसे चुप करने के लिए शान्ति से जवाब दिया—

'देखो, शहर में बहुत-सी बातें होती हैं। कम-से-कम शहर में एक घटना रोज़ होती है। रोज़ अखबार आते हैं और उसमें कुछ नहीं तो एक घटना तो ज़रूर ही छपी रहती है। इस हिसाब से साल के अन्त में कुल कितनी घटनाएँ होंगी ! कई सौ। बेचारा ग़रीब किसान सब घटनाओं को कहाँ से जान सकता है ? लेकिन घटनाएँ एक बात हैं और राज्य करनेवाले दूसरी। दोनों में अन्तर है। राज्य अधिकारियों के हाथ में है। कभी-कभी वे अपना नाम बदल लेते हैं, पर रहते वे हमेशा अधिकारी ही हैं।

'और पुरोहिताधिपत्य (धर्माधिकार) ? पुरोहिताधिपत्य के बारे में क्या ?' उस शहराती ने पूछा। जो शायद स्वयं भी एक पुरोहिताधिपति था। अब देखो कि हम इस शब्द का अर्थ अभी तक नहीं जानते। उस आदमी ने इसे बार-बार दुहराया और भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाया। अन्त में माइकेल ने जवाब दिया—

''सबके ऊपर स्वर्ग का स्वामी ईश्वर है।

''ईश्वर के बाद धरती का मालिक राजकुमार टोर्लोनिया है।

''उसके बाद राजकुमार टोर्लोनिया का सशस्त्र रक्षा-दल है।

''उसके बाद राजकुमार टोर्लोनिया के शसस्त्र रक्षा-दल के कुत्ते हैं।

''उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। तब किसान हैं। और बस।''

'और अधिकारी, वे कहाँ से आये ?' शहराती ने बेहद गुस्सा होकर पूछा। पॉञ्जियो पिलाटो इसे समझाने के लिए बीच में ही

बोला—वेतन के अनुसार अधिकारी तीसरी और चौथी श्रेणी में विभक्त हैं। चौथी श्रेणी (याने, कुत्ते) ज्यादा तादाद में हैं!

माननीय पेलिनो उठ खड़ा हुआ। वह गुस्से से काँप रहा था। वह बोला—'तुम्हें इसका उचित जवाब मिलेगा।' और चलता बना।

—दो—

दूसरे दिन सबेरे एक असाधारण घटना हो जाने से फाण्टामारा भर में कोलाहल मच गया।

फाण्टामारा के प्रवेश-पथ पर पत्थरों के ढेर में से जो छोटा-सा नाला निकलता है, उसका पानी एक गन्दे तालाब में इकट्ठा होता है। कुछ ही क़दम आगे उसका पानी पथरीली ज़मीन के अन्दर बहकर ग़ायब हो जाता है और फिर आगे पहाड़ी के नीचे एक बड़े नाले में निकल आता है। वह नाला कई बल खाता है और अन्त में फ्युसिनो की ओर बहने लगता है। फाण्टामारा के किसान सदा इसी के पानी से पहाड़ी के नीचे अपने कुछ खेतों को, जो उनकी एकमात्र सम्पत्ति हैं, सींचते हैं। हर ग्रीष्म में पानी के बँटवारे को लेकर भयंकर झगड़े होते हैं। अनावृष्टि के साल तो ये झगड़े खून-खच्चर तक पहुँच जाते हैं।

दूसरी जून को सबसे जल्दी पहाड़ी के नीचे काम पर जानेवाले फाण्टामारा के किसानों को शहर से आनेवाली सड़क पर कुदाली और फावड़े लिये सड़क दुरुस्त करनेवालों का एक झुण्ड मिला। वे (या उन्होंने हमसे ऐसा ही कहा) नाले को खेतों और बग़ीचोंवाले उस रास्ते से जिन्हें पानी और धरती के आरम्भ-काल से ही वह सींचता आ रहा था, बदलकर अंगूर के कुछ बग़ीचों के किनारों से होता हुआ ऐसी धरती की ओर मोड़ने आये थे जिसका फाण्टामारा से कोई सम्बन्ध न था। उस ज़मीन का मालिक स्थानीय शहर का डॉन कार्लो माग्ना नामक एक मालदार ज़मींदार था। वह डॉन कार्लो माग्ना इसलिए कहा जाता था कि दिन में कभी भी कोई उससे मिलने जाता और पूछता कि 'क्या डॉन कार्लो घर पर हैं?' तो दासी यही उत्तर देती—

'डॉन कार्लो ? माग्ना, वह तो भोजन कर रहे हैं ; लेकिन यदि आप चाहें तो श्रीमतीजी से मिल सकते हैं।'

क्षणभर तो हमने यही सोचा कि सड़क सुधारनेवाले हमसे मज़ाक कर रहे हैं, क्योंकि हमारी मज़ाक उड़ाना स्थानीय शहरवालों का एक अतिप्रिय मनबहलाव था। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने हमारी जितनी मज़ाकें की हैं, उनका वर्णन करने के लिए एक पूरा दिन भी काफी न होगा। गदहे और पुरोहितवाली कहानी से उनके द्वारा की जानेवाली मज़ाकों के बारे में एक अच्छा अन्दाज़ लगाया जा सकता है।

गिर्जाघर की आमदनी इतनी कम थी कि फाण्टामारा में कोई पादरी नहीं रखा जा सकता था। गिर्जाघर खाली उत्सवों और व्रत-दिवसों पर ही, जब कि डॉन अबाक्च्यो स्थानीय शहर से इञ्जील बाँचने या मास-प्रार्थना कहने आते, खोला जाता था।

दो साल पहले फाण्टामारा-वालों ने धर्माध्यक्ष के पास गाँव में एक पादरी भेजने के लिए खास तौर से एक प्रार्थना-पत्र भेजा। कुछ दिनों बाद हमें सूचना मिली कि हमारी अर्ज़ी मंजूर हो गई है और हमें गाँव के सर्वप्रथम पादरी के स्वागत की तैयारियाँ करनी चाहिए। उसके उचित स्वागत का हमने पूरा प्रबन्ध किया। गिर्जाघर की अच्छी तरह से सफ़ाई की गई। फाण्टामारा में आनेवाली सड़क सुधारी गई और कई जगह चौड़ी भी कर दी गई। गाँव में घुसने की जगह एक बड़ी शानदार मेहराब बनाई गई। गाँव में सभी मकानों के दरवाज़े हरी पत्तियों की बन्दनवार से सजाये गये। ऐन दिन सारा गाँव नये पादरी का स्वागत करने गाँव से बाहर निकला। पन्द्रह मिनट तक चलने के बाद हमने आदमियों का एक बड़ा समूह हमारी ओर आते देखा। भजन गाते और जप करते हम स्वागत के लिए आगे बढ़े। सबसे आगे जनरल बाल्डीसेरा था, जो एक छोटा-सा भाषण देनेवाला था ; उसके पीछे गाँव के बड़े-बूढ़े और उनके पीछे स्त्रियाँ और बच्चे थे।

शहरवालों के समीप पहुँचकर अपने पादरी का स्वागत करने हम

सड़क की दोनों ओर दो क़तारों में खड़े हो गये। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही आवाजें लगाता हुआ आगे बढ़ा—

'ईसा की कृपा हो! कुमारी मेरी की कृपा हो! गिर्जा की कृपा हो!'

उसी समय शहरवालों का झुण्ड भी बीच से दो भागों में बँट गया और पवित्र आभूषणों से सजे एक बूढ़े गदहे के रूप में नया पुरोहित लातें और पत्थर खाता हुआ आगे बढ़ा।

शहरवाले यद्यपि हमेशा कुछ-न-कुछ नई गढ़ते ही रहते हैं, तो भी इस तरह की मजाकें आसानी से नहीं भुलाई जा सकतीं। इसलिए हमारा यह सोचना स्वाभाविक ही था कि नाले का बहाव बदलना भी एक क्रियात्मक मजाक ही है। सूर्य, हवा और पानी जैसी दैवी वस्तुओं के मार्ग में, जिसे परमात्मा ने बनाया है, यदि आदमी दखल देना और बदलना शुरू करे तो प्रलय ही हो जायगा। यह एक ऐसा आश्चर्य है जैसा कि गदहे उड़ना सीख रहे हों, या राजकुमार टोर्लोनिया अब राजकुमार न रहे हों, या कि किसान अब भूखों न मरते हों; दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय नियम ही अब जैसे ईश्वरीय न रहे हों।

लेकिन सड़क सुधारनेवाले कोई स्पष्टीकरण किये बिना ही कुदाली-फावड़े उठा नाले का नया रास्ता खोदने लग गये। ऐसा लगा कि मजाक कुछ गंभीर होती जा रही है। एक किसान खतरे की सूचना देने फाण्टामारा की ओर भागा।

"दौड़ो, जल्दी करो। पुलिस को खबर करो। मेयर को खबर करो!" वह चिल्लाया।

आदमी नहीं जा सकते थे। जून के महीने में खेतों में बहुत अधिक काम रहता है। इसलिए औरतों को जाना पड़ा। अब आगे जो कुछ हुआ, वह मेरी औरत सुनायेगी।

अच्छा, यह तो तुम जानते ही हो कि औरतें कैसी होती हैं। हुआ यह कि हमारे रवाना होने से पहले ही सूरज काफी ऊँचा चढ़ आया।

पहले तो चलने को कोई राजी ही नहीं होती थी। एक को मुर्गी के बच्चों की रखवाली करनी थी तो दूसरी को सूअर की। कोई इसलिए

नहीं जा सकती थी कि कपड़े धोने थे। किसी को अंगूर की लताएँ छिड़कने का घोल तैयार करना था, किसी को मँड़ाई के लिए थैले तैयार करने थे, किसी को बकरों के लिए घास काटनी थी। पहले तो कोई भी जाने के लिए खाली न थी। अकेली सार्सानेरा स्वेच्छा से तैयार हुई, क्योंकि अधिकारियों से बोलना जानती थी, या ऐसा उसका कहना था।

साथ जाने को उसे एक औरत और मिल गई। नाम लेने से कोई फायदा नहीं। उसके भी पेट था। उसके आदमी को अमेरिका गये दस वर्ष हो गये थे और यह विश्वास करना, कि वह उतनी दूर से भी बच्चे पैदा कर सकता है, कठिन था।

मैंने ज़ोम्पा की घरवाली से कहा—एक ऐसे मामले में जिसका हम सभी से सम्बन्ध हो, दो ऐसी औरतों को क्या हम फाण्टामारा का प्रतिनिधित्व करने दे सकती हैं, जो सच पूछा जाय तो, दो छिनालें हैं ?

हम ऐसा कभी नहीं होने दे सकती थीं। इसलिए दोनों लिज़ाबेत्ताँ लिसोना और मेर्या ग्रेज़्या के यहाँ उन्हें साथ चलने को राज़ी करने गईं। मेर्या ग्रेज़्या अपने साथ सियामारुगा को लेती आई और सियामारुगा कानारोज़ो की लड़की को और वह लड़की अपने साथ फिलोमेना क्वातेर्ना को बुलाती लाई।

हम रवाना होने ही वाली थीं कि पॉञ्ज़ियो पिलाटो की घरवाली, चूँकि हमने उसे साथ चलने को नहीं कहा था, गुल मचाने लगी—

'तुम इसे हमारी पीठ पीछे निपटाना चाहती हो, अरी तुम ? दूसरों को पीछे रखकर ख़ुद आगे रहनेवाली अरी तुम ! क्या हमारे खेत को पानी की ज़रूरत नहीं है ?'

इसलिए उसके कपड़े पहनने तक हमें रुकना पड़ा। लेकिन कपड़े पहनने की बजाय वह फिलोमेना कास्टाना, रेक्क्युटा, गिडिटा सारपोन और फॉर्नारा को बुला लाई और साथ चलने को राज़ी कर लिया। अन्त में बाल्डासेरा की दूकान के आगे हम कोई पन्द्रह

औरतें जाने को तैयार खड़ी थीं। हमें थोड़ी देर और रुकना पड़ा, क्योंकि सॉर्सानेरा अभी कपड़े ही पहन रही थी। गले में मूँगों की माला पहने, छाती पर चाँदी का तमगा लगाये, अपनी सबसे बढ़िया पोशाक में, एक नया एप्रन डाले वह बाहर निकली।

बॉल्डीसेरा ने मुस्कराते हुए कहा—एक बढ़िया नये पेट पर एक बढ़िया नया एप्रन। वह कम दिखने का बहाना करता था, परन्तु जब उसके मतलब की बात होती तो उसे साफ दिख जाती थी। मेरीटा खुद भी मुस्कराई।

जब हम रवाना हुईं तो सूरज बहुत ऊँचा उठ आया था। मारे गरमी के दम घुटा जा रहा था।

सड़क सुधारनेवालों ने हमें देखा तो डरकर अंगूरों के बगीचों की ओर भाग गये।

लिज़ाबेत्ताँ लिमोना ने यह देखकर वहीं से लौट जाने की सलाह दी, क्योंकि उसकी राय में हमारा मतलब हल हो गया था। लेकिन नये एप्रनवाली सॉर्सानेरा बोली—हमें चलना ही चाहिए; क्योंकि वे आदमी कुछ अपनी इच्छा से काम नहीं कर रहे थे; वे तो हुकम की तामील कर रहे थे। हम बहस करने लगीं कि अब आगे क्या किया जाय। परन्तु मेरीटा ने जरा से में मामला खतम कर दिया। वह बोली—

'यदि तुम डरती हो तो हम अकेली जायँगी।' यानी स्वयं वह और पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती वह दूसरी औरत; और वे दोनों स्थानीय शहर की ओर चल पड़ीं।

हमने एक दूसरे से कहा कि दो ऐसी औरतों को, जो सच पूछा जाय तो दो छिनालें हैं, हम कभी फाण्टामारा का प्रतिनिधित्व नहीं करने दे सकतीं। और हम सब सॉर्सानेरा के पीछे हो लीं।

जब हम शहर में पहुँची, दोपहर हो गया था। टाऊनहॉल चौक में हमारे पहुँचते ही एकदम आतंक छा गया। निश्चय ही हमारा दिखावा भी कुछ ऐसा ही भयप्रद था। दूकानदार अपनी दूकानों से बाहर निकल आये और अपनी खिड़कियाँ बन्द कर लीं। चौक में

खड़े कई फलवाले सिर पर अपनी टोकनियाँ उठाकर भाग गये। लोग बाग खिड़कियों और छज्जों में जमा हो गये। कुछ डरे हुए कारकून टाउनहाल के दरवाजे पर दिखाई दिये। सब लोग यही समझ रहे थे कि हम टाउनहाल पर चढ़ दौड़ेंगी। हर नतीजे के लिए तैयार हम निस्तब्धता-पूर्वक आगे बढ़ीं।

उसी समय एक नगर-रक्षक ने खिड़की से सिर निकालकर चिल्लाना शुरू किया—

'इन्हें भीतर मत आने दो। ये सब जगह जुएँ कर देंगी!'

सब लोग ठठाकर हँस पड़े।

वे सब जो थोड़ी देर पहले विमूढ़ हो भागने लगे थे, और जिन्होंने एक क्षण पहले ही अपनी दूकानें बंद कर दी थीं या टोकनियाँ सिर पर रख भाग गये थे, ठहाके लगाने लगे। सब हँस रहे थे। हम टाउन-हाल के दरवाजे पर इकट्ठी हो गईं। नगर-रक्षक, बहादुरी का सेरा बाँधे, हमारे और हमारी जुओं के बारे में अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाने लगा। चौक में सब कोई हँस रहे थे। छज्जे पर हमारी ओर मुँह किये खड़ी एक औरत के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये। एक घड़ीसाज जो अपनी दूकान की खिड़कियाँ बन्द कर रहा था, इतना हँसा कि उसकी आँखों में आँसू आ गये। टाउनहॉल के दरवाजे पर और भी कई कारकून और टाइपिस्ट आ खड़े हुए थे और वे भी सब जोर-जोर से हँसने लगे।

हमारी समझ में यह नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या किया जाय। रास्ते में सार्सानेरा ने कहा था कि वह सब देख लेगी, परन्तु जब इतने सारे हँसते हुए आदमियों से सामना पड़ गया तो उसकी भी अकल गुम हो गई। अकेला नगर-रक्षक ही होता तो उसे जवाब देना आसान था, क्योंकि कभी उस पर भी जुएँ रेंगी होंगी। लेकिन वे इतने सारे दूसरे आदमी भी तो थे।

एक क्लर्क ने पूछा—तुम क्या चाहती हो? और किससे मिलने आई हो?

'हम मान्यवर मेयर—नगरपति—से मिलना चाहती हैं।' मेरीटा ने जवाब दिया।

फाटक पर खड़े कारकूनों ने अचरज से एक दूसरे की ओर देखा। उनमें से कुछ ने फिर प्रश्न किया—

'तुम किसे चाहती हो?'

हममें से चार-पाँच एक साथ बोलीं—हम मेयर से मिलना चाहती हैं।

कारकून फिर से पागलों की तरह हँसने लगे। हमारा जवाब उन्होंने इतनी ऊँची आवाज में दुहराया कि जिसे सुन चौक में, खिड़कियों, बरामदों और पास के भोजन-गृहों में (इस समय तक दोपहर के खाने का वक्त हो गया था) उपस्थित सभी व्यक्ति ठहाके लगाने लगे।

चूँकि दोपहर हो गया था; इसलिए सब कारकून टाउनहाल में से बाहर निकल आये और उनमें से एक ने फाटक बन्द कर दिया।

जाते-जाते वह हमसे बोला—क्या तुम सचमुच मेयर से मिलना चाहती हो? तो यहाँ प्रतीक्षा करो। तुम्हें थोड़ी देर तक इन्तजार करना पड़ेगा।

हम बाद तक नहीं समझ सकीं कि उसके कहने का मतलब क्या था। इसी बीच हमारा ध्यान पानी पीने के एक नल की ओर गया जो चौक के एक कोने में था। हम सब उस ओर झपटीं। एक घमासान लड़ाई छिड़ गई। हम सब प्यासी थीं, पर एक ही साथ सब पानी नहीं पी सकती थीं। यह किसी ने मंजूर नहीं किया कि गर्भवती होने से मेरीटा को सबसे पहले पानी पीने का अधिकार है। काफी खींचा-तानी के बाद हमने पानी पीने का क्रम निश्चित किया। सबसे पहले गिडिटा सारपोन ने और उसके बाद ओठ पर घाववाली एक लड़की ने पानी पिया। हम उसे सबके बाद में पीने देना चाहती थीं, लेकिन उसने टोंटी पकड़ ली थी और छोड़ती ही न थी। उसके बाद मेरीटा की बारी आई, वह जैसे ही शुरू करनेवाली थी कि पानी बन्द हो गया।

ज़रा-सी रुकावट आ गई होगी, यह सोचकर हम रुकी रहीं। लेकिन पानी चालू नहीं हुआ। नल बन्द हो गया था। हम जा ही रही थीं कि पानी वापिस आने की आवाज़ सुनाई दी; हम फिर लौट आईं। खींचा-तानी और झगड़ा फिर शुरू हुआ। दो छोकड़ियाँ एक दूसरे के बाल खींचने लगीं।

हमने फिर से पानी पीने का क्रम निश्चित किया। पर पानी एक बार फिर रुक गया। हमने थोड़ी देर राह देखी पर वह चालू नहीं हुआ।

पानी का यह बर्ताव बिलकुल हैरान करनेवाला था। फाण्टामारा के बाहरवाले नाले में ऐसा कभी नहीं हुआ था। घड़ीसाज और नगर-रक्षक चौक के दूसरी ओर से हँसते हुए हमें देख रहे थे।

तुम्हें यह सब सुनाकर व्यर्थ समय गँवाना मूर्खता होगी जब कि बाद में इससे भी कहीं अधिक बुरी घटनाएँ हुई थीं। लेकिन पानी का वह अजीब व्यवहार, हमारी प्यास से पहले ही ग़ायब हो जाना, मैं कभी नहीं भूल सकती। हर बार यही हुआ। जब पानी आता नहीं दीखता तो हम हट जातीं; पर हमारे हटते ही पानी आ जाता था। ऐसा चार-पाँच बार हुआ। जैसे ही हम पास पहुँचीं कि पानी रुक जाता और तत्काल ही नल बन्द हो जाता। हमारे वहाँ से हटते देर न होती कि तत्परता से पानी आ जाता। प्यास के मारे हमारे गले सूख रहे थे पर पानी पीना असम्भव था। पास पहुँचते ही पानी ग़ायब हो जाता।

चार बार ऐसा हो गया तो एक दर्जन कड़ाबीन*वालों ने आकर हमें घेर लिया और पूछा कि हम क्या चाहती हैं।

'हम मेयर से मिलना चाहती हैं,' हमने जवाब दिया।

'मेयर ? मेयर ?' सारजेण्ट चिल्लाया—क्या तुम नहीं जानतीं कि

* कड़ाबीन—चौड़ी नली की एक छोटी बन्दूक जो फौजी सिपाहियों के काम आती है।

अब कोई मेयर नहीं रहा ? तुम्हारे खोपड़े में यह कब आयेगा कि अब मेयर को 'पॉडेस्टा' कहते हैं ?

वह किसी भी नाम से पुकारा जाय, हमारे लिए तो सब एक ही बात थी। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों के लिए निश्चय ही यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात थी, अन्यथा पॉडेस्टा की बजाय मेयर से मिलने की बात कहने पर कारकून हँसते ही क्यों और सारजेण्ट भी क्यों गुस्सा होता ? लेकिन पढ़े-लिखे लोग हड़बड़िये होते हैं और न कुछ-सी बातों पर क्रोधित हो उठते हैं।

सारजेण्ट ने चार कड़ाबीनवालों को हुक्म दिया कि वे हमें अपने साथ पॉडेस्टा के यहाँ ले जायँ। दो कड़ाबीनवाले हमारे आगे हो गये और दो पीछे। राहगीर हमपर आवाजें कसते और हमें चिढ़ाते थे। बड़े शहरवालों को और खासकर मजदूरों और नौसिखियों को तो सदा ही देहाती किसानों का उपहास करने में मजा आता है।

कड़ाबीनवाले हमें मुख्य सड़क और ऐसी कई दूसरी सड़कों से ले गये जिनसे हम अपरिचित थीं। जब पुराने मेयर डॉन सर्कोस्टाञ्जा का घर निकल गया और कड़ाबीनवाले न रुके तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। और हमें यह जानकर भी कुछ कम अचरज न हुआ कि डॉन सर्कोस्टाञ्जा अब मेयर नहीं रहा। तब हमने सोचा कि अब ये हमें डॉन कार्लो माग्ना के यहाँ ले जायँगे, पर कड़ाबीनवाले उसके घर पर भी बिना रुके चलते ही रहे। हम आगे बढ़ते गये और शीघ्र ही एक बार फिर गाँव से बाहर खेतों में आ गये।

हम आपस में बोलीं कि कड़ाबीनवाले हमें बेवकूफ बना रहे हैं। डॉन सर्कोस्टाञ्जा के सिवा और कोई मेयर हो ही नहीं सकता। लड़ाई के पहले और लड़ाई के समय और लड़ाई के बाद भी वही मेयर था; और बीच में थोड़े समय के लिए जब वह मेयर न था तो डॉन कार्लो माग्ना था। लेकिन कड़ाबीनवाले उन दोनों घरों के आगे से जब बिना रुके निकल आये हैं तो इसका साफ मतलब है कि वे हमारे साथ कोई बेहूदा छल करना चाहते हैं।

अब कड़ाबीनवाले हमें इमारती सामान—ईंट, चूने, रेती, गाडरों और चद्दरों से घिरे एक रास्ते से ले जाने लगे। इस रास्ते पर चलना हमारे लिए बहुत ही कठिन हो रहा था। अन्त में हम हाल ही के बने एक बँगले के फाटक पर पहुँचीं, जिसका स्वामी फाण्टामारा में ठेकेदार के नाम से मशहूर, एक रोमन था। बँगला झण्डियों और रंगीन कागजों के छोटे लैम्पों से सजा हुआ था। कई औरतें आँगन में कालीनें झटक-पछाँट रही थीं। कड़ाबीनवाले बँगले के फाटक के ठीक सामने रुक गये।

हम सब मारे आश्चर्य के चिल्ला उठीं—क्या! क्या उस लुटेरे को मेयर बना दिया? उसके जैसे परदेशी को! यह असम्भव है।

कड़ाबीनवालों ने हमसे कहा—कल ही उसकी नियुक्ति हुई है। उसे 'पॉडेस्टा' नियुक्त करनेवाला तार रोम से कल ही आया है।

तीन साल हुए, जब ठेकेदार पहले पहल रोम से आया तो उसके बारे में यह कोई नहीं जानता था कि वह कौन है और कहाँ का रहनेवाला है? उसने एक सराय में डेरा डाला और मई के महीने में जब कि सेब दरख्त पर ही थे और किसानों को पैसों की जरूरत थी, उन्हें खरीदना शुरू किया। उसके बाद उसने प्याज, सेम, मसूर और टमाटर खरीदना शुरू किये। जो कुछ वह खरीदता, रोम भेज देता था। तब उसने सूअर और बाद में घोड़े पालना शुरू किये। अन्त में वह हर तरह के व्यापार में हाथ डालने लगा; वह खरहे, शहद, चमड़ा, जमीन, शहतीर और ईंटें बनाने का व्यापार करता था। शुरू-शुरू में पुराने जमींदार उसे हलकी निगाहों से देखते और उसके साथ किसी तरह का लेन-देन नहीं करते थे। लेकिन एक-एक कर वह उन सब पर हावी हो गया। ऐसा एक भी व्यापार न बचा जिसमें उसने उन्हें मात न किया हो। अन्त में जब उन्हें शक हुआ तो उन्होंने सचमुच ही उसे जालसाजी के लिए दोषी ठहराया। सरकारी जाँच हुई और एक नोट बनानेवाली बैंक का पता चला जो उसके सभी उद्योगों के लिए पैसा जुटाती थी। नोट जाली नहीं थे, क्योंकि कारखाने का सम्बन्ध एक बैंक से था।

फाण्टामारा में इस विचित्र सत्य के बारे में, जिसे कोई मानने को तैयार न था, काफी बहस-मुबाहसा हुआ। हम अपने निजी अनुभव और जो कुछ लोगों से सुना था उस पर से जानती थीं कि बैंक का उपयोग पैसा सुरक्षित रखने, या रुपये अमेरिका से इटली भेजने या दूसरे देश के सिक्के बदलने में किया जा सकता है। लेकिन बैंक का व्यापार से क्या सम्बन्ध? किसी बैंक का सूअर पालने या मकान बनाने या ईंटे बनाने या चर्मोद्योग से क्या सम्बन्ध हो सकता है?

जाँच के बाद ठेकेदार की इज्जत बहुत ज्यादा बढ़ गई। वह बैंक का प्रतिनिधित्व करता था। एक टकसाल उसके हाथ में थी। पुराने जमींदार उसके आगे काँपने लगे। तो भी हमारी समझ में नहीं आता था कि उन्होंने उसे मेयर बनने ही कैसे दिया।

हमें देखते ही आँगन में काम करनेवाली औरतें ठेकेदार की स्त्री रोजालिया को बुला लाईं। वह बाहर आई तो क्रोध से आग-बबूला हो रही थी। वह प्रौढ़ उम्र की और शहरवाली औरतों की तरह कपड़े पहिने थी। उसका सिर शिकारी चिड़िया-जैसा और शरीर लम्बा तथा झुर्रियोंवाला था।

वह चिल्लाने लगी—जाओ! हटो! निकलो! तुम क्या चाहती हो? क्या हम अपने घर के मालिक भी नहीं रहे? तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे यहाँ भोज है? एक घण्टे में ही मेरे पति की नियुक्ति के उपलक्ष में भोज शुरू होनेवाला है; तुम्हें किसने बुलाया? मेरे पति घर नहीं हैं और लौटने पर उन्हें तुम्हारे साथ समय खराब करने की फुर्सत भी न होगी। यदि तुम्हें उनसे मिलना हो तो जाकर ईंटों के भट्ठे पर मिलो।

कड़ाबीनवाले हमें ईंटों के भट्ठे का रास्ता दिखलाकर चले गये।

कई बार रास्ता भूलकर हम भट्ठे पर पहुँचीं। वहाँ लगभग बीस मजदूर थे और कुछ गाड़ीवान ईंटें भर रहे थे, परन्तु ठेकेदार नहीं था। उन्होंने कहा कि उसे यहाँ से गये थोड़ी देर हुई है। वह एलेक्ट्रिक सॉ-मिल—बिजली के आरे—पर हो, पर शायद वहाँ से भी

चला गया हो। अच्छा हो कि तुम चमड़ा कमाने की जगह जाओ। लेकिन वह जगह वहाँ से बहुत दूर थी।

हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या करें। इसलिए बिना कुछ निश्चय किये ही, हम धूलवाली सड़क पर रुक गईं। गर्मी से दम घुटा जा रहा था और धूल हमारी आँखों में घुस गई थी। हमारे बाल, मुँह, गले और आस्तीनें धूल से गन्दी हो गई थीं और हम आसानी से पहिचानी नहीं जा सकती थीं। भूख और गरमी से हम निर्जीव हो रही थीं।

'यह सब तेरा क़सूर है, तेरा नाश जाय, तेरा!' लिज़ाबेत्ताँ लिमोना सार्सानेरा पर भभक उठी।

यह सबके लिए लड़ने का संकेत था। पॉञ्जियो पिलाटो की घरवाली मुझसे भिड़ पड़ी और चीखने लगी—

'मुझे तूने घसीटा। मैं आना नहीं चाहती थी। घर पर मुझे बहुत काम है, गली-गली भटकने के लिए मेरे पास फालतू समय नहीं है।'

गिडिटा सारपोन और कानारोजो की लड़की आपस में एक दूसरे के झोंटे उखाड़ने लगीं और अन्त में सड़क पर लोट-पोट हो गईं। मेर्या ग्रेज्या कानारोजो की लड़की की मदद पर गई तो रेक्च्युटा उस पर झपटी और चारों धूल में लोटने लगीं। मारा-पीटी की अपेक्षा उनका गाली-गलौज ही ज्यादा जोरदार था। जोम्पा की घरवाली और लिज़ाबेत्ताँ लिमानो के बीच में सार्सानेरा इस तरह चीख रही थी मानो उसका गला ही काटा जा रहा हो, लेकिन थोड़े-से बाल उखड़ने और उसका नया एप्रन फटकर धज्जियाँ हो जाने से अधिक उसे कुछ हानि नहीं पहुँची थी। भट्ठे में काम करनेवाले मज़दूरों के बीच-बचाव करने पर ही झगड़ा बन्द हुआ।

शान्ति हो जाने पर लिज़ाबेत्ताँ बोली—इस डाइन के साथ (उसका मतलब सार्सानेरा से था) आकर हमने ग़लती की। मेरी समझ से तो ठेकेदार का नाला बदलवाने से कोई सम्बन्ध नहीं; फिर हमें यहाँ आने की आवश्यकता ही क्या थी?

माइकेल जोम्पा की घरवाली ने सुझाया—हमें चलकर डॉन कार्लो माग्ना से मिलना चाहिए। नाला उसकी जमीन की ओर मोड़ा जा रहा है। हो सकता है कि यह उसकी धींगा-धींगी हो।

हम दो-तीन विरोधी झुण्डों में फिर शहर की ओर रवाना हुईं। हम डॉन कार्लो माग्ना के घर पहुँचीं तो हमेशावाली दासी ने दरवाजा खोला। सदा की तरह हमने पूछा—

'थोड़ी देर के लिए क्या हम डॉन कार्लो से मिल सकती हैं ?'

सदा की तरह ही हमें जवाब मिला—

'डॉनकार्लो ? माग्ना, वह हाल ही भोजन करने बैठे हैं। क्या तुम श्रीमतीजी से मिलोगी ?'

श्रीमतीजी जो हमें अच्छी तरह पहिचानती थीं, ठीक उसी समय बाहर आईं। वह हमसे इस तरह मिलीं मानो हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। वह हमें बड़े रसोई-घर में ले गईं, जिसकी छत से लहसुन, प्याज, सेब के गुच्छे, सूअर की चर्बी-भरी थैलियाँ, लंगूचे, नमक-मिला सूखा गोश्त और पुट्ठे लटक रहे थे। डोना जिलोला सदा पुराने ढंग के कपड़े, एक काली टोपी और जमीन पर घिसटनेवाला एक लम्बा काला साया पहनती थी। वह बोलती थी तो ऐसा लगता था मानो रो रही है। बिना कराहे उससे बोला ही नहीं जाता था। हमारे ज़मींदारों की औरतें लेन-देन के मामले में आदमियों की तरह ही कुशल होती हैं। जायदाद और विरासत के मामले में उनकी राय आदमियों से अधिक मान्य होती है। वे ही पारिवारिक सम्पत्ति की रक्षा करती हैं, नौकरों की देख-रेख करती हैं, मजदूरों की मजदूरी चुकाती हैं और अपने खेतों में होनेवाली उपज उचित मूल्य में बेचने का प्रबन्ध करती हैं। औरतों की बदौलत ही, जो दहेज में मिली जमीन की प्राणपण से रक्षा करनेवाली होती हैं, जमींदारों की पारिवारिक सम्पत्ति का एक अंश सट्टे और कर्ज से सुरक्षित रहता है।

सभी जानते थे कि यदि पत्नी का प्रभावशाली नियन्त्रण न होता तो डॉन कार्लो माग्ना जैसे शराबी, मौजी, जुआरी और चटोरे की जाय-

दाद बहुत पहले ही छिन्न-भिन्न हो जाती। डॉन कार्लो से मिलने आनेवाले सभी लोगों को दासी जो नियत उत्तर देती थी उसे कई वर्ष पहले गृहस्वामिनी ने एक सहारे के लिए, जिससे वह अपने पति के सभी कामों पर नियन्त्रण रख सके, खोज निकाला था।

हमसे नाले के बारे में सुनकर डॉना जिजोला इस तरह पीली पड़ गई मानो बेहोश ही हो जायगी। आँसू रोकने का एक भी प्रयत्न उसका दुर्बल, रूखा चेहरा हमसे छिपा न सका।

'वह लुटेरा! वह बटमार!' वह मन-ही-मन बड़बड़ाई। उसका मतलब अपने पति से नहीं, ठेकेदार से था।

'वह आदमी सचमुच लुटेरा है।' उसने हमसे कहा—कोई भी कानून उसके लिए बाधक नहीं है। यदि वह यहाँ कुछ वर्ष और ठहर गया तो हमें और हमारे मकानों, जीवन, वृक्षों और पहाड़ों तक को निगल जायगा। वह हम सबका नाश कर डालेगा। वह और उसकी पैशाचिक बैंक हमें पथ के भिखारी बना छोड़ेगी—और जब हम गली-गली भीख माँग रहे होंगे तो वह हमें मिलनेवाली भीख तक चुरा लेगा।

'जमीन का वह टुकड़ा, जिधर फाण्टामारा का नाला मोड़ा जानेवाला है, कुछ सप्ताह पूर्व ही ठेकेदार ने हमसे सस्ते दामों खरीद लिया था। वह निश्चय ही उस ज़मीन को उपजाऊ बनाकर महँगे दामों में बेचेगा और काफी मुनाफा कमायेगा।

'और अब, उन्होंने उसे पॉडेस्टा बना दिया है। नई सरकार ने उसे पॉडेस्टा बना दिया। नई सरकार एक लुटेरे गिरोह के हाथ में है। वे अपने आपको बैंकर्स और देश-भक्त कहते हैं, पर वास्तव में वे लुटेरे हैं, जिनके दिलों में पुराने जमींदारों के प्रति कुछ भी खयाल नहीं है। इस लुटेरे को पॉडेस्टा बने चौबीस ही घण्टे हुए हैं और टाउनहाल से टाईपराइटर ग़ायब हो गये। एक महीने के अन्दर तो वहाँ के दरवाजे और खिड़कियाँ भी चली जायँगी। सड़क झाड़नेवालों को तन्ख्वाह पञ्चायत से मिलती है, लेकिन काम वे कल से ठेकेदार के कारखाने में

इमारती मजदूरों की हैसियत से करेंगे। सड़क सुधारनेवाले, जिनकी मजदूरी करों से वसूल की जाती है, उस जमीन पर, जिसे इस लुटेरे ने मेरे पति से उड़ा ली है, पानी ले जाने के लिए खाई खोद रहे हैं। जिले का हरकारा इन्नासेन्जो ला-लेग्गी ठेकेदार की औरत का नौकर हो गया है। आज सबेरे ही उस औरत के पीछे कुत्ते की तरह सिर झुकाये, तरकारियों की एक बड़ी टोकनी लेकर जाते हुए वह मुझे मिला था। और यह तो केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वह लुटेरा हम सबको निगल जायगा।'

उसकी उत्तेजित बात पर से हमें लगा कि पुराने जमींदारों के अन्तिम दिन भी आने लगे हैं। जैसी कि पुरानी कहावत है, खोदने-वालों के लिए गड्ढे तैयार हैं।

तो एक बार फिर हम पॉडेस्टा के बँगले की ओर रवाना हुईं। चलते-चलते मेरे पाँव इस कदर दुखने लगे जैसे कि वे गुड फ्राइडे के दिन घुटनों पर जब मैं क्रॉस रखती हूँ और दुखने लगते हैं।

राह में हमें फाण्टामारा का गड़रिया एण्टोनियो ज़ापा मिला, जो खुद भी ठेकेदार की तलाश में था। वह रोज़ की तरह जब सार्वजनिक चरागाह में अपनी बकरियाँ ले गया तो चौकीदार आया और यह कहकर कि चरागाह का उतना हिस्सा ठेकेदार के अधिकार में है, उसे निकाल दिया।

गड़रिया बोला—यदि चरागाह ठेकेदार के अधिकार में है तो जिस हवा में हम साँस लेते हैं, वह भी उसी के अधिकार में होनी चाहिए। एण्टोनियो ज़ापा कोई बहुत होशियार छोकड़ा नहीं था, लेकिन इस बार उसने बात बिलकुल ठीक कही थी। चौकीदार सिर्फ उसे बना रहा होगा। हमारे पहाड़ से लेकर अपुलिया तक चरागाह सदा सार्वजनिक सम्पत्ति रहे हैं। मई के महीने में कपड़ों के मेले के बाद, कोई एक करोड़ भेड़ें हमारे पहाड़ पर गर्मियाँ बिताने आतीं और ठेठ अक्तूबर के अन्त तक वहीं रहती थीं। कहते हैं कि ईसा के जन्म के पहले से भी यह चला आ रहा है। उसके बाद कितनी ही लड़ाइयाँ

और हमले हुए, कितने ही पोप और बादशाह बदल गये, पर चरागाह सदा सबके उपयोग के लिए खुले रहते आये। हमने कहा—ठेकेदार का विचार यदि चरागाह को हथियाने का हो तो वह पागल ही होना चाहिए। या शायद यह उसका पागलपन न हो और चौकीदार ही हमें बना रहे हों।

जब हम पॉडेस्टा के बँगले के फाटक पर पहुँचीं तो वहाँ दासी बिलकुल हताश खड़ी थी।

वह बोली—पॉडेस्टा अभी तक नहीं आये। मेहमानों को खाने पर बैठे आधा घण्टा हो चुका है और खुद गृह-स्वामी का अभी तक पता ही नहीं।

जहाँ हम खड़ी थीं, वहाँ तक पक्वान्नों की सुगन्ध आ रही थी। दासी ने विस्तारपूर्वक हमें भोज के बारे में बतलाया। डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने एक बढ़िया भाषण दिया था। तब उसने हमें प्याज, चटनी कुकुरमुत्ते, आलू और उनके स्वाद और महक तक के बारे में—भोज के लिए पकाई हुई प्रत्येक वस्तु के बारे में बतलाया।

भोज समाप्त ही होनेवाला था क्योंकि शराब का असर रंग दिखाने लग रहा था। सब आवाज़ों के ऊपर डॉन सर्कोस्टाञ्जा की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। भीतर के वार्तालाप का कुछ अंश खुली खिड़कियों की राह कभी-कभी बाहर सुनाई दे जाता था।

एक बार सर्वशक्तिमान्—ईश्वर—के बारे में बहस छिड़ गई। डॉन अबाक्च्यो और दवा बेचनेवाला केमिस्ट एक दूसरे के विरुद्ध थे। डॉन सर्कोस्टाञ्जा की राय पूछी गई।

उसने जवाब दिया—सर्वशक्तिमान् ? क्यों बिलकुल स्पष्ट है। सर्व-शक्तिमान् एक विशेषण है।

सब मान गये और फिर शान्ति हो गई।

तब हमने डॉन अबाक्च्यो की मतवाली आवाज़ सुनी :

"रोटी, चटनी और बढ़िया सफेद शराब के लिए तथास्तु!"

एक क़हक़हे से इस दिल्लगी का स्वागत हुआ।

फिर शान्ति। तब डॉन अबाक्च्यो बिलकुल अपनी पण्डिताऊ आवाज में लय से गुनगुनाया—"उत्तरपूजाऽहंकरिष्ये !"

यह उठने का संकेत था।

मेहमान लोग 'नाड़ा-छोड़'—मल-मूत्र-त्याग—करने के लिए बगीचे में आने लगे।

पहले डॉन अबाक्च्यो निकला। वह चर्बी से फूल रहा था। उसके गले की नसें तनी हुई और उसका लाल चेहरा सूजा हुआ था। उसकी आँखें सूअर के-से अलग आनन्द की अभिव्यक्ति में आधी मूँद रही थीं। वह शराब के नशे में लड़खड़ा रहा था। गिरने से बचने के लिए अपना सिर एक वृक्ष के सहारे से टिका, खुली ब्रीचेज़—पायजामा—हमारी ओर किये वह उसी पर पेशाब करने लगा।

बाद में, कड़ाबोनवालों के सार्जेण्ट के साथ जिसने उसे थाम रखा था, वकील डॉन पाम्पोनियो निकला। कम-से-कम उसने मकान के पीछे जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था, जाने की सुशीलता दिखाई।

बाद में केमिस्ट, कलट्टर, डाकबाबू और दस्तावेजों का जाँच-अफसर निकले, वे ईंटों के एक ढेर के पीछे पेशाब करने बैठे।

उसके बाद एक जवान आदमी का सहारा लिये वकील डॉन सिकोन निकला। उसका जी मचला रहा था। इसलिए वह डॉन अबाक्च्योवाले वृक्ष के पीछे पेशाब करने लगा, जब कि वह युवक उसके सिर को एक हाथ से थामे रहा।

बाद में टाउनहाल का बूढ़ा कारकून निकला। वह विद्यार्थी के नाम से मशहूर था, क्योंकि बीस वर्ष की उम्र में वह विश्वविद्यालय में भर्ती हुआ था और अब तक, साठ वर्ष का होकर भी, अपनी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। वह मकान के पीछे गया।

बाद में आनेवाला नाटा और मोटा, बैल-सी आँखों और घोड़े से जबड़ोंवाला वकील सुक्कावासियो था। उसने ईंटों के ढेर के पीछे पेशाब किया।

बाद में ताराँदेला वकील निकला। सिर, भौंह, पलक और दाढ़ी-

मूँछों के बाल न होने से उसे गंजा भी कहते थे। हमें यह देखने की बड़ी उत्सुकता थी कि क्या उसका दूसरा हिस्सा भी वैसा ही बिना बालोंवाला है, पर दुर्भाग्यवश वह मकान के पीछे चला गया। बाद में विचारक निकला। ईंटों के ढेर के पीछे जाने से पहले वह बगीचे भर में—ईश्वर जाने वह क्या सोच रहा था—बेतरतीब घूमा। वह शराब में मदहोश हो रहा था और हमने उसे ईंटों के ढेर के पीछे अपने ही पेशाब में घुटनों के बल गिरते देखा था। वह उसमें से निकलने का कोई अच्छा तरीका अभी सोच ही रहा था कि फाटक पर प्रतीक्षा में खड़ी दासी ने ठेकेदार को आते देखा।

वह कई मजदूरों के साथ जल्दी-जल्दी बातें कर रहा था। रोज़-मर्रा के कपड़े पहने, एक कन्धे पर जाकिट लटकाये, हाथ में पारा-शीशी लिये और पतलून की जेब में 'दो-फुटा' चिपकाये वह मजदूरों के साथ बातें करता आ रहा था। उसके जूते चूने से जले हुए थे और पतलून और कन्धे चूने तथा प्लास्टर से गन्दे हो रहे थे। किसी को भी जो उसे जानता न हो, यह विश्वास न होता कि वह प्रान्त में सबसे अधिक मालदार और पंचायत का मुखिया है। यद्यपि उसने हमारी उपस्थिति देख ली थी, पर वह कारीगरों के साथ बोलता और बहस करता रहा।

वह ज़ोर से बोला—यदि गाड़ीवान बेपरवाही से खपड़े तोड़ता रहा तो मैं उससे हर्जाना वसूल करूँगा। क्या? वह पिछले महीने की मजदूरी चाहता है। उसकी यह धृष्टता! क्या वह सोचता है कि मैं भाग जाऊँगा? इन बुरे दिनों ये काम पर रखने के लिए मेरा अनुगृहीत होने की बजाय...क्या! सीमेण्टवाले मजदूर दस घण्टे रोज़ काम नहीं करना चाहते? सचमुच? मैं रोज़ बारह घण्टे काम करता हूँ। मैं मालिक हूँ, और फिर भी रोज़ बारह घण्टे काम करता हूँ।

उसने बँगले की ओर मुड़कर आवाज़ दी—रोज़ालिया! सुनते ही उसकी पत्नी बरामदे में निकल आई।

'क्या राज़ नक़्शे ले आया? नहीं लाया? वह क्या समझता है

कि मैं उसे फोकट की तनख्वाह देता हूँ ? क्या स्टेशन मास्टर ने किराये का बिल भेजा ? क्या नहीं भेजा ? उसका तबादला कालाब्रिया करना पड़ेगा। क्या पुलिस अफ़सर आया था ? क्या ? तुमने उसे लौटा दिया ? तुमने उसे लौटा क्यों दिया ?...भोज ! कैसा भोज ? अच्छा, मेरी नियुक्ति के उपलक्षवाला...खेद है कि मुझे फुर्सत नहीं। मुझे अभी जाकर पुलिस अफ़सर से मिलना पड़ेगा...क्या ? मेहमान अपना अपमान समझेंगे ? न, नहीं समझेंगे। मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ, उन्हें खूब शराब पिलाना और वे बुरा नहीं मानेंगे...बेकार है। मैं उन्हें पहिचानता हूँ।'

और तब वह अपने साथवाले कारीगरों से बहस करता हुआ हमारी ओर देखे बिना ही बँगले के फाटक के सामने से सफा निकल गया। उसका बोलना और काम करने का ढग रोबीला था।

मैंने मन में सोचा कि सचमुच यदि वह लुटेरा यहाँ दो साल और ठहर गया तो सब कहीं वही-वही दिखाई देगा।

'तुम औरतें यहाँ इन्तजार करो।' यह कहता हुआ एण्टोनियो ज़ापा उसके पीछे भागा।

वह एक नये बननेवाले मकान के पीछे ओझल हो गया। हम खड़ी-खड़ी उसका इन्तजार करने लगीं।

इसी बीच पिये हुए अतिथि बरामदे में जमा होने लगे।

ऊँची उभरी हुई बड़ी-सी नाक और बाहर की ओर फैले हुए कानोंवाला डॉन सर्कोस्टान्ज़ा दूसरे वकीलों के बीच में खड़ा था। उसकी तोंद तीसरे दर्जे पर थी। सभी जानते हैं कि हमारी ओर के वकील भोज में एक विशेष तरह की फैलाई जा सकनेवाली पतलून जिसे काम्सर्टिना या ऐकेडेमिक कहते हैं, पहिनकर शरीक होते हैं। इन पतलूनों में इकहरे बटनों की बजाय तिहरे बटन होते हैं ताकि वे शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार घटाई-बढ़ाई जा सकें। जैसा कि नियम है, भोज के आरम्भ में पतलूनें पहली श्रेणी पर, मध्य में दूसरी श्रेणी पर और अन्त में, फलाहार के समय तीसरी श्रेणी पर पहुँच जाती हैं।

उस दिन डॉन सर्कोस्टाञ्जा, डॉन पॉम्पॉनियो, डॉन सिकोन, डॉन मुक़ावासियो और विद्यार्थी की कॉन्सर्टिना पतलूनें तीसरी श्रेणी पर थीं।

हमें देखते ही डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने शोर मचाकर हमारा स्वागत किया। वह चिल्लाया—

'मेरे फाण्टामारा-वासी चिरायु रहें।'

डॉन सर्कोस्टाञ्जा फाण्टामारावालों की हमेशा विशेष तरफ़दारी करता था। हमारे सभी मुक़दमे उसी के पास जाते थे। और अन्ततोगत्वा फाण्टामारा की मुर्ग़ियों के अधिकांश अण्डे बच्चे उसके रसोई-घर में पहुँच जाने का कारण भी यही था। पहले जब केवल लिखना-पढ़ना जाननेवाले ही वोट दे सकते थे, एक बार एक मास्टर ने आकर फाण्टामारा के सभी किसानों को डॉन सर्कोस्टाञ्जा का नाम और गोत्र लिखना सिखा दिया था। इसलिए फाण्टामारावाले सदा उसे ही दृढ़ता-पूर्वक वोट दिया करते थे; क्योंकि चाहकर भी किसी दूसरे को वोट देने में हम असमर्थ थे। बाद में जब चुनाव बन्द कर दिये गये तो हममें से किसी को उसके लिए खेद भी नहीं हुआ।

लेकिन डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने अभी तक 'जनमित्र' की पदवी नहीं छोड़ी थी।

डॉन सर्कोस्टाँञ्जा ने बरामदे में खड़े अपने साथियों से कहा—फाण्टामारा से आई हुई इन भली औरतों की उपस्थिति से राज्य के प्रधान को भेजे जानेवाले हमारे तार की पूर्ति हो जायेगी।

उसने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकालकर उस पर लिखा और तब ज़ोर से पढ़ा :

"जनता और अधिकारी एक साथ मिलकर नये पॉडेस्टा की नियुक्ति पर हर्ष प्रकट करते हैं।"

जब ठेकेदार लौटता नहीं दीखा, और अतिथि हमारी ओर कोई ध्यान दिये बिना ही, उसकी पत्नी से बिदा होने लगे तो हम अधीर हो उठीं। हम फाटक के सामने खड़ी हो गईं और यह तै कर लिया कि

जब तक हमारी बात न सुन ली जायगी और यह आश्वासन न मिल जायेगा कि नाला नहीं बदलेंगे, हम किसी को बाहर नहीं निकलने देंगी। हम हो-हल्ला करने लगीं :

'ग़रीबों के साथ ऐसा व्यवहार करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए। चोर! लुटेरे! सबेरे से हम भटक रही हैं और किसी ने हमारी ओर ध्यान तक नहीं दिया। भगवान तुमसे समझेगा। वह तुम्हें दण्ड देगा।'

हममें से दो-तीन ने पहली मंजिल की खिड़की पर पत्थर फेंके। काँच फूट गया। काँच फूटने की आवाज़ सुनकर हम फाटक के पास-वाले ईंटों के ढेर की ओर झपटीं। बाहर जाने के लिए बग़ीचे में निकले हुए शराबी मारे डर के बँगले में जा छिपे। दासी ने शीघ्रता से ऊपरी मञ्जिल की खिड़कियाँ बन्द कर दीं।

यकायक हमने अपने पीछे ठेकेदार की आवाज़, जो बिलकुल शान्त थी, सुनी।

उसने पूछा—तुम मेरी ईंटों से क्या कर रही हो? ईंटें मेरी हैं और तुम इन्हें उठा नहीं सकतीं, मुझ पर फेंकने के लिए भी नहीं। इसके सिवा मुझ पर पत्थर फेकने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी हरएक बात का जवाब देने के लिए मैं यहाँ खड़ा हूँ।

हमने ईंटें रख दीं और बँगले के अन्दर बग़ीचे में घुसीं। एक ओर हम खड़ी थीं और दूसरी ओर ठेकेदार तथा उसके शराब पीये हुए अतिथि, जिनका डर अभी तक दूर नहीं हुआ था।

मेरीटा सॉर्सानेरा आगे बढ़ी, ठीक तमग़े की ऊँचाई के बराबर पर उसने अपना हाथ छाती पर रखा, और चुने हुए शब्दों में सड़क सुधा-रनेवालों की दुष्टता का, जो फाण्टामारा के नाले का बहाव बदलना चाहते थे, वर्णन किया।

मेरीटा ने अन्त में कहा—हमारा विश्वास है कि श्रीमान् सड़क सुधारनेवालों को उनकी मनमानी के लिए अवश्य सज़ा देंगे।

ठेकेदार ने जवाब दिया—अगर मनमानी पाई गई तो तुम निश्चिन्त रहो, मैं अवश्य ही उसका दमन करूँगा। जब तक मैं पञ्चायत का

प्रमुख हूँ, कोई मनमानी, खासकर फाण्टामारा के लोगों जैसे कामगारों के खिलाफ, नहीं होने पायेगी। तुम इसका पूरी तरह से यकीन रखो। लेकिन इस मामले में तो मनमानी का कोई सवाल ही नहीं है। कप्तान, इनको समझा दो कि मामला क्या है।

कड़ाबीनवालों का कप्तान अतिथियों के झुण्ड में से आगे आकर कहने लगा—ज़बर्दस्ती का कोई सवाल ही नहीं उठता। नई सरकार के शासन में ज़बर्दस्ती असम्भव है। उल्टे, यह तो क़ानूनी कार्रवाई है। वास्तव में देखा जाय तो अधिकारियों ने ऐसा करने का हुक्म देकर फाण्टामारावालों पर अनुग्रह किया है।

अपनी जेब से काग़ज़ों का एक पुलिन्दा निकालकर वह आगे बोला—फाण्टामारा के सभी निवासियों ने इस अर्ज़ी पर हस्ताक्षर किये हैं। इस अर्ज़ी में, जिस पर गाँव के एक-एक आदमी के दस्तख़त हैं, सरकार से प्रार्थना की गई थी कि पैदावार अधिक हो इसलिए साधनहीन फाण्टामारा-वासियों की ज़मीन पर से नाला शहर के साधन-सम्पन्न और खेती के लिए अधिक पूँजी लगा सकनेवाले ज़मींदारों के खेतों की ओर बदल दिया जाय।

कप्तान कुछ और भी कहना चाहता था, लेकिन हमने उसे बोलने नहीं दिया। हमें अच्छी तरह मालूम था कि पिछली रात कैसे एक माननीय कोरे काग़ज़ों पर फाण्टामारा-वासियों के नाम लिख ले गया था।

हम चिल्लाने लगीं—ठग! जालसाज़! धोखेबाज़! तुम केवल ग़रीबों को ठगने के लिए ही क़ानून पढ़ते हो! झूठी अर्ज़ियों का नाश हो!

ठेकेदार ने कुछ कहने की कोशिश की, पर उसे सफलता नहीं मिली।

हम चिल्लाती ही रहीं—हम कुछ नहीं सुनना चाहतीं। तुम्हारी सब बातें जाल हैं! अधिक बहस की जरूरत नहीं। पानी हमारा है और हमारा रहेगा! हम बँगले में आग लगा देंगी! इसे जला दो! भस्म कर दो!

डॉन सर्कोस्टाञ्जा ठेकेदार की मदद पर आया।

उसने शुरू किया—ये औरतें ठीक कह रही हैं। ये ठीक हैं, दस बार, सौ बार, हजार बार ठीक हैं...

हम एकदम चुप हो गईं। डॉन सर्कोस्टाञ्जा हमारा बचाव कर रहा था, और हम जानती थीं कि वह एक बड़ा नामी वकील है।

जन-मित्र कहता गया—ये औरतें बिलकुल सही हैं, दस हजार बार सही हैं। मैंने हमेशा इनका बचाव किया है और हमेशा करूँगा। आखिर, ये औरतें चाहती क्या हैं? ये सम्मान चाहती हैं...

'सुनो, सुनो!' हम बीच में चिल्लाईं।

'ये सम्मान चाहती हैं और हमारा कर्त्तव्य है कि हम इनका सम्मान करें, क्योंकि ये सम्मान के योग्य हैं। ये औरतें ढीठ नहीं हैं। ये जानती हैं कि क़ानून इनके खिलाफ है और ये क़ानून से खिलाफ नहीं जाना चाहतीं। ये पॉडेस्टा के साथ एक मैत्री-पूर्ण समझौता चाहती हैं। ये आपकी नेकी के लिए प्रर्थना कर रही हैं। ये पंचायत के प्रमुख से नहीं, प्रजा के शुभेच्छु, जन-हितैषी और लोगों के मित्र से प्रार्थना कर रही हैं, जिसने अपने देश को विना कुछ लिये दिया ही दिया है, क्या इन शर्तों पर समझौता संभव है? हाँ, अवश्य है...'

डॉन सर्कोस्टाञ्जा के चुप हो जाने पर बहुत-से समझौते सुझाये गए। एक डान अबाक्च्यो ने सुझाया, दूसरा दस्तावेजों के जाँच-अफ़सर ने, तीसरा कलक्टर ने। वे सब ग़ैरमुमकिन थे, क्योंकि उनमें सिंचाई के लिए लगनेवाले पानी की तादाद का हवाला नहीं था।

ठेकेदार कुछ नहीं बोला। उसने दूसरों को बोलने दिया।

डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने सच्चा हाल खोज निकाला।

'इन औरतों का कहना है कि इनके खेतों की सिंचाई के लिए आधा नाला काफी नहीं है। यानी, यदि मैं इनकी इच्छाओं का सही अर्थ करूँ, तो यह कि ये आधे से अधिक चाहती हैं। इनका कहना सही और दस बार सही है। एक और केवल एक ही हल है। पॉडेस्टा के

लिए नाले का तीन चौथाई पानी छोड़ दिया जाय और बचे हुए पानी का तीन चौथाई फाण्टामारावालों के लिए सुरक्षित रखा जाय। दूसरे शब्दों में तीन चौथाई प्रत्येक को मिले, यानी आधे से कुछ ज्यादा। यही एकमात्र उपाय है। मैं महसूस करता हूँ कि 'पॉडेस्टा' के लिए मेरा प्रस्ताव काफी सख्त है, परन्तु मैं उनकी जन-हितैषिता और देश से कुछ न लेते हुए देने की वृत्ति को ध्यान में रखकर प्रार्थना करता हूँ...'

डॉन सिकोन, डॉन सुकावासियो, डॉन ताराँदेला, डॉन पॉम्पॉनियो जो इस समय तक अपने भय से पीछा छुड़ा चुके थे, ठेकेदार को चारों ओर से घेरकर घिघियाने लगे कि वह हमारे लिए इतना त्याग करे। थोड़ी देर ध्यान करने—सोचने—के बाद विचारक भी उनके साथ हो गया।

काफी मिन्नतों के बाद ठेकेदार राजी हो गया।

एक व्यक्ति जाकर कागज़ ले आया।

दस्तावेजों के जाँच-अफ़सर ने समझौते की शर्तें लिख डालीं और उस पर ठेकेदार के दस्तखत करवा लिये। कड़ाबीनवालों के कप्तान ने उस पर दस्तखत किये और डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने भी फाण्टामारा-वासियों के प्रतिनिधि की हैसियत से उस पर दस्तख़त किये।

उसके बाद हम सब घर की ओर चल पड़ीं।

(वास्तव में हममें से कोई भी यह नहीं समझ सकी थीं कि समझौते में क्या हुआ है।)

आगे जो कुछ हुआ, वह मेरा घरवाला तुम्हें सुनायेगा।

—तीन—

हमारे नाले में से ठेकेदार द्वारा खरीदी हुई जमीन की ओर पानी का एक हिस्सा ले जानेवाली खाईं पर जितने दिनों वे सड़क सुधारने-वाले काम करते रहे, उनकी हिफाजत के लिए दो कड़ाबीनवाले सिपाहियों का प्रबन्ध किया गया। लेकिन यह बिलकुल साफ़ नहीं था कि पानी का ठीक कौन-सा हिस्सा ले जाया जायगा।

और न हम यह समझने लायक अधिक पढ़े-लिखे ही थे कि नाला तीन चौथाईवाले दो बराबर हिस्सों में कैसे बाँटा जा सकता है। खुद औरतें भी, जिन्होंने शर्तें मंजूर की थीं, इसके कार्यान्वित होने के बारे में एकमत नहीं थीं। कुछ का ख़याल था कि पानी के दो बराबर हिस्से होंगे और कुछ का यह ख़याल था कि नहीं, फाण्टामारा को आधे से अधिक, यानी तीन चौथाई पानी मिलेगा। जनरल बाल्डीसेरा ने दृढ़ता-पूर्वक इस बात का समर्थन किया कि तीन चौथाई का सम्बन्ध चाँद के अँधेरे-उजेले पाखों से है। उसके कहने का मतलब यह था कि तीन उजेले पाखों तक नाला फाण्टामारावालों की जमीन सींचेगा और तीन अँधेरे पाखों तक ठेकेदार की, और इसी तरह आगे चलता रहेगा।

हममें से प्रायः सभी ने यह महसूस कर लिया था कि ठेकेदार से झगड़ा करने में समय की व्यर्थ बर्बादी के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगेगा। हममें से प्रत्येक, दूसरों का बिना कुछ ख़याल किये, बाक़ी बचनेवाले पानी के ज़यादा से ज़्यादा भाग पर अपना अधिकार जमाने को कहीं अधिक उत्सुक था। सिंचाई में अभी कुछ सप्ताह की देर थी, परन्तु झगड़े-टंटे अभी से शुरू हो गये थे।

उन दिनों हममें से अधिकांश लोग फ्युसिनो पर रोज मजूरी करने जाते थे। हमें तीन बजे उठना पड़ता था और सबेरा होने से पहले स्थानीय शहर के बाजार में पहुँचकर, जब तक कोई दिन-मजूरी के लिए नहीं रख लेता, इन्तजार करना पड़ता था। पहले बहुत ग़रीब किसान ही ऐसा करते थे, लेकिन अब सभी के लिए बुरा समय आ गया था। सभी किसानों के पास जमीन के जरा-जरा से टुकड़े थे, परन्तु वे रेहन रखे हुए थे और उनकी उपज इतनी कम थी कि उससे कर्ज़ का ब्याज चुकाना भी मुश्किल था। बाजार में आनेवाले इन किसानों की ज़्यादा तादाद देखकर जमींदार और बड़े खेत-मालिकों ने अपने लाभ के लिए मजदूरी की दर घटा दी थी। मजदूरी की दर कितनी ही कम क्यों न हो, उसे मंजूर करनेवाला कोई-न-कोई भुख-मरा हमेशा निकल ही आता था। उस कम-से-कम मजदूरी के लिए भी बहुत-से

लोग इस हद तक उत्सुक रहते कि पहले से बिना कुछ तै किये ही साथ हो लेते थे।

फाण्टामारा से शहर तक तीन मील चलने के बाद बाजार से फ्युसिनो तक अपने काम की ठीक जगह पर पहुँचने के लिए पाँच से दस मील तक और भी चलना पड़ता था। साँझ को घर लौटने के लिए भी इतनी ही मंजिल तै करनी पड़ती थी। फाण्टामारा से आते-जाते वक्त रोज पानी के बँटवारे को लेकर होनेवाली लड़ाइयाँ अधिक उग्र रूप धारण करती जा रही थीं।

कई लोग बुरी तरह से घायल हो गये थे। ग्यासोबी लोसुर्डो की कैंची (क़लम करने) की चोट से माइकेल जोम्पा का क़रीब-क़रीब एक पूरा पुट्ठा उधड़ गया था। बाल्डोविनो स्यारपा तरबूज़ की तरह अपना सिर ही फुड़वा बैठा था। एण्टोनियो रनाक्च्यो के बहनोई ने उसकी बाँह तोड़ डाली थी। पॉज़ियो पिलाटो और मेरे बीच मामला बहुत बेढब हो गया था; क्योंकि हम लड़ते तो नहीं थे, पर दोनों-के-दोनों अपने लड़के के साथ हर्बो-हथियार से लैस, डींगें हाँकते हुए काम पर जाते थे। मिलने पर आपस में हम एक-दूसरे को 'राम-राम' भी नहीं करते थे, परन्तु एक दूसरे की ओर मन-ही-मन समझनेवाली एक ऐसी निगाह से देखते थे कि झगड़ा अधिक दिनों तक नहीं टाला जा सकता।

एक दिन सबेरे जब मैं अपने लड़के के साथ फ्युसिनो की ओर जा रहा था, वह मुझे सड़क सुधारनेवालों के साथ बात करता हुआ मिला।

वह कह रहा था—देखो, मेरी फलियों के लिए जरूर पानी बचना चाहिए। बाक़ी सब भाड़ में जायँ।

दोनों हाथों में कैंची पकड़े मैं यह चिल्लाता हुआ उस पर झपटा, 'ले, पहले तू ही भाड़ में जा।'

बेरार्डो वॉयला और सड़क सुधारनेवालों के साथ तैनात कड़ाबीनवाले सैनिक देख रहे थे, नहीं तो उस समय फौजदारी हो जाती।

पॉन्जियो पिलाटो से मेरा झगड़ा बचाने के लिए बेरार्डो वॉयला कुछ दिनों तक रोज मेरे साथ फ्युसिनो आता रहा। खेत-पात न होने से पानी को लेकर उसका स्वार्थ किसी से नहीं टकराता था और यही वजह थी कि वह इस मामले में झगड़ों में अलग रह सका।

कुछ वर्ष पहले अमेरिका जाने के इरादे से उसने बाप से विरासत में मिली अपनी ज़मीन का एकमात्र टुकड़ा बेच दिया था। लेकिन अमेरिका जाने का हुक्म कभी नहीं आया और वह फाण्टामारा में ही पड़ा रहा। उसकी दशा जंजीर से छूटे हुए उस कुत्ते जैसी हो गई थी, जो अपनी नई स्वतन्त्रता के सुखोपभोग में असमर्थ गँवाये हुए लाभों के लिए अधीरता-पूर्वक लालायित रहता है। यों स्वभाव से वह अत्यन्त लड़ाका था।

उसका दादा हमारे प्रान्त का मशहूर डाकू वॉयला था, जिसे पिड्‌माण्टेसी ने १८६७ में पकड़ा था। बेरार्डो को अपने दादा से हिम्मत और शक्ति विरासत में मिली थी। वह शाहबलूत के धड़ की तरह मज़बूत और आकार-प्रकार में एक दैत्य ही था। उसका सिर निहाई की तरह चौकोर और आँखें बड़ी-बड़ी और डरावनी थीं। साहसी, उतावला, प्रभावशाली, मदिरा-प्रेमी, अपव्ययी, मित्रों के प्रति उदार, परन्तु साथ ही हठीला और ईश्वर या मनुष्य से न डरनेवाला, वह सदा लड़ने-भिड़ने को तैयार रहता था। उसकी शारीरिक शक्तियों ने उसे फाण्टामारा के कुछ खास युवकों में बहुत ही प्रभावशाली बना दिया था, पर इस प्रभाव से कोई व्यावहारिक लाभ होने की अपेक्षा अनिष्ट और उत्पात ही अधिक होते थे।

उसे यह निश्चित सूचना मिल जाने के बाद कि वह अमेरिका नहीं जा सकता, एक दिन डॉन कार्लो माग्ना के अंगूर के एक पूरे बगीचे के अंगूर तोड़े हुए मिले। गदहे और पुरोहित की प्रसिद्ध मजाक के जवाब में, शहर में पानी ले जानेवाले नल कई जगह से काट डाले गये। एक बार बड़ी सड़क पर आठ मील के घेरे के अन्दर के सभी मील के पत्थर तोड़ डाले गये। मोटरवालों की सहायता के लिए लगाये हुए

संकेत—साइनपोस्ट—ज़्यादा-से-ज़्यादा तीन दिन अपनी जगह पर रह पाते थे।

जिस दिन फाण्टामारा की बिजली काट दी गई, बेरार्डो कुछ न बोला; परन्तु दो दिन बाद पास-पड़ोस के गाँवों से शहर जानेवाली सड़क पर की बिजली-रोशनी के सब गोले फोड़ डाले गये थे।

बेरार्डो वॉयला का सिद्धान्त था—"शहरवालों के साथ बहस करने से कोई लाभ नहीं!"

इसका कारण वह यह बतलाता था कि क़ानून शहरवाले बनाते हैं, क़ानून का उपयोग करनेवाले जज शहराती होते हैं और व्याख्या करनेवाले वकील शहराती होते हैं, फिर किसान के लिए न्याय की आशा ही कैसे हो सकती है?

यदि कोई पूछता कि क्या मज़दूरी कम देने पर भी बहस न की जाय, तो वह तत्काल उत्तर देता—

'ऐसा करना समय की पूरी बर्बादी है। रोज-मजूरी करनेवाले का एक खेत-मालिक से बहस करना पूरी तरह से समय की बर्बादी है। हर हालत में उसे मज़दूरी कम ही मिलेगी। एक खेत-मालिक अपने फायदे के अनुसार ही काम करता है। मज़दूरी कम न करने देने के लिए आवश्यक है कि उसे नुकसान पहुँचाया जाय। यह कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें बतलाता हूँ। नाज के खेतों में निराई करनेवाले छोकरों की मज़दूरी वे पाँच से सात लीरा तक कम करते हैं। छोकरों ने शिकायत नहीं की और मेरे कथानुसार किया। घास जड़ से छीलने के बजाय उन्होंने उसे खाली मिट्टी में दबा दिया। अप्रैल की बारिश के बाद खेत-मालिक देखता है कि घास नाज के पौधों से कहीं ज़्यादा ऊँची हो रही है। कम मज़दूरी देकर उन्होंने बचत की जितनी आशा की थी, कुछ सप्ताहों बाद मँड़ाई के वक्त उन्हें इस तरह दसगुने से अधिक हानि उठानी पड़ी। यदि कटनी करने के लिए वे कम मज़दूरी दें, तो बहस या शिकायत से कोई लाभ नहीं। कटनी के एक से अधिक तरीके हैं। दसों तरीके हैं। हरएक तरीका मज़दूरी की अलग-अलग

दरों से सम्बन्धित है। अगर मज़दूरी अच्छी है तो कटनी अच्छी होगी; अगर मजदूरी कम है तो कटनी ख़राब होगी।'

यदि कोई उससे पूछता कि जिस ढंग से ठेकेदार ने हमारा नाला छीन लिया, क्या उसकी भी कोई शिकायत न की जाय, तो वह उसी तरह से जवाब देता—

'चमड़ा पकाने के कारख़ाने में आग लगा दो और वह बिना किसी बहस-मुबाहसे के तुम्हारा नाला लौटा देगा। और अगर वह इतने पर न समझे तो उसकी लकड़ी के गोदाम में आग लगा दो। और यदि यह भी काफी न हो तो ईंटों का कारखाना उड़ा दो। और यदि वह इतना बेवकूफ हो कि तब भी न समझे, तो एक रात जब कि वह डॉना रोज़ालिया के साथ बिस्तर में पड़ा हो, उसका बँगला फूँक दो। तुम्हारा पानी वापस पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो एक दिन वह तुम्हारी लड़कियाँ ले जाकर उन्हें भी बाज़ार में बेच देगा। और मैं उसे दोष भी नहीं देता। तुम्हारी लड़कियाँ आखिर हैं ही किस योग्य ?'

बेरार्डो वॉयला का सिद्धान्त इतना कटु था। लेकिन इस तरह की बहस वह सिर्फ इसलिए करता था कि उसके पास कोई ज़मीन नहीं थी, और उसका अभाव उसे मन-ही-मन खटकता था। उसकी यह बहस ऐसे आदमी के समान थी जिसे कुछ खोना न हो। दूसरे किसानों की हालत उससे भिन्न थी।

अमेरिका जाने के उसके मंसूबे और जमकर काम न करने का उसका ढंग—ऋतुओं के अनुसार कभी रोज-मजूरी, कभी लकड़ी काटना, कभी कोयले बनाना, कभी ईंटें पाथना आदि विभिन्न काम—प्रकट करते थे की वह अपनी दशा से सन्तुष्ट नहीं था। और बे-खेत-खलिहान और इसीलिए दूसरे किसानों से हीन-स्थिति में होने से उसे यह मानने का अख्तियार नहीं था कि कोई उसकी सलाह सुनेगा। हर बार जब-जब उसने हमारी बहस में दखल दिया, हमारी गड़बड़ी ही बढ़ाई ; इसलिए कोई भी दुनियाबी आदमी कभी भी उसकी बात

पर ध्यान नहीं देता था और न विरोध ही में कुछ कहता था। केवल जनरल बाल्डीसेरा, जिसका दृष्टिकोण सदा उससे छत्तीस पड़ता, अपवाद था। लेकिन मोची होने के कारण उसका बेकार की बहसों में रस लेना स्वाभाविक ही था।

लेकिन अपनी उच्छृंखल बातों और उदाहरण से बेरार्डो ने फाण्टामारा के युवकों का दृष्टिकोण ही बदल दिया था।

फाण्टामारा में पहले कभी इकट्ठे इतने जवान आदमी न थे। एक जमाना था जब कि सोलह वर्ष के होते ही वे घर छोड़कर परदेश चले जाते थे। कुछ रोमन कम्पाना, कुछ अपुलिया और दूसरे कुछ अमेरिका चले जाते थे। कई अपनी वाग्दत्ताओं को चार, छः या दस वर्ष के लिए छोड़ जाते थे और लौटकर तब विवाह करते थे। कई विवाह के दूसरे दिन, ठीक सुहाग-रात के बाद ही चार, छः या दस वर्ष के लिए परदेश चले जाते थे। घर लौटकर वे अपने लिए बड़े-बड़े बाल-बच्चे तैयार पाते थे; कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि विभिन्न उम्र के कई बाल-बच्चे हो जाते थे।

लेकिन परदेश जाने के सम्बन्ध में रोक हो जाने से यह सब बन्द हो गया था, और जवानों के सामने फाण्टामारा में रहने के सिवा और कोई रास्ता नहीं था। और फाण्टामारा में प्रत्येक के लिए काम निरन्तर कम पड़ता जा रहा था। परदेश जाने की असम्भावना का मतलब था रुपये कमाने और बचाने की असम्भावना; उस रुपये की असम्भावना जिससे वे रेहन और कर्ज-पीड़ित पैतृक सम्पत्ति को बचा सकते थे, जिससे वे जमीन की उन्नति कर नये ढंग से खेती कर सकते थे, जिससे वे बूढ़े या मरे हुए गदहे की बजाय एक जवान गदहा ख़रीद सकते थे, जिस पैसे से वे एक सुअर, दो बकरियाँ या शादी के लिए एक बिस्तर ख़रीद सकते थे। जवान होने के कारण वे अपना असन्तोष शिकायत और बड़बड़ाहट में प्रकट नहीं करते थे। न अपने भाग्य की असामान्य कठोरता ही बाहरी चिह्नों से प्रकट होने देते थे। वे अकसर छुट्टियों के दिनों, अपने से उम्र में बड़े परन्तु बुद्धि में छोटे

एक व्यक्ति के प्रभाव में एकत्र होते और ऐसी योजनाएँ बनाते और काम करते थे जिसका समझदारी से कोई सम्बन्ध नहीं होता था।

सर्दियों में सुविधा के लिहाज से वे एण्टोनियो जापा के अस्तबल में, जहाँ की हवा बकरियों की साँस से गर्म रहती थी, एकत्र होते। एण्टोनियो स्पावेण्टा, लुइजी देल्ला क्रोस और पालुम्मो, राफेल स्कार्पोन, बेनेर्डो सेण्टो और मेरा लड़का और पॉन्ज़ियो पिलाटो का लड़का और दूसरे कई वहाँ जाते थे। जब कभी किसी उत्पात की आयोजना होती, बेरार्डो वॉयला भी अवश्य जाता था।

इस छोटी-सी मण्डली में, जिसे फाण्टामारा की लड़कियाँ दुराचार-मण्डली कहती थीं, और कोई शामिल नहीं किया जाता था। पहले-पहल तो यह नाम कुछ अजीब लगा, लेकिन एक दिन जब इस मण्डली की असली हकीकत मालूम हो गई, तो यह नाम बिलकुल मौजूँ था। बकरियों और खासकर बॉल्डोविनो स्यारपा की एक जवान बकरी के साथ, जिसे अपने रंग के कारण रोजेट्टा कहते थे, जिना करना इन जवानों का अतिप्रिय आमोद था। ऐसा कहते हैं कि यह रोजेट्टा बकरी एक खास सधे हुए ढंग से प्रसन्नता-पूर्वक आदमी के हवाले हो जाती थी। रोजेट्टा को लेकर बार-बार झगड़े हुआ करते थे। कई दिनों तक यह घिनौना व्यवसाय चलता रहा, क्योंकि बकरी के मालिक बॉल्डोविनो स्यारपा को, जैसा कि अकसर ऐसे मामलों में होता है, इसके बारे में बहुत देर से मालूम हुआ। पर इस बदनामी की वजह से जब दूसरे किसानों ने अपनी बकरियाँ एण्टोनियो जापा के सुपुर्द करना बन्द कर दीं, तो दुराचार-मण्डली का भी अन्त हो गया।

लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य तो यह था कि बेरार्डो जैसा तन्दुरुस्त और ताक़तवर जवान जो अपनी तीसी में आ रहा था और जिसके माँ-बाप नहीं थे, नब्बे वर्ष की अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहा करे और घर बसाने की कोई मन्शा प्रकट न करे। एल्वीरा ला तिन्तोरा और उसकी सगाई एक बार क़रीब-क़रीब तै ही हो चुकी

थी और उससे अच्छी लड़की उसे शायद ही कोई मिलती, पर अपनी ज़मीन का एकमात्र टुकड़ा खोने के बाद बेरार्डो ने बिना किसी स्पष्टीकरण के उससे नाता तोड़ लिया था। एल्वीरा का समाचार पूछना उसे क्रोधित करने का निश्चित उपाय था। सर्दियों की लम्बी साँझों में जब कोई काम न रहता और जब बूढ़े शराब पीते और जब जवान डोरे डालते—प्रेम करते—बेरार्डो देर तक बैठा-बैठा जनरल बॉल्डीसेरा के साथ शहरातियों और देहातियों के बीच पाये जानेवाले अन्तर और तीन क़ानूनों—पुरोहित का क़ानून, मालिक का क़ानून और रीति-रिवाजों के क़ानून—के बारे में बहस करता था। वह टेबल को इतनी ज़ोर से पीटता कि मेरीटा सॉर्सोनेरा का शराबखाना काँप उठता। लेकिन बूढ़ा जनरल अपने विश्वास में, जिसे वह समाज का अपरिवर्तित और अन्तहीन क्रम कहता था, अटल रहता।

यह सोचा जाता था कि बेरार्डो ने एल्वीरा पर का अपना सब हक छोड़ दिया है, लेकिन जब एक दिन यह खबर उड़ी कि सड़क सुधारनेवाले फिलिप्पो इल बेल्लो ने एल्वीरा की मँगनी की है, तो बेरार्डो पागल साँड़ की तरह बिगड़ खड़ा हुआ। वह फिलिप्पो इल बेल्लो के मकान की ओर लपका, पर वह घर पर न था। यह सुनकर कि वह पत्थर की खदान पर गया हुआ है, बेरार्डो उधर भागा और उसे गिट्टी के ढेर पर काम करता पाया। उसके और एल्वीरा के बारे में सच-झूठ की पूछ-ताछ किये बिना ही उसने उसे तिनके की तरह उठा लिया और आठ-दस बार गिट्टी के ढेर पर दचीक मारा। तब दूसरे मजदूरों ने आकर उसे रोका।

उस दिन के बाद से, यद्यपि बेरार्डो उसे टालता ही रहा, लेकिन एल्वीरा की मँगनी करने की किसी को हिम्मत न हुई।

एक दिन शाम को फ्युसिनो से घर लौटते हुए रास्ते में मैंने उससे इस बारे में जानना चाहा।

'एल्वीरा अब पचीस से कुछ ऊपर की होगी,' मैंने कहा, 'और हमारे यहाँ, जहाँ लड़कियाँ बीस वर्ष की उम्र से पहले ही ब्याह दी

जाती हैं, यह बहुत ज्यादा है। और कुछ नहीं तो घर-गृहस्थी में मदद के लिए ही उसकी शादी हो जानी चाहिए।'

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

'यदि तुम उसे ब्याहना तै नहीं करते तो उसे अधिकार है कि वह किसी और के साथ अपनी शादी कर ले।'

बेरार्डो आग-बबूला हो गया।

'चुप रहो,' उसने इस तरह से कहा कि इस बारे में बातचीत ही बन्द हो गई।

दूसरे दिन फ्युसिनो जाने के लिए मैं उसकी प्रतीक्षा में रुका रहा, पर वह नहीं आया। मैं उसे घर बुलाने गया कि शायद सो रहा हो। वहाँ बुढ़िया आँसू ढार रही थी। वह बोली—

'बेरार्डो पागल हो जायगा। अपने दादा से भी कहीं अधिक बुरा उसका अन्त होगा। कल रात क्षण-भर के लिए भी उसकी पलक न झपी। वह दो बजे उठ खड़ा हुआ। जब मैंने उससे कहा कि अभी फ्युसिनो जाने में कुछ देर है तो वह बोला कि मैं फ्युसिनो नहीं जा रहा हूँ। मैंने पूछा—कहाँ जा रहे हो? वह बोला—कामारीज़। मेरे यह पूछने पर कि जब फ्युसिनो में काम है, तो तुम कामारीज़ क्यों जाते हो? उसने जवाब दिया कि कामारीज़ में ज़्यादा पैसा मिलता है। मेरे इस सवाल का कि तुम पैसे की कबसे परवाह करने लगे हो, उसने कोई जवाब नहीं दिया और चला गया।'

बेरार्डो के लैटियम जाने की खबर बिजली की तरह फैल गई, जिसे सुनकर फाण्टामारा के सभी किसानों को अचरज हुआ; यद्यपि कोई कारण नहीं कि रोज-मजूरी करके कमाने-खानेवाला किसान अपना प्रान्त छोड़कर, काम की मौसम भी क्यों न हो, दूसरी जगह जहाँ ज़्यादा पैसे मिलते हों, न जाय और अपने प्रांत में ही पड़ा रहे। लेकिन जब बेरार्डो उसी साँझ फाण्टामारा लौट आया तो हमें और भी आश्चर्य हुआ।

जनरल बाल्डीसेरा और मेरीटा-सहित हम चार-पाँच बीच सड़क

में खड़े उसके जाने के बारे में ही बातें कर रहे थे। तभी हमने उसे अचानक आते हुए देखा। उसका आना इतना अनपेक्षित था कि क्षण-भर तो हमने उसके जाने की खबर को एक मजाक ही समझा। लेकिन वह अपनी बढ़िया कमीज और टोप पहने था और उसकी बगल में एक गठरी थी। वह वापस किसलिए आ रहा था? उसने एक बहुत ही गड़बड़ी पैदा करनेवाली बात कही।

वह कहने लगा—टिकट लेकर मैं स्टेशन पर इन्तजार कर रहा था। कड़ाबीनवाले सैनिकों का एक दस्ता आकर प्रत्येक से परवाने के बारे में और यात्रा करने का कारण पूछने लगा। मैंने एकदम सच-सच कह दिया। मैंने कह दिया कि मैं मजदूरी करने के लिए कामारीज जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा—'अच्छा, तुम्हारा परवाना कहाँ है?' 'कैसा परवाना?' मैंने पूछा। लेकिन उनसे कुछ स्पष्ट जवाब देते नहीं बना। वे मुझे टिकट-घर ले गये, मेरे टिकट के पैसे वापिस दिलवाये और मुझे स्टेशन से बाहर निकाल दिया। तब मैंने दूसरे स्टेशन तक पैदल जाकर वहाँ से गाड़ी पकड़ने का इरादा किया। वहाँ जाकर मैंने टिकट खरीदा ही था कि कड़ाबीनवाले दो सिपाहियों ने आकर पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो? मैंने कह दिया कि मैं मजूरी करने के लिए कामारीज जा रहा हूँ। उन्होंने कहा—'हमें अपना परवाना दिखाओ।' 'कैसा परवाना? इसका परवानों से क्या सम्बन्ध?' मैंने पूछा। वे बोले—'बिना परवानों के तुम काम नहीं कर सकते। देश में ही प्रवास करने के लिए एक नया स्वदेश-प्रवास-क़ानून बना है।' मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मेरा कामारीज जाने का स्वदेश-प्रवास से कोई सम्बन्ध नहीं है और मैं वहाँ केवल मजदूरी के लिए जा रहा हूँ। लेकिन उन्होंने एक न सुनी। वे बोले—'हमें ऐसे ही हुक्म मिले हैं। हम किसी भी मजदूर को जिसके पास परवाना नहीं, दूसरे प्रान्त में मजदूरी करने के लिए ट्रेन द्वारा नहीं जाने दे सकते।' उन्होंने मुझे मेरे टिकट के दाम वापस दिलवाये और स्टेशन से बाहर कर दिया। लेकिन वह परवानों की बात मेरी समझ में नहीं आई। मैं एक सराय

में गया और वहाँ कुछ लोगों से बातें करने लगा। 'परवाना?' एक गाड़ीवाले ने मुझसे कहा। 'परवानों के बारे में तुम कैसे कुछ नहीं जानते? लड़ाई के समय हम सिवा परवानों के शायद ही और कोई बात करते हों।' और इस तरह पूरा दिन बर्बाद कर मैं फिर लौट आया।

बेरार्डो की बात का सबसे ज़्यादा असर जनरल बाल्डीसेरा पर हुआ। अपनी जेब से एक छपी हुई गश्ती चिट्ठी निकालकर, जो उसके पास डाक से आई थी, वह बोला—

'इसके अन्दर भी उन्होंने परवाने के बारे ही में लिखा है?'

इसमें कोई शक नहीं था। कामगार-संघ, चमड़ा-विभाग, सूबा अपुलिया ने जनरल बाल्डीसेरा से यह निश्चित माँग की थी कि वह मोचीगिरी का परवाना ले ले।

मेरीटा ने कहा—एल्वीरा के पास भी एक ऐसी ही चिट्ठी आई है। वह बिलकुल डरी हुई मेरे पास आई और मुझसे चिट्ठी का मजमून समझाने के लिए कहा। मेरी समझ में भी कुछ खाक-पत्थर नहीं आया। मैं केवल इतना जान सकी कि उन्होंने लोगों की काम करने की आज़ादी छीन ली है। एल्वीरा के दादे-परदादे उससे पहले रँगरेज और जुलाहे थे और कभी किसी ने उनके काम में दखल नहीं दिया—लेकिन अब उन्होंने उसे लिख भेजा है कि वह काम करना चाहती है तो करे और परवाना ले।

गश्ती चिट्ठियों का मामला और बेरार्डो के साथ होनेवाली अजीब घटनाएँ जब एक ही साथ हुईं तो मुझे शक हुआ कि यह सब मजाक है।

मैंने कहा—रँगने और बुनने से सरकार को क्या करना है? काम की तलाश में यदि किसान एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाते हैं तो सरकार हस्तक्षेप क्यों करेगी? सरकार के लिए दूसरी बहुत-सी बातें सोचने की हैं। ये सब तो बिलकुल निजी मामले हैं। केवल लड़ाई के समय ही सरकारें जनता की व्यक्तिगत आज़ादी में हस्तक्षेप करती हैं।

जनरल बाल्डीसेरा ने टोका—तुम इस बारे में जानते ही क्या हो? तुम्हें क्या मालूम कि हम लड़ रहे हैं या नहीं?

इस बात का सभी पर असर हुआ।

'यदि सरकार लोगों को परवाने लेने के लिए बाध्य करती है, तो इसका मतलब है कि हम लड़ रहे हैं।' जनरल बाल्डीसेरा ने विवाद-पूर्ण स्वर में कहा।

बेरार्डो ने पूछा—लड़ाई किसके साथ हो रही है, इसके बारे में बिना कुछ जाने ही हम कैसे लड़ सकते हैं?

जनरल बाल्डीसेरा ने कहा—तुम इसके बारे में क्या जान सकते हो? यह ग़ैरमुमकिन है कि तुम्हारे जैसा मूर्ख, बे-खेत-खलिहानवाला किसान इसके बारे में कुछ जान सके। लड़ाई की घोषणा करनेवाले शहराती होते हैं; लेकिन लड़ाई लड़नेवाले किसान होते हैं। जब पिछली लड़ाई छिड़ी तो फाण्टामारा में यह कोई नहीं जानता था कि वह किसके खिलाफ है। पॉन्ज़ियो पिलाटो ने सोचा था कि वह मेनेलिक के खिलाफ है, सिम्प्ली सियानो ने सोचा था कि तुर्कों के खिलाफ है और अभी कुछ साल पहले ही हमको पता लगा कि दरअसल लड़ाई ट्रेण्टनो और ट्रीस्ट के खिलाफ थी। इतिहास की कुछ लड़ाइयों के बारे में आज तक कोई यह न जान सका कि वे किसके खिलाफ थीं। लड़ाई? क्यों, लड़ाई एक इतनी जटिल चीज है कि उसे समझने की एक किसान से कोई आशा ही नहीं की जा सकती। किसान युद्ध का एक छोटा-सा भाग—उदाहरण के लिए परवाने—देखता है और इसका उसपर बड़ा भारी असर होता है। शहराती लड़ाई की बहुत-सी चीजें देखता है—बारकें और युद्धसामग्री के कारखाने और इससे सम्बन्धित हरएक चीज। बादशाह सारा मुल्क देखता है। सब कुछ देखनेवाला अकेला ईश्वर ही है।

मैंने बाल्डीसेरा से पूछा—अच्छा, तुम अपना परवाना लेनेवाले हो या नहीं?

उसने जवाब दिया—क्यों नहीं, मैं परवाना तो जरूर लूँगा, पर उसके लिए कर नहीं दूँगा।

जुदी-जुदी बातें करने के बावजूद भी परवानों के प्रति अख्तयार किये जानेवाले रुख के बारे में हम एकमत थे।

उस रात लड़ाई के बारे में और भी बहुत-सी बातें हुईं। कोई घर ऐसा न बचा, जिसमें इसकी चर्चा न हुई हो। हरएक एक दूसरे से पूछता था—क्यों, लड़ाई किसके खिलाफ है? और यह किसी को भी मालूम नहीं था। सार्सानेरा के शराबखाने के बाहर बैठा हुआ जनरल बाल्डीसेरा अपने पास इस विषय की जानकारी हासिल करने आनेवालों को शान्ति-पूर्वक उत्तर देता था।

वह कहता—मुझे यह बिलकुल नहीं मालूम कि हम किसके खिलाफ लड़ रहे हैं। जो गश्ती चिट्ठी मेरे पास आई, उसमें इसके बारे में कुछ नहीं लिखा है। उसमें केवल इतना है कि तुम्हें अपने परवाने की फीस देनी पड़ेगी।

अधिकांश किसान कहते—'देना, देना, देना; हर बार बस पैसा देना।'

इन्नॉसेञ्जो ला-लेग्गी के अप्रत्याशित आगमन ने सबकी घबराहट और भी बढ़ा दी।

कोई बहुत गम्भीर कारण ही इन्नॉसेञ्जो को फाण्टामारा लाया होगा। जान जाने के खतरे ने ही उसे इतने महीने तक आने से रोक रखा था। वह स्वेच्छा से तो कदापि नहीं आया था। जब वह सार्सानेरा की सराय के सामने आया तो बेहद डर गया, क्योंकि किसानों ने लपककर उसे घेर लिया। उसका चेहरा डर के मारे मुर्दे की तरह सफेद पड़ गया। सार्सानेरा ने यदि उसे ठीक समय पर बैठने को चौकी न दे दी होती तो वह गिर ही पड़ता।

वह एक दबी हुई धीमी आवाज में बोला—मुझे माफ करो, मुझे माफ करो। ना, डरो मत, ना, डरो मत; डरने की कोई बात नहीं है, नहीं है न? तुम मुझसे नहीं डरते, नहीं डरते न?...

'अच्छा, तुम आये किसलिए हो ?' बेरार्डो की आवाज अधिक उत्साहप्रद नहीं थी।

'बहुत अच्छा। सीधा विषय पर ही आता हूँ। इसका करों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। सभी पवित्र वस्तुओं की सौगन्ध यदि करों से इसका कुछ भी सम्बन्ध हो तो। करों से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं; यदि करों से इसका कुछ भी सम्बन्ध हो तो, परमात्मा करे मैं अन्धा हो जाऊँ।'

कुछ क्षणों तक शान्ति रही। इन्नॉसेन्जो अन्धा नहीं हुआ।

'आगे बोलो!' बेरार्डो ने कहा।

'अच्छा, देखो, तुम्हें याद होगा कि एक रात यहाँ एक फौजी अफसर आया था। माननीय पेलिनो उसका नाम था, था न ? तुम्हें याद है ? बहुत ठीक। अच्छा, तो माननीय पेलिनो ने अधिकारियों को वर्तमान सरकार और गिर्जा के खिलाफ कुछ भाषणों की, जो उसकी उपस्थिति में यहाँ दिये गये थे, हूबहू रिपोर्ट करते हुए शिकायत की कि फाण्टामारा वर्तमान सरकार के विरोधियों का खदान है। डरो मत, इसमें कुछ नुकसान नहीं है; डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अवश्य ही उसने तुम्हारे कहने का मतलब ठीक तौर पर नहीं समझा होगा। परन्तु अधिकारियों ने फाण्टामारा के सम्बन्ध में कुछ कार्रवाई करनी निश्चित की है। कोई कड़ी कार्रवाई नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि उसमें तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं होगा। सब निरर्थक बातें हैं, ऐसी निरर्थक बातें जिन्हें शहर में काफी महत्त्व दिया जाता है और समझदार किसान जिनकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देते...'

अधिकारियों ने फाण्टामारा के सम्बन्ध में जो कार्रवाइयाँ की थीं, उन सबके बारे में इन्नॉसेन्जो को कुछ भी मालूम नहीं था। वह खाली जिले का हरकारा था और उसे सिर्फ पञ्चायत के निर्णय के बारे में ही मालूम था, और वह निर्णय उससे सम्बन्धित लोगों तक पहुँचा देना उसका काम था।

इसके सिवा न तो वह कुछ जानता था, और न कुछ जानना ही चाहता था। पञ्चायत का पहला निर्णय जो उसे सुनाना था, वह कर्फ्यू—बन्दी हुकम—के बारे में था, जिसके अनुसार फाण्टामारा में कोई भी 'साँझ-आरती' के एक घण्टे बाद से लगाकर सुबह होने तक घर से बाहर नहीं निकल सकता था।

'और हमें हमारी मजदूरी तो उसी तरह मिलती रहेगी, क्यों ?' बेराडों ने पूछा।

उसने जवाब दिया—तुम्हारी मजदूरी का भला इससे क्या सम्बन्ध है ?

'क्या सम्बन्ध है ? क्यों, यदि हम सवेरा होने से पहले घर से बाहर न निकलें तो फ्युचिनो पर, जहाँ हम काम करते हैं, दोपहर के बाद तक नहीं पहुँच सकेंगे। यदि हमें कुछ घण्टों की मेहनत के लिए भी उतनी मजदूरी मिलनेवाली हो, जितनी पहले मिलती थी तो कर्फ्यू जिन्दाबाद।'

'और यदि हम घरों से बाहर नहीं निकल सकेंगे तो रात में हमारे खेतों की सिंचाई कैसे क्या होगी ?'

इन्नॉसेञ्जो ला-लेग्गी क्षणभर के लिए निरुत्तर हो गया।

'तुम बराबर नहीं समझे।' वह बोला—या, यदि तुम बुरा नहीं मानो तो मैं कहूँगा कि मुझे तंग करने के इरादे से तुमने न समझने का बहाना किया है। यह कौन कहता है कि तुम अपना काम करने का ढंग बदल दो ? ठेकेदार आज-कल पॉडेस्टा है और तुम उसे अपना काम करने से नहीं रोक सकते और मैं जिले का हरकारा हूँ और न तुम मुझे अपना काम करने से रोक सकते हो। उच्चाधिकारियों की आपत्तियों और शिकायतों पर ठेकेदार ने तै किया है कि तुम्हें रात-भर घर के अन्दर रहना पड़ेगा। मेरा काम खाली इतना ही है कि उसका हुकम तुम्हें सुना दूँ। अब तुम्हें जो ठीक लगे, तुम करना।'

'और क़ानून ?' जनरल बाल्डीसेरा बिगड़ खड़ा हुआ। 'यदि इसी तरह चलता रहा तो क़ानून और व्यवस्था का क्या होगा ? मैं तुमसे पूछता हूँ कि क़ानून क़ानून है या नहीं ?'

'कृपा करके यह तो बताओ कि तुम रात में सोते कब हो ?'—इन्नॉसेन्ज़ो ने पूछा।

उस आधे अन्धे मोची ने जवाब दिया—अँधेरा होते ही।

'और सबेरे उठते कब हो ?'

'क़रीब दस बजे, क्योंकि काम ज्यादा नहीं है।'

इन्नॉसेन्ज़ो ने कहा—तो बहुत ठीक, क़ानून की बराबर पाबन्दी होती है या नहीं, इसकी निगरानी के लिए मैं तुम्हें नियुक्त करता हूँ।

सिवा बाल्डीसेरा के, जिसे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा, हम सब हँसने लगे। अँधेरा होने लग गया था, इसलिए वह अपने घर सोने चला गया। इस अनपेक्षित हँसी से इन्नॉसेन्ज़ो ने कुछ आत्मविश्वास प्राप्त किया और प्रसन्न भी हुआ। सिगरेट जलाकर वह जिस तरह से पीने लगा, वैसे हमने उसे पहले कभी नहीं देखा था। मुँह से धुँआँ छोड़ने की बजाय उसने नाक से, जैसे हम छोड़ते हैं वैसे एक साथ दोनों नथुनों से नहीं, लेकिन पहले एक और तब दूसरे नथुने से धुँआँ छोड़ा। हमारे प्रशंसा-मिश्रित विस्मय का फायदा उठाकर उसने फाण्टा-मारा के बारे में पॉडेस्टा का दूसरा हुक्म सुनाया। उस हुक्म के अनुसार गाँव के सभी सार्वजनिक स्थानों में निम्न सूचना लगाई जाने-वाली थी—

यहाँ राजनैतिक बहसें करने की मनाही है। —बहुक्म

इन्नॉसेन्ज़ो ने मेरीटा को, उसकी सराय ही फाण्टामारा का एक-मात्र सार्वजनिक स्थान होने से, पॉडेस्टा की एक लिखित आज्ञा दी जिसके अनुसार फाण्टामारा में आगे से होनेवाली सभी राजनैतिक बहसों के लिए वह जवाबदार समझी जायगी।

'लेकिन फाण्टामारा में कोई नहीं जानता कि राजनीति क्या है। कभी किसी ने मेरी सराय में राजनीति पर बातें नहीं कीं।' मारीनेरा का यह कहना सच था।

'तो माननीय पेलीनो यहाँ से इतने नाराज़ होकर क्यों गये ? तुमने किस विषय पर बातें की थीं ?'

सार्सानेरा ने कहा—अरे, हमने सभी विषयों की बातें की थीं। हमने कीमतों के बारे में, मजदूरी के बारे में, करों के बारे में और क़ानूनों के बारे में बातें की थीं। आज हम परवानों, लड़ाई और यात्रा के बारे में बातें कर रहे थे...

'पॉडेस्टा की आज्ञा से अब तुम इनमें से आगे एक के बारे में भी बातें मत करो। यह आज्ञा ख़ासतौर से फाण्टामारा ही के लिए नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण इटली में लागू होती है। सार्वजनिक स्थानों में कीमत, कर, मजदूरी और क़ानून के बारे में बहस करने की बिलकुल मनाही हो गई है।'

बेरार्डो बोला—क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि सब तरह की बहसें बन्द कर दी जायँ ?

'यही बात है बेरार्डो, तुम बिलकुल ठीक समझे, किसी भी चीज पर बहस न की जाय। पॉडेस्टा के हुक्म का यही अभिप्राय है। किसी तरह की कोई बहस नहीं।'

बेरार्डो की राय अपने साथ मिल जाने से इन्नॉसेञ्जो को बहुत बड़ा सन्तोष हुआ। उसने दीवाल पर लटकाई जानेवाली सूचना में सुधार कर उसे अधिक स्पष्ट करने का बेरार्डो का प्रस्ताव तत्परता से स्वीकार कर लिया। उसने एक सफ़ेद पुट्ठे पर खुद ही लिखा—

'पॉडेस्टा की आज्ञा से

सब तरह की बहसें करने की सख्त मनाही की जाती है।

बेरार्डो की देख-रेख में यह सूचना सेरिटा के शराबख़ाने के बाहर दीवाल पर ऊँची टाँग दी गई। इस काम में बेरार्डो के आज्ञा-पालन ने हमें चकित कर दिया। मानो अपने रुख को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए उसने कहा—

'इस हुक्म को तोड़नेवाला काफी सोच-समझकर ही ऐसा करे।'

इन्नॉसेञ्जो ने हाथ बढ़ाकर उसको गले लगाना चाहा, पर बेरार्डो के स्पष्टीकरण से उसका उत्साह बहुत कुछ ठण्डा पड़ गया।

बेराडो बोला—मैं हमेशा तुम्हें यही कहता था न ? लेकिन पॉडेस्टा के क़ानून बनाने से पहले तुम थोड़े ही सुननेवाले थे ?

'मालिकों से कभी बहस मत करो; हमेशा यह मेरा सिद्धान्त रहा है। बहस-मुबाहसा ही किसानों की विपत्ति का मूल कारण है। किसान एक गधा है, बहस करनेवाला गधा। यही कारण है कि हम सचमुच के गधों से, जो कभी बहस या उसका बहाना नहीं करते, कहीं बुरी दशा में हैं। तुम्हारा गधा पचीस, पचास या सौ सेर वजन ले जायगा, इससे ज्यादा नहीं; पर वह बहस नहीं करेगा। तुम्हारा गधा एक खास गति से चलेगा, उससे तेज़ नहीं; पर बहस नहीं करेगा। तुम्हारे गधे के लिए भूसे की एक तादाद निश्चित है, वह उतना ही लेगा; पर बहस नहीं करेगा। तुम गधे से गाय, बकरी या घोड़े का काम नहीं करवा सकते। कोई तर्क वह नहीं मानेगा, कोई बात वह नहीं सुनेगा। वह बिलकुल ही नहीं समझता या समझने का कोई बहाना नहीं करता। किसान, दूसरी ओर बहस करेगा। तुम समझा-बुझाकर उससे उसकी शक्ति से परे काम ले सकते हो। समझाकर तुम उसे भूखा रख सकते हो। समझाकर तुम उसे अपने स्वामी के लिए मरने को राजी कर सकते हो। समझाकर तुम उसे लड़ाई पर भेज सकते हो। तुम उसे यह विश्वास तक दिला सकते हो कि सचमुच नरक नाम की भी कोई जगह है। परिणाम देखो। ज़रा अपने चारों ओर इससे होनेवाले परिणाम तो देखो !'

बेरार्डो का कहना हमारे लिए कुछ नया नहीं था, परन्तु इन्नॉसेन्ज़ो ला-लेग्गी यह सुनकर डर गया।

वह कहता ही रहा—तुम्हारा गधा भूखा रहना बर्दाश्त नहीं करेगा। वह कहेगा; यदि मुझे खाना मिलता है, तो मैं काम करता हूँ; और यदि खाना नहीं मिलता है, तो काम नहीं करता हूँ। या ज़्यादा सही तौर पर वह ऐसा कुछ नहीं कहता है; क्योंकि वह बहस नहीं करता, लेकिन स्वभाव से वैसा ही करता है। ज़रा सोचो तो सही कि फ्युसिनो पर काम करनेवाले छः हज़ार किसान बहस करनेवाले गधों

की बजाय—दूसरे शब्दों में ऐसे गधों की बजाय जो पाले जा सकते हों, समझाये जा सकते हों, कड़ाबीनवाले सैनिकों, पादरियों और जजों द्वारा तंग किये जा सकते हों—बिना बहस करनेवाले सचमुच के गधे होते तो क्या होता? राजकुमार टोर्लोनिया को पेट भरने के लिए भीख माँगना पड़ती। मेरे प्यारे इन्नॉसेञ्ज़ो, तुम जिस सड़क से आये हो, वह कैसी अँधेरी है? और थोड़ी देर बाद उसी सड़क से तुम घर भी जाओगे। तुम्हें मार डालने से हमें कौन रोक सकता है? बोलो!

इन्नॉसेञ्ज़ो ने जवाब में कुछ कहने की कोशिश की, पर उसके मुँह से बोल नहीं निकली। वह मुर्दे की तरह पीला पड़ गया।

'गधे न होने से हम बहस करते हैं और खून से होनेवाला परिणाम जानते हैं, और यही हमें रोकता है। लेकिन इन्नॉसेञ्ज़ो, तुमने खुद अपने हाथ से लिखकर यह सूचना टाँगी है कि आज से पॉडेस्टा के हुक्म से सब तरह की बहसें बन्द की जाती हैं। तुमने खुद अपना गला काट लिया है...'

इन्नॉसेञ्ज़ो ने सप्रयास कहा—देखो, मेरी बात सुनो। तुम कहते हो कि तुम बहस करने के खिलाफ हो, लेकिन बुरा मत मानना; मुझे ऐसा दीखता है कि तुम बहुत ज्यादा बहस करते हो। तुम्हारी सभी बातें सिवा बहस के और कुछ नहीं हैं। मैंने इस तरह की गधेपन की बातें कभी नहीं सुनीं।

'अगर सब तरह की बहसें अधिकारियों और मालिकों के पक्ष में हों, तो पॉडेस्टा 'सब तरह' की बहसों की मनाही क्यों करता है?' मैंने बेराडों से पूछा।

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बेराडों बोला—

'अरे, हाँ, बहुत देर हो गई। फ्युसिनो जाने के लिए मुझे तीन बजे उठना है। अच्छा, राम-राम।'

और वह चलता बना।

बेराडों के साथ बातचीत करने का अन्त हमेशा इसी तरह होता

था। वह घण्टों उपदेशक की तरह बिना कोई जवाब सुने जो कुछ औंधा-सीधा उसके खोपड़े में आता, बोलता रहता था। जब उसका बोलना समाप्त हो जाता और कोई ऐसा सवाल पूछ बैठता, जिसका जवाब उससे नहीं बनता तो चुपचाप बिना जवाब दिये चल देता था।

उस रात फिर इन्नॉसेन्ज़ो ला-लेग्गी लौटकर शहर नहीं गया। शायद बेरार्डो के धमकानेवाले शब्दों की वजह से हो या एकाएक तबीयत खराब हो जाने से हो, उसने वह रात सॉर्सोनेरा के यहीं बिताई।

—चार—

जून के मध्य तक चारों ओर यह समाचार फैल गया कि मार्सिका के किसानों के प्रतिनिधि फ्युसिनो-समस्या पर रोम की नई सरकार का निर्णय सुनने के लिए अवेज़ानो बुलाये जायँगे।

इस समाचार से काफी सनसनी फैल गई, क्योंकि पहले की सरकारों में से किसी ने भी फ्युसिनो-समस्या को स्वीकार तक नहीं किया था; और चुनाव बन्द हो जाने के बाद से तो हमारे इधर के वकील तक इसके अस्तित्व को भूल गये थे, यद्यपि पहले वे इसके बारे में ख़ूब बातें किया करते थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोम में नई सरकार कायम हो गई थी, क्योंकि हमने बीच-बीच में इस विषय की बातें सुनी थीं। यह भी इस बात का एक प्रमाण था कि लड़ाई हो रही थी या होनेवाली थी; क्योंकि लड़ाई के द्वारा ही पुरानी सरकार बदलकर नई कायम की जाती है। हमारे यहाँ इसी तरह स्पैनिआर्ड्स को बोअरबॉन्स ने और पिड्माण्टेसी ने बोअरबॉन्स को बदला था। लेकिन फाण्टामारा में इतना भी कोई नहीं जानता था कि नई सरकार कहाँ से आई है और उसकी राष्ट्रीयता क्या है? सरकारें शहरों में होनेवाली घटनाएँ हैं।

जब कभी शासन बदलता है तब किसान केवल इतना ही कह

सकता है—'परमात्मा करे हमारे हक़ में यह सरकार अच्छी हो', ठीक उसी तरह जैसे कि गर्मियों में क्षितिज पर उठनेवाले बादलों का वर्षा या ओले-तूफान के अग्रदूत होना ग़रीब किसान की नहीं, ईश्वर की मर्जी पर निर्भर करता है।

जो हो, यह बहुत ही अनूठा था कि सरकारी प्रतिनिधि ग़रीब किसानों के साथ बिना किसी भेद-भाव के, बराबरी से, बातें करेगा।

जनरल बाल्डीसेरा कहता फिरता था—पुराना जमाना फिर आ रहा है। पुराने जमाने में आजकल की तरह महल और किसान की झोपड़ी के बीच छावनियों और छोटे-बड़े दफ़्तरों का घना जंगल नहीं था। साल में एक बार शासक ग़रीब आदमी की तरह वेष बदलकर मेलों में जाते और लोगों की तकलीफें सुनते थे। तब चुनाव आये और शासकों तथा किसानों के बीच एक दीवाल खड़ी हो गई। लेकिन अब फिर, यदि अफ़वाहें सच हैं, तो पुराना जमाना आ रहा है। पुराना जमाना, जिससे हम कभी बिलग न हुए होते...

माइकेल ज़ोम्पा को भी ऐसी ही आशा थी। वह कहता—

'चुनावों पर टिकी हुई सरकार का नियन्त्रण हमेशा अमीरों द्वारा होता है और वे अपने लाभ के लिए चुनावों का उपयोग करते हैं। एक आदमी का शासन—राजा—अमीरों को डरा सकता है। एक राजा और किसान के बीच ईर्ष्या या प्रतियोगिता हो ही कैसे सकती है? यह विचार ही हास्यास्पद है। लेकिन एक राजा और राजकुमार टोर्लोनिया का एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु होना बहुत आसान है।'

विरोध करने की बुरी आदत होते हुए भी बेरार्डो ने दूसरों की राय का इस आशा से विरोध नहीं किया कि फ्युसिनो की ज़मीन के पुनर्विभाजन में उसे भी शायद एक हिस्सा दे दिया जाय।

बेरार्डो तर्क करता था—सब सरकारें हमेशा चोरों की बनी होती हैं—चोर होती हैं। हाँ, किसानों के लिए पाँच सौ की अपेक्षा एक चोर ज़्यादा अच्छा है। एक बड़ा चोर, वह कितना ही ज़्यादा भूखा

क्यों न हो, पाँच सौ छोटे भुक्खड़ चोरों से कम ही खायेगा। यदि फ्युसिनो का बँटवारा फिर से होने जा रहा हो, तो फाण्टामारा अपने अधिकारों का उपयोग अवश्य करे।

एक दिन रविवार को सवेरे एक मोटर लारी फाण्टामारा आई, और ड्राइवर ने सब किसानों को जो अवेज़ानो जाना चाहते थे, सवार हो जाने के लिए कहा। किराया कुछ नहीं देना पड़ेगा। लॉरी तिरंगे झंडों से सजी हुई थी। वह अधिकारियों ने भेजी थी और हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भाड़ा कुछ नहीं देना पड़ेगा।

मौक़े से ही हम दस-बारह आदमी फाण्टामारा में रह गये थे। बाक़ी काम पर चले गये थे। जब काम ज़्यादा हो तो गिर्जा हमें सदा गर्मियों में रविवार को भी काम करने की इजाज़त दे देता है। लेकिन जून के अन्त में कटनी शुरू होती है, इसकी जानकारी न होने के लिए हममें से किसी ने नई सरकार को दोष नहीं दिया। शहर-वासियों की सरकार से यह जानने की उम्मीद ही कैसे की जा सकती थी कि वह कटनी का समय है? लेकिन जिस सभा में फ्युसिनो-समस्या तै होनेवाली थी, उसमें उपस्थित रहने के लिए हम खुशी-खुशी एक दिन का काम छोड़ने को तैयार थे।

हम फाण्टामारा-वासियों की हमेशा यह माँग थी कि हमें भी फ्युसिनो में ज़मीन के टुकड़े लगान से मिलने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन टोर्लोनिया-शासन इसे कभी मंजूर नहीं करता था और हमारे परिश्रम का शोषण करनेवाले डाक्टरों, वकीलों, प्रोफेसरों और मालदार खेत-मालिकों को ही प्रधानता देता था। लेकिन हमने फ्युसिनो में कुछ ज़मीन लगान से मिलने की आशा पूरी तरह से कभी नहीं छोड़ी थी। हमारी एक-मात्र आशा ज़मीन वापस मिल जाने की प्रतीक्षा करनी ही थी, जिसके बारे में डॉन सर्कोस्टांज़ा ने हमसे कई बार, खासकर चुनावों के समय, कहा था।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा का नारा था—'फ्युसिनो की ज़मीन उसे जोतनेवालों की।'

उसका कहना था कि फ्युसिनो राजकुमार टोर्लोनिया और अमीर खेत-मालिकों और वकीलों और दूसरे शौकीनों से लेकर उसपर खेती का काम करनेवाले किसानों को दे देना चाहिए। यह समाचार सुनकर कि फ्युसिनो का बँटवारा होनेवाला है, खासकर उस समय जब सरकार ने फाण्टामारा के किसानों के लिए सभा में शरीक होने को एक अलग लॉरी भेजी तो हम बहुत ही उत्तेजित दशा को पहुँच गये। हम थोड़े-से लोग, जो फाण्टामारा में रह गये थे, बिना कुछ पूछ-ताछ किये लॉरी में सवार हो गये। मेरे सिवा उसमें बेरार्डो वॉयला, एण्टोनियो ज़ापा, त्योफिलो देल्ला क्रोस, बाल्डोविनो स्यारपा, सिम्प्लीसियो, ग्यासोबी लोसुर्डो, पॉन्ज़ियो पिलाटो और उसका लड़का, एण्ड्रिया कैपोरेल और राफेल स्कामोर्ज़ा थे।

लेकिन रवाना होने से पहले ड्राइवर ने पूछा—तुम्हारी पताका कहाँ है?

'पताका कैसी?'

ड्राइवर ने कहा—मुझे ऐसी आज्ञा मिली है कि किसानों के हरएक झुण्ड के साथ पताका होनी चाहिए।

'लेकिन पताका क्या है?' हमने पूछा।

'पताका एक झण्डी है।' उसने जवाब दिया।

हमने नई सरकार पर खास कर इसलिए कि सम्मेलन में फ्युसिनो-समस्या तै की जानेवाली थी, कोई बुरा असर डालना ठीक नहीं समझा। त्योफिलो ने, जिसके पास गिर्जाघर की चाभियाँ रहा करती थीं, सुझाया कि हम अपने साथ सैनरोक्को का झण्डा ले चलें, और हम राजी हो गये। इसलिए वह और राफेल स्कामोर्ज़ा उसे लेने गिर्जाघर गये। लेकिन ड्राइवर ने एक सन्त और उसका घाव चाटते हुए कुत्ते की तस्वीरवाला सफेद-नीला बड़ा-सा पन्द्रह गज लम्बा झण्डा देखा, जिसे लेकर आने में भी उन दोनों को बड़ी तकलीफ हो रही थी, तो लॉरी में ले चलने से इन्कार कर दिया। लेकिन फाण्टामारा में अकेला वही एक झण्डा था, और बेरार्डो उसे नहीं ले चलने की

दशा में लारी में से उतर पड़ा। इसलिए अन्त में ड्राइवर हारकर वह झण्डा साथ ले चलने को राज़ी हो गया।

झण्डे को सँभाले रखना खासी मेहनत थी। जब लॉरी चल रही थी तो हममें से तीन बारी-बारी से झण्डे के बल्ले को सीधा पकड़ रखते थे। तूफान में जहाज के मस्तूल की तरह हमारा झण्डा ख़ूब डगमगा रहा था। वह दूर-दूर से देखा जा सकता था। हमें देखकर खेतों में काम करनेवाले किसान आश्चर्य प्रकट करते थे। स्त्रियाँ घुटनों के बल बैठ जातीं और क्रॉस बनाती थीं।

अवेज़ानो के रास्ते पर जब पहला गाँव पड़ा तो ड्राइवर ने हमसे कहा—भजन गाओ।

'कैसे भजन ?'

'मुझे हुक्म मिला है कि प्रत्येक बस्ती से गुजरते हुए किसान भजन गायें और ख़ूब उत्साह प्रदर्शित करें।'

लेकिन हमें एक भी भजन याद नहीं था और हम सैनरोको का झण्डा सीधा रखने में ही काफी व्यस्त थे।

सड़क पर हमें किसानों से भरी दूसरी लारियाँ, गाड़ियाँ, मोटरें, मोटर साइकलें और बाइसिकलें मिलीं, जो सभी अवेज़ानो की ओर जा रही थीं। हमारे विशाल सफेद-नीले झण्डे को देखकर लोग पहले तो आश्चर्य करते और फिर खूब जोर-जोर से ठहाके लगाते थे। दूसरों के पास झण्डियाँ काले रंग की और जेबी रूमाल से ज्यादा बड़ी नहीं थीं। उनके बीच में एक दूसरे को काटती हुई दो हड्डियाँ और खोपड़ी बनी हुई थीं, ठीक जैसी तार के खम्भों पर (हिन्दुस्तान में स्पिरिट की बोतलों पर) 'ख़तरा' शब्द के साथ बनी हुई होती हैं।

अवेज़ानो में घुसते समय झण्डे को लेकर छीना-झपटी हो गई। काली कुर्तियोंवाले जवानों का एक झुण्ड बीच सड़क में खड़ा हमारी राह देख रहा था। उन्होंने तत्परता से हमें झण्डा देने के लिए कहा। हमने इन्कार कर दिया, क्योंकि हमारे पास वही एक झण्डा था। जवानों ने ड्राइवर को लॉरी रोकने का हुक्म दिया और तब जबर्दस्ती

झण्डा छीनने की कोशिश करने लगे। लेकिन रास्ते में लोगों के चिढ़ाने से बहुत ही खीझे हुए होने के कारण हम भी पूरी ताकत से अड़ गये और कई काली कुर्तीवालों को सड़क की धूल में अच्छी तरह लोट-पोट कर दिया।

चिल्लाते हुए लोगों के एक उत्तेजित समूह ने लॉरी को चारों ओर से घेर लिया। उनमें बहुत-से काली कुर्तीवाले जवान थे; लेकिन दूसरे बहुत-से फाण्टामारा के आसपास के गाँवों के किसान भी थे। उन किसानों ने हमें पहचान लिया था और जोर-जोर से चिल्लाकर हमारा अभिनन्दन करने लगे थे। और अधिक अपमान न सहने का दृढ़ निश्चय किये हम लॉरी में झण्डे के चारों ओर जहाँ-के-तहाँ चुपचाप खड़े थे। एकाएक काँपता और पसीने-पसीने होता हुआ डॉन अबाक्च्यो का मोटा शरीर थोड़े-से कड़ाबीनवाले सैनिक-अफसरों के साथ हमारी ओर आता दिखाई दिया। हममें से सभी का यह विश्वास था कि वह और एक पुरोहित अवश्य ही सैनरोक्को के रक्षणार्थ आया होगा। लेकिन उसने बिलकुल ही उलटा किया।

'क्या यह भी कोई उत्सव है?' वह हम पर बिगड़ा। 'क्या सरकार और गिर्जा—चर्च—से समझौता करने का तुम्हारा यही तरीका है? तुम फाण्टामारा-वासी कब तक अपने विद्रोहात्मक तरीक़ों से चलते रहोगे?'

बिना दूसरा शब्द कहे हमने काली कुर्तीवाले जवानों को अपना झण्डा ले लेने दिया। अगर एक पुरोहित सैनरोक्को की परवाह नहीं कर रहा था तो हम हमारे फ्युसिनो-सम्बन्धी समझौते को खतरे में डालकर उसके प्रति वफ़ादार क्यों रहते?

हम अवेज़ानो के बड़े बाजार के चौराहे में ट्रिब्यून* महल के पीछे छाया में एक अच्छी जगह ले जाये गये। किसानों के दूसरे झुण्ड चौराहे के चारों तरफ विभिन्न इमारतों की दीवालों के सहारे

* ट्रिब्यून—प्राचीन काल का एक रोमन जन-प्रतिनिधि जो हमारे यहाँ के मैजिस्ट्रेट की हैसियत का होता था।

कतारों में खड़े थे। किसानों के प्रत्येक समूह के बीच कड़ाबीनवाले सैनिकों के दस्ते खड़े थे। साइकिल-सवार सिपाही चौक में चारों ओर आ-जा रहे थे। जैसे ही कोई नई लॉरी आती, सिपाही किसानों को उतारकर चौक में ऐसी जगह ले जाते, जहाँ वे किसानों के दूसरे झुण्डों से अलग खड़े कर दिये जाते थे।

खूबसूरत काले घोड़े पर सवार एक कड़ाबीनवाला सैनिक अफ़सर चौराहे में होकर निकला।

उसके ठीक बाद ही एक सइकिल-सवार सिपाही सब दस्तों के पास कोई हुक्म ले गया। हरएक दस्ते में से एक एक सिपाही किसानों के एक-एक झुण्ड में गया और उन्हें बैठ जाने का हुक्म दिया।

हम जमीन पर बैठ गये। कोई एक घण्टे तक बैठे रहे होंगे। एक घण्टे बाद दूसरे हुक्म ने बहुत ही खलबली मचा दी। चौक के कोने में बड़े अफ़सरों का एक झुण्ड दिखाई दिया। सिपाहियों ने हमें हुक्म दिया—

'उठो! एकदम खड़े हो जाओ। जोर से चिल्लाओ--पॉडेस्टा जिन्दाबाद! ईमानदार सरकार जिन्दाबाद! जो ग़रीबों को नहीं लूटती ऐसी सरकार जिन्दाबाद!'

हम खड़े हो गये और गला फाड़कर चिल्लाये—पॉडेस्टा जिन्दा-बाद! ईमानदार सरकार जिन्दाबाद! जो गरीबों को नहीं लूटती ऐसी सरकार जिन्दाबाद!

'ग़रीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार' के सदस्यों में से हम खाली ठेकेदार को ही पहिचानते थे। जैसे ही 'ग़रीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार' के सदस्य निकल गये, हम सिपाहियों की अनुमति से फिर बैठ गये।

कुछ मिनटों बाद दूसरे हुक्म ने और भी ज्यादा हलचल मचाई। सिपाहियों ने हुक्म दिया—उठो! उठ खड़े हो और जोर से बोलो—प्रिफेक्ट जिन्दाबाद! (प्रिफेक्ट एक रोमन सरकारी अफसर—गवर्नर है।)

हम उठ खड़े हुए और ज़ोर से चिल्लाये—प्रिफेक्ट ज़िन्दाबाद।

जब प्रिफेक्ट की बढ़िया मोटर निकल गई तो हम सिपाहियों के हुक्म से फिर बैठ गये।

लेकिन हम बैठे ही थे कि सिपाहियों ने हमें फिर खड़े होने के लिए कहा।

उन्होंने हुक्म दिया—ज़ोर से, जितनी ज़ोर से हो सके चिल्लाओ—श्रीमान् सचिव महोदय की जय।

जब हम ज़ोर से, जितनी ज़ोर से हो सका चिल्लाये—'श्रीमान् सचिव महोदय की जय! श्रीमान् सचिव महोदय ज़िन्दाबाद!' तब एक बड़ी-सी मोटर और उसके पीछे बाइसिकिलों पर सवार चार आदमी बिजली की तरह निकल गये।

तब हम सिपाहियों की आज्ञा से फिर बैठ गये। ड्यूटीवालों को जलपान की छुट्टी हो गई। हमने भी अपनी झोलियाँ खोलीं और अपने साथ लाई हुई रोटियाँ खाने लगे।

दो बजे फिर से वैसा ही अभिनय शुरू हुआ। पहले सचिव, उसके बाद प्रिफेक्ट और फिर ग़रीबों को लूटनेवाली सरकार के सदस्य निकले। हर बार खड़े होकर ख़ूब उत्साह प्रदर्शित करने के लिए हम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाये।

अन्त में सिपाहियों ने हमसे कहा—

'अब तुम्हें छुट्टी है। तुम जा सकते हो।'

सिपाहियों ने हमसे फिर कहा—

'सब काम ख़त्म हो गया है। अब तुम जा सकते हो या एक चक्कर अवेज़ानो में घूम लो। तुम्हें एक घण्टे का समय दिया जाता है। एक घण्टे के अन्दर तुम्हें यहाँ से चले ही जाना चाहिए।'

'सचिव की बात और फ्युसिनो-समस्या का क्या हुआ?' लेकिन किसी ने हमारी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया।

जो कुछ हुआ था, उसे मालूम किये बिना हम घर लौट जाने को तैयार नहीं थे।

बेरार्डो ने जो अवेज़ानो के रास्तों से परिचित था, कहा—मेरे साथ चलो।

वह हमें झण्डियों से सजे हुए एक महल के फाटक पर ले गया।

फाटक पर खड़े सन्तरी से उसने कहा—हम सचिव से बात करना चाहते हैं।

सन्तरी उस पर इस तरह टूट पड़ा मानो उसने कोई बहुत ही अपमानजनक बात कही हो और उसे फाटक के अन्दर खींचने का प्रयत्न करने लगा। हमने उसे पकड़ लिया और उसे लेकर दोनों में ज़रा-सी खींचातानी हो गई। बहुत-से लोग महल के अन्दर से बाहर दौड़ आये, जिनमें डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा भी था, वह .खूब शराब पिये था और उसका कॉन्सर्टिना पतलून तीसरी अवस्था पर था।

'मेरे फाण्टामारा-वासियों का कोई निरादर न करे। उनके साथ अच्छी तरह से पेश आओ!' उसकी यह आवाज़ सुनकर सन्तरी ने हमें छोड़ दिया। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा हमारे पास आया और हममें से प्रत्येक को गले लगाना और चूमना चाहा।

हमने 'जन-मित्र' से कहा कि हम सचिव से बात करना चाहते हैं।

उसने जवाब दिया—सचिव तो चले गये।

बेरार्डो ने कहा—हम जानना चाहते हैं कि फ्युसिनो-सवाल कैसे तै हुआ।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने एक सन्तरी को हमें राजकुमार टोर्लोनिया के दफ्तरों मे ले जाने के लिए कहा, जहाँ एक अफ़सर ने हमें फ्युसिनो के बारे में जो कुछ तै हुआ था, बतलाया।

बेरार्डो ने पूछा—तो नई सरकार ने फ्युसिनो का प्रश्न तै कर दिया?

'हाँ, फ्युसिनो-समस्या सभी सम्बन्धित लोगों के सन्तोषानुसार तै कर दी गई है।'

'हम चर्चा में भाग लेने के लिए क्यों नहीं बुलाये गये? हम बाहर चौक में ही क्यों खड़े रखे गये?' पॉञ्ज़ियो पिलाटो ने कहा।

अफ़सर ने जवाब दिया—सचिव का दस हजार किसानों से चर्चा करना सम्भव नहीं था। परन्तु उन्होंने तुम्हारे प्रतिनिधि से चर्चा कर ली थी।

'हमारा प्रतिनिधि कौन था ?'

'माननीय कमान पेलिनो।'

'जमीन का बँटवारा कैसे किया गया ? फाण्टामारा के किसानों को कितनी जमीन दी जायगी ? बँटवारा कब हो रहा है ?' बेरार्डो ने पूछा।

अफ़सर ने जवाब दिया—बँटवारा नहीं होगा। सचिव और किसानों के प्रतिनिधियों ने तै किया है कि छोटे-छोटे खेत-मालिकों को तोड़ दिया जाय। उनमें से कइयों को फौजी सेवा के उपलक्ष्य में जमीनें दी गई थीं, परन्तु फौजी सेवा कोई सच्ची आर्थिक कसौटी नहीं है...

'बिलकुल ठीक है।' बेरार्डो ने कहा—लड़ाई पर जाने से यह साबित नहीं होता कि वे खेती का काम जानते हैं। खास बात है खेती का काम जानना। फ्युसिनो उसे जोतनेवालों का है। डॉन सर्कोस्टाञ्जा का यही सिद्धान्त था।'

'सचिव ने इस सिद्धान्त को मंजूर किया है। फ्युसिनो जोतनेवाले लोगों को दे दिया जाय। फ्युसिनो उन लोगों को दिया जाय, जिनके पास खेती करने या खेती करवाने के साधन हों। दूसरे शब्दों में फ्युसिनो उन लोगों को जिनके पास काफी पूँजी है। फ्युसिनो निकम्मे छोटे-छोटे खेत-मालिकों से लेकर बड़े-बड़े अमीर किसानों को दे दिया जाय। फ्युसिनो की जमीन जिनके पास बड़े आर्थिक साधन न हों, उन्हें लगान पर नहीं मिल सकती।'

'हमारे प्रतिनिधि ने क्या कहा ?'

'माननीय पेलिनो ने किसानों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि राष्ट्रीय उपज के हक़ में किसान फ्युसिनो में लगान पर मिलनेवाली जमीन के बँटवारे से अलग कर दिये जाने चाहिए। इसे कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने प्रस्ताव रखा कि बड़े पट्टीदारों का लगान बीस

प्रतिशत कम और छोटे पट्टीदारों का लगान बीस प्रतिशत बढ़ा दिया जाय। लगान अनाज में, खासकर मीठे चुक़न्दर में, चुकाया जाय जिसकी क़ीमत राजकुमार टोर्लोनिया का शासन-प्रबन्ध ठहरायेगा। छोटे खेतिहरों को जो चुक़न्दर नहीं बोते, प्रति हैक्टर सात सौ लीरा देना पड़ेगा। तुम्हारे प्रतिनिधि के प्रस्ताव सम्पूर्णतया स्वीकृत हो गये। अवेज़ानो में एकत्र होनेवाले फ्युसिनो तलहटी के किसानों ने सचिव, प्रिफेक्ट और अन्य अधिकारियों का शानदार स्वागत करके इस विषय में अपना सन्तोष व्यक्त किया है। क्या तुम इस बारे में और कुछ जानना चाहते हो ?'

हमने कहा—नहीं, इतना बिलकुल स्पष्ट है।

और इतना बिलकुल ही स्पष्ट था।

सड़कों पर इतनी अधिक रोशनियाँ की गई थीं कि काफी रात हो जाने पर भी उनकी वजह से दिन की तरह उजेला हो रहा था। (सब कुछ बिलकुल ही स्पष्ट था।)

अवेज़ानो का दृश्य अजीब दुःखप्रद था, जैसे सब लोग पागल ही हो गये हों। मैंने लोगों को होटलों और आमोद गृहों में आनन्द मनाते देखा; वे नाच रहे थे और बेसिर-पैर की मूर्खतापूर्ण बातें बक रहे थे। और मुझे अपने मन को यह निश्चय कराने के लिए कि जो घटनाएँ हुई हैं वे सच थीं, काफी प्रयत्न करना पड़ा। मैं अपने आप से पूछ रहा था—क्या वह सब कुछ मजाक था, या वे लोग अनजाने ही पगला गये थे ?

बेरार्डो बोला—निर्लज्जतापूर्वक यह फैसला किसानों के सिर पटककर शहराती मजा उड़ा रहे हैं, वे सुखी हैं, वे खा-पी रहे हैं...

गन्दे हाव-भावों के साथ गाते हुए शराबी युवकों का एक झुण्ड हमारे सामने से निकल गया।

गाना यह था—

तेरे और मेरे बाल
क्या खूब जंगल बनायेंगे...

उनके पीछे-पीछे दूसरा झुण्ड आया, जिसमें काली कुर्तीवाले वे जवान थे, जिन्होंने सबेरे अवेज़ानो आने पर हमारे पास से सैनरोक्को का झण्डा जब्त कर लिया था। हमें पहिचानते ही वे चिल्लाने लगे—'ओ हो, हो हो, सैनरोक्का !' और साथ ही निर्लज्ज बातों की एक बौछार ! तब वे हमें घेरकर एक-दूसरे का हाथ पकड़े गोल-गोल नाचने लगे। वे अश्लील भंगिमाओं के साथ प्रेम का स्वांग (भाँड़ों की तरह हँसोड़) करते हुए यह गीत भी गाते जाते थे ;

तेरे और मेरे पाँव
क्या ख़ूब महराब बनायेंगे...

हमने उन्हें कोई बाधा नहीं दी। कुछ और करने की हममें शक्ति ही नहीं रही थी। समझने के प्रयत्न को हम बहुत पहले ही तिलांजलि दे चुके थे। शहरवासियों के बीच, हम दूसरी ही दुनिया में थे।

युवक हमें वहीं छोड़कर चले गये। वे एक नृत्य-गीत 'डॉलथेरेसा' 'हिम टु गैरीबाल्डो' की लय में गाते हुए चले गये।

इसके बाद ढंगदार कपड़े पहिने, लाल बाल और लाल मूँछों और ठुड्डी पर घाव के निशानवाला एक भद्र-पुरुष, जो कुछ समय से हमारा पीछा कर रहा था, हमारे पास आया।

'तुम फाण्टामारा के हो ?' उसने हमसे पूछा।

हमने कोई जवाब नहीं दिया।

'क्या तुम यह जानते हो कि अधिकारी तुमसे डरते हैं ? अधिकारी यह जानते हैं कि तुम नई सरकार के खिलाफ हो।' वह बोलता रहा।

हम चुप ही रहे।

'तुम्हारा ऐसा करना बिलकुल ठीक है। नई सरकार का विरोध करना बिलकुल बराबर है। इस तरह से काम नहीं चल सकता। आओ, हम अधिक शान्ति से इस पर बातें करें।'

भद्र-पुरुष एक गली में मुड़ गया। हम उसके पीछे हो लिये। हमारे पीछे एक जवान आदमी आ रहा था, जो देखने से विद्यार्थी और कामगार के बीच की श्रेणी का जँचता था। वह हमारी ओर कई

बार इस तरह मुस्कराया मानो हमसे कुछ कहना चाहता हो। लाल बालोंवाला भद्र-पुरुष हमें एक एकाकी व खाली आमोद-गृह में ले गया। वह जवान आदमी भी पीछे-पीछे वहाँ तक आया। क्षण-भर हिचकिचाया और तब अन्दर आकर हमसे थोड़ी ही दूर एक मेज़ के सामने बैठ गया।

'इस तरह से नहीं चल सकता। किसानों में असन्तोष चरमसीमा को पहुँच गया है। लेकिन तुम अपढ़ हो। नेतृत्व करने के लिए किसी पढ़े-लिखे की तुम्हें आवश्यकता है। डान सर्कोंस्टान्ज़ा ने तुम्हारे बारे में बड़ी सहानुभूति से मुझसे कहा था। वह तुम्हारा भला चाहता है, लेकिन उसे अपना आगा-पीछा देखना पड़ता है और उसे अपनी मर्यादा के बाहर कदापि नहीं जाना चाहिए। यदि तुम्हें मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो तो मैं हाजिर हूँ। यदि तुम्हारी कोई योजनाएँ हों तो मेरी सलाह ले सकते हो। मेरा मतलब समझे न?'

उस अपरिचित भद्र-पुरुष का व्यवहार और जिस ढंग से उसने अपने-आपको हमारी सेवाओं में हाजिर किया था, किसी को भी जो हमारी जैसी मानसिक दशा में न होता, शंकास्पद लगता। पहली बार ही एक शहराती हमारे साथ इतने विश्वासोत्पादक ढंग से बोल रहा था।

हम कुछ नहीं बोले।

'मैं तुम्हारे मन की बात समझता हूँ। तुम्हारे मन की बात समझाने के लिए तुम्हारी आँखें काफी हैं। सिपाहियों ने तुम्हें एक घण्टे में अवेज़ानो से चले जाने के लिए कहा था, लेकिन तुम अभी तक यहीं हो। मैं तुम्हारा मतलब समझता हूँ। तुम अधिकारियों के विरुद्ध कुछ करना चाहते हो। यह बिलकुल साफ है, इतना साफ कि तुम इससे इन्कार नहीं कर सकते। और मैं यहाँ क्यों हूँ? क्यों, तुम्हारी सहायता करने, तुम्हें सलाह देने, अपने आपको तुम्हारे साथ बलिदान करने। आया तुम्हारी समझ में?'

हम कुछ भी नहीं समझे थे। पॉन्ज़ियो पिलाटो कुछ कहने ही जा रहा था कि बेरार्डो ने कुहनी के ठोसे से उसे चुप कर दिया।

'बहुत ठीक। मैं खुद भी सरकार का दुश्मन हूँ। शायद तुम हथियार चाहते हो; हाँ, तुम अधिकारियों पर चोट करना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे पास साधनों की कमी है, तुम्हारे पास हथियार नहीं हैं। लेकिन मैं कहता हूँ कि हथियार पाना मुश्किल नहीं, बहुत आसान है, दरअसल बहुत ही आसान, दुनिया में इससे अधिक और कुछ आसान नहीं होगा।'

हम अभी तक एक भी शब्द नहीं बोले थे, लेकिन वह आदमी सवाल पूछता और खुद ही उनका जवाब भी देता जाता था।

'तुम मुझे कह सकते हो कि यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है, पर कहना एक बात है और करना दूसरी। बिलकुल ठीक, मेरी परीक्षा कर लो। यहाँ पन्द्रह मिनट तक मेरी राह देखो और मैं तुम्हें जो तुम चाहते हो ला दूँगा, और इससे अधिक क्या? मैं तुम्हें उसको काम में लेना भी बता दूँगा। क्या तुम अब भी मुझ पर सन्देह करते हो? क्या तुम्हें अब भी मुझ पर विश्वास नहीं होता? बहुत अच्छा, यहीं मेरी राह देखना।'

वह उठ खड़ा हुआ, हमसे हाथ मिलाया, आर्डर दी हुई शराब के दाम चुकाये और बाहर चला गया।

उसके जाते ही हमारे पास की मेज पर बैठा हुआ वह युवक हमारे पास आया और कहने लगा—

'वह सरकारी जासूस था, लोगों को उकसानेवाला एजेण्ट! होशियार हो जाओ। वह तुम्हें एक बम ला देगा और तब गिरफ्तार करवा देगा। उसके आने से पहले ही चले जाओ।'

हम खेतों के रास्ते अवेजानो से बड़ी सड़क की ओर रवाना हुए, ताकि कहीं उकसानेवाले एजेण्ट से सामना न हो जाय।

भूखे, प्यासे और कटुता से भरे हम उस सड़क पर अपने पाँव घसीटने लगे, जिस पर होकर आशा से भरे और सैनरोक्को का झण्डा हवा में फहराते हुए सवेरे अवेज़ानो आये थे।

लगभग आधीरात बीते हम फाण्टामारा पहुँचे। तीन बजे हम

फिर सड़क पर फ्युसिनो की ओर आ रहे थे, क्योंकि कटाई शुरू हो गई थी।

—पाँच—

ठेकेदार ने चरागाह के जिस टुकड़े पर अधिकार जमा लिया था, पंचायत ने उसके चारों ओर लकड़ी का एक बाड़ा बनवा दिया था।

बाड़ा सदा के लिए किसानों की शिकायत और बड़बड़ाहट मिटाने के इरादे से बनाया गया था। किसानों को युगों से सार्वजनिक सम्पत्ति रही आनेवाली जमीन पर किसी के निजी कब्जा कर लेने के बारे में अभी भी कुछ सन्देह था और बाड़े के बावजूद भी वे बड़बड़ाते रहते थे।

एक दिन बाड़ा जला दिया गया।

ठेकेदार ने सार्वजनिक खर्चे से दूसरा बाड़ा बनवाकर उसकी देख-भाल के लिए दो चौकीदार रख दिये।

लेकिन, क्या दो चौकीदार जमीन के उस टुकड़े को, जिसने सृष्टि के आरम्भ से गड़रियों के झगड़े, लुटेरे, भेड़िये और सब तरह के युद्ध और हमले देखे हों, जबर्दस्ती रोक सकते थे? वे नहीं रोक सकते थे।

चौकीदारों की ठीक नाक के नीचे बाड़ा जल उठा; उन्होंने साफ़-साफ जमीन में से अंगारे और लपटें निकलती देखीं, जिनसे कुछ ही मिनटों में सारा बाड़ा जलकर खाक हो गया। दोनों चौकीदारों ने, जैसा कि हर एक चमत्कार में अपरिहार्य है, यह सारा क़िस्सा डॉन अवाक्च्यो को और तब बाक़ी लोगों को सुनाया। डॉन अवाक्च्यो कई पुरानी पुस्तकें उलटने-पलटने के बाद इस निर्णय पर पहुँचा कि आग अवश्य ही अति-मानुषी थी, इसलिए प्रेत द्वारा लगाई हुई होनी चाहिए। यह सुनकर हमें निश्चय हो गया कि प्रेत इतना बुरा नहीं है, जितना वह बतलाया जाता है। ठेकेदार प्रेत को तो गिरफ्तार कर नहीं सकता था, इसलिए उसने बदले में दोनों चौकीदारों को जेल में डलवा दिया।

इसमें कौन बढ़कर रहेगा, प्रेत या ठेकेदार ? हम सभी ठेकेदार के खिलाफ थे, परन्तु अकेला बेरार्डो वॉयला ही प्रेत का खुल्लम-खुल्ला पक्षपाती था।

एक साँझ झुटपुटे (गोधूलि) के समय गिर्जाघर के सामने छोटे चौक के घाटीवाले हिस्से की ओर, छत के कटहरे के समान बनी हुई छोटी दीवाल पर हम फाण्टामारा की कुछ औरतें फ्युसिनो से अपने आदमियों के लौट आने की प्रतीक्षा में नित्य की तरह बैठी हुई इसी बारे में बातें कर रही थीं। वहाँ मैं थी, मेरिया ग्रेज्या और सियामा-रुगा, फ़िलोमेना और कास्टाना, और रेक्स्युटा और कानारोजो की लड़की थी। हम फ्युसिनो की ओर, जहाँ कभी से अँधेरा हो गया था, देख रही थीं। फाण्टामारा के नीचे, प्रधान सड़क की धूलवाली लकीर से दो भागों में बँटा हुआ मैदान जन-शून्य और स्तब्ध था। मैदान से ऊपर फाण्टामारा तक पहाड़ी का चक्कर लगाकर आनेवाली छोटी सड़क भी सुनसान थी।

हम जानती थीं कि हमारे आदमी देर से आनेवाले हैं, क्योंकि फ्युसिनो में कटाई के समय वे ज़्यादा देर तक काम करते थे। एका-एक सन्नाटे में से—हमने ध्यान नहीं दिया कि वह ठीक कब शुरू हुई थी—हमने एक-सी तालबद्ध भिनभिनाहट सुनी जो शुरू में मधु-मक्खियों की और धीरे-धीरे बढ़कर नाज पीटने की मशीन की आवाज़-सी मालूम पड़ी। आवाज़ मैदान से आ रही थी। लेकिन हमें उसका कुछ कारण समझ में नहीं आया। हमें नाज़ पीटने की कोई मशीन भी नहीं दिखाई दी। और फिर नाज पीटने की मशीनें जब कटाई खतम होने लगती है, तभी प्रधान सड़क के आस-पास आती हैं।

आवाज़ निरन्तर तेज़ होती जा रही थी।

ठीक उसी समय हमने घाटी से फाण्टामारा को ऊपर आनेवाली सड़क के पहले मोड़ पर लोगों से भरी हुई एक लॉरी आती देखी। उसके पीछे ही दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं लॉरी थी।

पाँच लॉरियाँ फाण्टामारा की ओर आ रही थीं। लेकिन उनके

पीछे-ही-पीछे—दूसरी और बहुत-सी थीं। और तब इतनी लॉरियाँ आती दिखाई दीं, जो किसी से गिनी नहीं जा सकती थीं। राम जाने, दस थीं कि पन्द्रह थीं या बारह? कॉनारोज़ो की लड़की का कहना था कि एक सौ हैं, पर वह गिन नहीं सकती थी। जब पहली लॉरी फाण्टामारा के सामने सड़क के आखिरी मोड़ पर आ गई, तो भी आखिरी लॉरी अभी पहाड़ी के नीचे ही थी। हमने पहले कभी इतनी अधिक लॉरियाँ नहीं देखी थीं। हमारे किसी के खयाल में भी कभी नहीं आया था कि इतनी अधिक लॉरियाँ भी दुनिया में हो सकती हैं।

फाण्टामारा के सभी लोग—यानी स्त्रियाँ और बूढ़े जो फ्युसिनो नहीं गये थे—इतनी सारी लॉरियों की आवाज़ से घबराकर गिर्जा-घर के सामनेवाले चौक में भाग आये। उन लॉरियों के अनपेक्षित आगमन का हरएक भिन्न-भिन्न अर्थ लगा रहा था।

सॉर्सोनेरा का कहना था कि यह तो यात्रा है, यात्रा। आजकल यात्री पैदल नहीं जाते, मोटरों में जाते हैं। वे हमारे सैनरोक्को की यात्रा को आये हैं।

पास्क्वेल सिपोला, जिसने शहर में फौजी नौकरी की थी, बोला—नहीं, यह मोटर-दौड़ है। बहुत-से मोटर चलानेवालों ने आपस में होड़ बदी है कि कौन तेज चला सकता है। शहरों में आये दिन मोटर-दौड़ हुआ करती है।

लॉरियों की आवाज़ प्रतिक्षण बढ़ती ही गई और अब हमें उनके अन्दर के आदमियों की ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें भी सुन पड़ने लगी थीं। कड़कड़ाहट करती गोलियों की एक बौछार, और साथ ही गिर्जाघर की खिड़की से काँच के गिरने ने हमारे विस्मय को भय में बदल दिया।

'वे गोलियाँ चला रहे हैं! वे गोलियाँ चला रहे हैं! वे गिर्जाघर पर गोलियाँ चला रहे हैं! वे हम पर गोलियाँ चला रहे हैं!'

पर वे गोली चलानेवाले लोग थे कौन? वे गोलियाँ क्यों चला रहे थे? वे गोलियाँ किस पर और क्यों चला रहे थे?

'यह लड़ाई हो रही है ! यह लड़ाई हो रही है !' जनरल बाल्डी-सेरा चिल्लाने लगा—'यह लड़ाइ हो रही है !'

लेकिन लड़ाई क्यों ? और हमारे खिलाफ लड़ाई क्यों ?

'यह लड़ाई है !' जनरल चिल्लाता रहा—'यह लड़ाई है ! 'क्यों' की तो राम ही जाने, पर यह लड़ाई है !'

गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाले त्योफिलो ने 'यदि लड़ाई है तो हमें युद्ध से बचने के लिए शान्ति-पाठ करना चाहिए,' कहकर शुरू ही किया था—'पृथिवीः शान्ति, आपः शान्ति', कि गिर्जाघर के सामनेवाले हिस्से पर गोलियों की एक दूसरी बौछार ने हम पर ईंटों के टुकड़े बिखेर दिये। शान्ति-पाठ में विघ्न पड़ा। सभी बातें मूर्खता-पूर्ण मालूम पड़ रही थीं। लड़ाई ? लड़ाई क्यों होगी ? गिडिटा स्कारपोन बेहोश हो गई थी। हम उसके चारों ओर बकरियों के झुण्ड की तरह खड़े थे।

हम रोने-चीखने लगे। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही अपने होश-हवास दुरुस्त रख सका था। वह अब भी कह रहा था—

'इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता; यह लड़ाई है ! यह लड़ाई है और इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता; यह लड़ाई है, यह भाग्य है। जब कभी लड़ाई छिड़ती है तो हमेशा ऐसा ही होता है।'

मेरिया विंसेञ्जा बॉयला को एक अच्छा उपाय सूझ गया।

वह बोली—हमें गिर्जाघर की घण्टियाँ बजानी चाहिएँ। जब कभी देश पर विपत्ति आती है तब गिर्जाघर के घण्टे ही बजाये जाते हैं। १८६० में पिडमाण्टेसी के आने पर लोगों ने सारी रात घण्टे बजाये थे।

लेकिन त्योफिलो तो मारे डर के खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसने मुझे चाभियाँ दे दीं। मैं और एल्वीरा खतरे का घण्टा बजाने के लिए मीनार पर चढ़ीं। लेकिन एल्वीरा हिचकी।

उसने पूछा—क्या औरतों के विरुद्ध भी कभी लड़ाई हुई है ?

मैंने उत्तर में कहा—मैंने तो एक भी नहीं सुनी री !

'अच्छा, तो अभी आनेवाले ये आदमी हमारे नहीं, आदमियों के खिलाफ़ आये हैं। अगर वे आदमियों को पा जायँगे, तो अवश्य ही खून-खच्चर होगा—ज़रूर ही युद्ध हो जायगा। खतरे का घण्टा न बजाना ही ज़्यादा अच्छा है। यदि हम घण्टा बजायेंगी तो आदमी यह सोचकर कि आग लगी है, भागे आयेंगे और तब मार-काट मच जायगी।

एल्वीरा बेराडों के बारे में सोच रही थी। मैं अपने पति और पुत्र के बारे में सोच रही थी। इसलिए हम घण्टियों को बिना छुए ही गिर्जाघर के मीनार में ठहरी रहीं।

मीनार पर से हमने लॉरियों को फाण्टामारा के प्रवेश पर रुकते देखा।

राइफलें लिये हुए बहुत-से आदमी लॉरियों में से उतर पड़े। कुछ लारियों के पास ही रुके रहे। बाक़ी गिर्जाघर की ओर बढ़े।

नीचे गाँववाले शान्ति-पाठ खतम कर चुके थे और अब प्रार्थना करने लगे थे—

हे दयालु परमपिता परमात्मा,
इस युद्ध और अशान्ति से हमारी रक्षा कर!
परमात्मा, हमारी रक्षा कर!

गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाला त्योफिलो प्रार्थना कहता था और हम उसके उत्तर में कहते थे—परमात्मा, हमारी रक्षा कर। त्योफिलो ने जितने पापों के बारे में वह सोच सकता था, उन सबके नाम लिये और हरएक के बाद हमने दुहराया, 'परमात्मा हमारी रक्षा कर।'

सभी दुःखों से परमात्मा, हमारी रक्षा कर!
सभी पापों से परमात्मा, हमारी रक्षा कर!

किसी को जरा भी यह ख़याल नहीं था कि क्या होनेवाला है। त्योफिलो जब हैजा, दुष्काल और मौत से रक्षा करने की प्रार्थना कर रहा था, उन सशस्त्र आदमियों की टुकड़ी चिल्लाती और बन्दूकें हिलाती हुई चौक के कोने में दिखाई दी। उनकी ज़्यादा तादाद ने

हमें डरा दिया। एल्वीरा और मैं आप-ही-आप मीनार के एक ऐसे कोने में दबक गईं, जहाँ से अपने-आपको बिना दिखाये हम देख सकती थीं।

दो-दो की कतार में कोई सौ-एक हथियारबन्द सिपाही रहे होंगे। राइफलों के सिवा उनकी कमर-पेटियों में खंजर भी थे। वे सब काली कमीजें पहिने हुए थे। हम उनमें से केवल गाँव के चौकीदार और सड़क सुधारनेवालों के मुकादम फिलिप्पो इलबेलो को पहिचान सकीं, लेकिन दूसरे भी नितान्त अपरिचित और दूर के रहनेवाले नहीं थे। उनमें से कुछ बे-खेत-खलिहानवाले ऐसे किसान थे, जो जमींदारों के यहाँ काम करते हैं और कमाई की अपेक्षा अधिकतर चोरी और उठाईगिरी करके ही अपना गुजारा चलाते हैं। कुछ दूसरे फेरीवाले जो अकसर हाट-बाजार में दिखाई देते हैं, और बर्तन मलनेवाले, और बड़े लोगों के कोचवान और गा-बजाकर माँगते फिरनेवाले लोग थे—कमजोर और बड़े जमींदारों के सामने जरा-जरा-सी सुविधाओं के लिए दुम हिलानेवाले खुशामदी टट्टू और जूठे टुकड़े तोड़नेवाले दुराचारी लोग, जो एक समय हमारे पास वोट माँगने आते हैं, आज वही राइफलें लेकर हमारे खिलाफ लड़ाई करने आये थे। चोर और आवारों को व्यवस्था और सम्पत्ति की रक्षा करने का भार सौंपा गया था। बिना घरबार के, बिना इज्ज़त के, बिना विश्वास के अधर्मी, ग़रीब और साथ ही ग़रीबों के दुश्मन वे लोग!

पेट पर तिरंगा पट्टा लपेटे ठिंगने कद का एक मोटा आदमी उनके आगे-आगे चल रहा था। उसके साथ मुर्गे की तरह अकड़ता हुआ फिलिप्पो इलबेलो क़दम रख रहा था।

'यह तुम क्या कह रहे हो?' तिरंगे पट्टेवाले आदमी ने त्योफिलो से पूछा।

'मैं शान्ति के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।' त्योफिलो ने जवाब दिया।

'बहुत अच्छा, मैं तुम्हें शान्ति दूँगा', उस ठिंगने-मोटे आदमी ने हँसते हुए कहा और फिलिप्पो इलबेलो को इशारा किया।

फिलिप्पो इलबेलो त्योफिलो के पास बढ़ आया और उसके चेहरे पर कसकर एक चाँटा मारा।

त्योफिलो ने गाल को हाथ से सहलाते हुए चारों ओर देखा और हैरानी से पूछा—चाँटा क्यों मारा ?

वह ठिंगना आदमी गुर्राने लगा—डरपोक ! कायर ! बुज़दिल ! तू आत्म-रक्षा क्यों नहीं करता ? कायर कहीं का !

लेकिन त्योफिलो न तो अपनी जगह से हिला, न एक शब्द ही बोला। उस मोटे आदमी ने अपने सामने झुण्ड में देखा, लेकिन उन स्त्रियों, बूढ़ों और बीमार आदमियों में उसे अधिक भड़कानेवाला कोई न दीखा। फिलिप्पो इलबेलो के साथ थोड़ी-सी सलाह करने के बाद उसने कहा-मेरे ख़याल से इस बारे में अब कुछ नहीं करना है।

तब झुण्ड की ओर मुड़कर उसने हुकम दिया—

'सब लोग घर चले जाओ।'

जब सब लोग घर चले गये तो काली कुर्तीवालों की ओर मुड़कर उस मुटल्ले ने हुकम दिया—

'पाँच-पाँच की टोलियाँ बनाओ और हर एक मकान की तलाशी लो और सब हथियार जब्त कर लो! जल्दी, आदमियों के आने से पहले लौट आओ।'

चौक बिजली की तरह खाली हो गया। इस वक्त तक काफी अँधेरा हो गया था। हमारी जगह से हमने पाँच-पाँच की टुकड़ियाँ फाण्टामारा की कुछ सँकरी गलियों में होकर घरों में घुसती देखीं।

मैंने और एल्वीरा ने सोचा कि बिजली बत्ती या किसी दूसरे उजाले की सहायता बिना इन क़ानून के प्रतिनिधियों को तलाशी लेना कठिन हो जायगा।

लेकिन एकाएक ग्रेज़्या की चीख़ ने, जिसका मकान गिर्जाघर की मीनार के ठीक पास था, और ठीक उसी समय दूर के घरों से फिलोमेना कास्टाना, सोफिया रेक्च्युटा, लिजाबेत्ताँ लिमोना, कारासिना, फिलोमेना क्वेटर्नी आदि की वैसी ही चीखों और सामान उलटने-पलटने

और कुर्सियाँ और खिड़कियाँ तोड़ने की आवाज़ों ने हम पर इन सशस्त्र आदमियों का वास्तविक मंशा प्रकट कर दिया।

हमारे नीचे मेरिया ग्रेज्या बलि-पशु की तरह चीख रही थी। खुले दरवाजे की राह हमें, अस्पष्ट, पाँच आदमियों के खिलाफ एक जवान स्त्री का झगड़ना दीख रहा था। कई बार वह झगड़ती-झगड़ती बचकर दरवाजे तक पहुँची पर, हर बार उन आदमियों ने उसे पकड़कर रोक लिया। उन्होंने उसके पाँव और कन्धे पकड़कर उसे ज़मीन पर गिरा दिया और तब दबाकर उसके शरीर पर के कपड़ों का एक-एक चिन्दा फाड़ डाला। उनमें से चार ने उसके हाथ-पाँव पकड़ रखे और पाँचवें ने उसके साथ अपनी इच्छा-पूर्ति की। मेरिया ग्रेज्या की चीखें गला कटते हुए पशु की घरघराहट-जैसी थीं। जब पहला आदमी समाप्त कर चुका तो उसकी जगह दूसरे आदमी ने ली और शहादत फिर से शुरू हुई। और जब दूसरा आदमी खतम कर चुका तो तीसरे आदमी की और तब चौथे आदमी की बारी थी। लेकिन इस समय तक उस औरत की चिल्लाहट इतनी धीमी हो गई थी कि हम तक मुश्किल से सुन पड़ती थी। उसका झगड़ना और हाथ-पाँव पटकना भी बिलकुल बन्द हो गया था। चौथे और पाँचवें आदमी की बारी में किसी को उसके हाथ-पाँव पकड़ने की आवश्यकता न हुई। अपनी मंशा पूरी हो जाने के बाद वे आदमी हँसी के ठहाके लगाते हुए बाहर निकले और लिज़ाबेत्ता लिमोना के घर गये, जो वहाँ से बीस गज की दूरी पर था।

मेरी बगल में खड़ी हुई एल्वीरा ने यह सब देखा। इसे रोकने का कोई उपाय नहीं था। यह सब हमारी आँखों के ठीक सामने, नीचे कुछ गजों के फासले पर हुआ था। उसने छोटी-बड़ी प्रत्येक बात देखी थी। जब वह दोनों हाथ मेरी गर्दन में डालकर मुझसे लिपट गई तो उसका सारा बदन जूड़ीवाले की तरह काँप रहा था। ऐसा लगता था मानो गिर्जाघर की वह मीनार और हमारे चारों ओर की सब ज़मीन ही हिल रही हो। मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे गिरने

से रोका, नहीं तो वह लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे लुढ़ककर हमारी छिपने की जगह प्रकट कर देती। एल्वीरा फटी हुई डरावनी आँखों से अभी तक उस कमरे की ओर टकटकी लगाये देख रही थी, जहाँ मेरिया ग्रेज़्या का क्षत-विक्षत शरीर पड़ा हुआ था और जहाँ से वे पाँचों आदमी अभी हाल ही में गये थे। मैं डरी कि वह कहीं पागल न हो जाय। एक हाथ से मैंने उसकी आँखें इस तरह मूँद दीं जैसे कोई मुर्दे को मूँदता है। तब एकाएक मैं बहुत कमजोर हो गई, मेरे पाँव लड़खड़ाये और सब कुछ अन्धकारमय हो गया।

जो कुछ तुम्हें सुनाया है, उसके सिवा मुझे उस रात की और कोई घटना याद नहीं रही।

कई बार ऐसा होता है कि मैं दुनिया-भर की और सब बातें भूल जाती हूँ, पर याद रहती है उस रात की केवल वह घटना जो मैंने तुम्हें अभी सुनाई है। कभी-कभी मैं ऐसा ही महसूस करती हूँ। बाद की बातें मेरा पति तुम्हें सुनायेगा।

फ्युसिनो से लौटते हुए हम लोगों को इन घटनाओं के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। यही तो दुःख है कि इन औरतों ने गिर्जाघर की घण्टियाँ नहीं बजाईं।

घर लौटते वक्त पेसिना के पास मेरा और बेरार्डो वॉयला का, विन्सेञ्ज़ो स्कॉर्ज़ा, पैपासिस्टो, सिरोजि रोण्डा, मेरिया ग्रेज़्या के बाप और लिज़ाबेत्ताँ लिमोना के सगाई-वर से साथ हो गया था और हम साथ-साथ घर आ रहे थे। ग्यासिण्टो बार्लेट्टा, क्विण्टिलियानो, वेनेर्डी सेण्टो, लुइजी सेर्पा और दूसरे हमारे पीछे थे।

गाँव के बाहर इतनी-सारी लॉरियाँ और उनके पास हथियारबन्द आदमी देखकर बेरार्डो ने कहा—

'मेरे ख़याल से यह बाड़े के बारे में है। ठेकेदार समझता है कि फाण्टामारा में से किसी ने बाड़ा जलाया है।'

लॉरियों के पास खड़े हुए हथियारबन्द आदमियों में से कई बेरार्डो को पहिचानते थे, पर उन्होंने अपने फाण्टामारा आने का कारण

नहीं बतलाया, या शायद वे ख़ुद नहीं जानते थे। उन्होंने हमें रोक लिया और जब हमारे पीछेवाले आदमी आ गये तो हम सबको गाँव के अन्दर ले गये। अन्दर आकर हमने सड़क सुधारनेवालों के मुकादम फिलिप्पो इलबेलो के साथ मोटी तोंदवाले नाटे आदमी के नेतृत्व में हथियारबन्द आदमियों को एक घेरा बनाये हुए खड़े देखा।

घेरे के अन्दर जनरल बाल्डीसेरा, त्योफिलो, पास्केला सिपोला, बूढ़ा एण्टोनियो ब्रसियोला, अनाक्लेटो दर्जी आदि मुँह बन्द किये, और डरे हुए लड़ाई के बन्दियों की तरह चुपचाप खड़े दीखे।

हमारे पहुँचते ही घेरा खुला और हमें अन्दर लेकर फिर बन्द हो गया।

बेराडों ने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो उसकी समझ में नहीं आया कि इस बात पर हँसे या गुस्सा हो। हमारे आने से पहले जो कुछ हुआ था, उसके बारे में हमने जनरल बाल्डीसेरा से जानने की कोशिश की। लेकिन मेरे कान के पास मुँह लाकर उसने धीरे से खाली इतना ही कहा—'यह बिलकुल अजीब वाक़या है।' फिर वह बेराडों और दूसरे आदमियों के पास गया और उनके कान में भी यही कहा। उसके 'यह बिलकुल अजीब वाकया है,' कहने से हमारी समझ में तो कुछ नहीं आया; पर, हाँ, बाल्डीसेरा के मुँह से जो गम्भीरतम घटनाओं के लिए भी इतिहास से हमेशा उदाहरण तैयार रखता था, यह सुनना बहुत ही अजीब लगा।

फ्युसिनो से लौटनेवाली तीसरी टुकड़ी को अन्दर लेने के लिए हथियारबन्द आदमियों का घेरा एक बार फिर खुला। इनमें पॉन्ज़ियो पिलाटो, ग्यासोबी लुसुर्डो, माइकेल ज़ोम्पा, ग्योवानी टेस्टोन, ग्योवानी युलिया, गैस्पेरोन और कुछ जवान छोकरे थे।

उन्होंने हमारी ओर इस तरह से देखा मानो सारे झगड़े की जड़ हमी हों, लेकिन सारे हथियारबन्द आदमियों की उपस्थिति में वे कुछ न बोले।

उनके बाद घेरे में आनेवाले एचिली प्युजो, एल्बर्टो सेसोन, पैलुम्मो, रेकच्युटा का पति, सेसिडियो वर्डोन और मेरिया ग्रेज्या के सगाई-वर के सहित कुछ और छोकरे थे।

यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या होनेवाला है। सभी चुप थे। कोई किसी की ओर देखता नहीं था। सभी महसूस करते थे कि हमारे और अधिकारियों के बीच कुछ गड़बड़ हो गई है; लेकिन कोई भी दूसरों की अपेक्षा अधिक खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। हर एक अपने बारे में पहले सोचता था।

हथियारबन्द आदमियों का घेरा एक बार और एण्टोनियो स्पावेण्टा, राफेल स्कार्पोन, लुइजी देल्लाक्रोस, एण्टोनियो जापा और कुछ दूसरे लोगों को अन्दर लेने के लिए खुला।

उस मुटल्ले के इरादों के बारे में ख़याल दौड़ाना मुश्किल था। क्या वह हम सबको जेल ले जाना चाहता था? यह बिलकुल ही असम्भव और सरासर अनहोनी बात थी।

कुछ समय तक हम अपने गाँव के बीच चौराहे में रोक रखे जा सकते थे। लेकिन, हम सबको शहर में जेल तक घसीटने के लिए उतने आदमी काफी नहीं थे।

इन काली कुर्तीवालों को हम पहिचानते थे। ये रात में आये थे, नहीं तो इन्हें यह सब करने का साहस न होता। बहुतों के शरीर से शराब की बदबू आती थी। आँखें मिलाने की हिम्मत न होने से सामने देखने पर ये मुँह फेर लेते थे। ये भी ग़रीब ही थे, परन्तु एक खास तरह के ग़रीब; बे-खेत-खलिहान के, परिश्रम से जी चुरानेवाले, पेट भरने के लिए रोज कुछ-न-कुछ नया दग़ाफरेब करनेवाले, एक भी धन्धा न जाननेवाले या बहुत-से धन्धे जाननेवाले, जो एक ही बात है। अमीरों और अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह करने की शक्ति और आत्म-प्रतिष्ठा न होने से ये छोटे खेत-मालिकों और किसानों जैसे अन्य ग़रीबों पर अत्याचार करने और लूटने की ख़ातिर उनके तलुवे सहलाना कहीं ज़्यादा पसन्द करते थे। दिन-दहाड़े ये सड़कों पर ग़रीब बने गिड़-

गिड़ाते फिरते थे। रात में और ज्यादा संख्या में इकट्ठे होकर दुष्ट और उत्पाती बन जाते थे। ये सदा हुक्म देनेवाले के अधीन रहते आये हैं और सदा रहेंगे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इन्हें एक खास ढंग की वर्दी और खास ढङ्ग के हथियार देकर एक विशेष फौज में भर्ती करना बिलकुल नई और अजीब बात थी।

फैसिस्ट कहे जानेवाले सब-के-सब ऐसे ही लोग हैं।

उनके साहस का एक दूसरा कारण भी था। हममें से हरएक उनमें से तीन-तीन के लिए काफी था। परन्तु उनके बीच हम कर ही क्या सकते थे? हमें आपस में एक दूसरे से बाँधनेवाला—संयुक्त करनेवाला—ऐसा था ही क्या? हमारे बीच आपस में जोड़नेवाली ऐसी कड़ी ही कौन-सी थी?

घेरे के बीच हम सब खड़े थे। हम सभी फाण्टामारा में पैदा हुए थे। इसके सिवा हममें और कोई समानता नहीं थी। हममें से प्रत्येक पहले अपनी-अपनी सोचता था। हरएक दूसरों को हथियारबन्द आदमियों के घेरे में छोड़कर खुद अकेला बाहर निकल जाने की तरकीब सोचता था। हममें से सभी परिवारवाले थे और सब अपने-अपने परिवार की सोचते थे।

बेरार्डो अकेला ही एक अपवाद हो सकता था, लेकिन उसके न तो जमीन थी और न जोरू ही।

इसी बीच फ्युसिनो से दूसरे किसान आये, जिनमें सियामारुगा का पति भी था, और वे भी घेरे में कर लिये गये।

इस समय तक काफी देर—अँधेरा—हो गई थी।

वह ठिंगना और मुटल्ला आदमी बोला—

'हमें पूछ-ताछ शुरू करनी चाहिए।'

पूछ-ताछ? कैसी पूछ-ताछ?

उन्होंने घेरे के अन्दर कोई एक गज चौड़ा रास्ता-सा बनाया और उसकी एक ओर वह मोटा आदमी और दूसरी ओर फिलिप्पो इलबेलो खड़ा हो गया।

पूछ-ताछ शुरू हुई। पहिला नाम गिर्जाघर की देखभाल करनेवाले त्योफिलो का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने पूछा—जय किसकी ?

त्योफिलो एक धमाके से जमीन पर आ गिरा।

न्याय के उस प्रतिनिधि ने फिर दुहराया—जय किसकी ?

त्योफिलो ने अपने करुणापूर्ण, डरे हुए चेहरे से किसी प्रेरणा की आशा में हमारी ओर देखा, लेकिन इसके बारे में हमें, जितना वह जानता था, उससे अधिक कुछ मालूम नहीं था।

जब त्योफिलो ने कोई जवाब नहीं दिया तो वह आदमी फिलिप्पो इलबेलो की ओर, जिसके हाथ में एक बड़ी-सी किताब थी, मुड़ा और बोला—लिखो 'नियमोल्लंघक।'

उन्होंने त्योफिलो को जाने दिया—छोड़ दिया। दूसरा नाम अनाक्लेटो दर्जी का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने उससे पूछा—जय किसकी ?

अनाक्लेटो ने जिसे सोचने को समय मिल चुका था, जवाब दिया—मेरी की जय।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन-सी मेरी ?

'लॉरेटो की मेरी।'

ठिंगने आदमी ने कहा—'नियमोल्लंघक' लिखो।

उन्होंने अनाक्लेटो को जाने दिया। दूसरा नाम बूढ़े इण्टानियो ब्रासियोला का पुकारा गया। उसके पास भी जवाब तैयार था।

वह चिल्लाया—सैनरोको की (बजरंगबली की) जय !

लेकिन उसका उत्तर भी सन्तोषप्रद नहीं था।

उस ठिंगने—मोटे आदमी ने कहा—'नियमोल्लंघक' लिखो।

चौथा नाम पास्केल सिपोला का था।

उससे पूछा गया—जय किसकी ?

'माफ़ कीजिए, लेकिन आपका मतलब क्या है ?' सिपोला ने पूछने की हिम्मत की।

'जो कुछ तुम्हारे मन में हो साफ़ जवाब दो। किसकी जय?' मोटे आदमी ने कहा।

'दाल-रोटी की जय।' पास्केल सिपोला का जवाब सोलहो आने ईमानदारी से पूर्ण था। लेकिन उसके लिए भी 'नियमोल्लंघक' ही लिखा गया।

हममें से हरएक को बारी आनेवाली थी और अधिकारियों के प्रतिनिधि का अपेक्षित उत्तर कोई भी नहीं सोच सका था।

हमारी सबसे बड़ी चिन्ता थी कि ग़लत जवाब देने से कहीं कुछ देना तो नहीं पड़ेगा। 'नियमोल्लंघक' का अर्थ कोई नहीं जानता था, लेकिन 'देने' का अर्थ हम सभी अच्छी तरह से जानते थे।

सही जवाब देने के लिए इशारा पाने की आशा में मैंने जनरल बॉल्डीसेरा के जितना समीप हो सकता था, पहुँचने की कोशिश की, क्योंकि वह हममें सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा था और अपनी जवानी के दिनों नेपल्स में भी रह चुका था। लेकिन वह मेरी ओर इस तरह से एक श्रेष्ठ और तरस खानेवाली हँसी हँसता हुआ देख रहा था मानो वह ठीक उत्तर जानता है; लेकिन किसी को बतलायेगा नहीं।

जब मोटे आदमी ने उससे पूछा 'किसकी जय?' तो बूढ़ा मोची अपनी टोपी उतारकर पुकार उठा—

'रानी मार्ग्रेट की जय!'

इसका बॉल्डीसेरा की आशा से भिन्न ही परिणाम हुआ। सभी हथियार-बन्द आदमी कहकहे लगाने लगे और मोटे आदमी ने कहा—

'वह मर गई है। रानी मार्ग्रेट मर गई है।'

बूढ़े मोची ने भयभीत होकर कहा—वह मर गई है? यह हो ही नहीं सकता! असम्भव!

मोटे आदमी ने कहा—'लिखो विधानवादी।'

इस अकारण घटना के परिणामस्वरूप उदास होकर सिर हिलाता हुआ बॉल्डीसेरा चला गया। बेरार्डो के सिखाने से अपनी बारी पर एण्टोनियो जापा ने कहा—लुटेरों का नाश हो! इसे सुनकर काली कुर्तीवालों की ओर से विरोध में एक फुसफुसाहट हुई।

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो को 'अराजकवाद' लिखने की आज्ञा दी।

जापा चला गया, और अब एण्टोनिया स्पावेण्टा की बारी थी।

वह बोला—आवारों का नाश हो। इस पर काली कुर्तीवालों ने फिर शोर किया। स्पावेण्टा भी 'अराजकवादी' लिख लिया गया।

मोटे आदमी ने लुइजी देल्लाक्रोस से पूछा—'जय किसकी ?' लेकिन वह भी बेरार्डो का ही शिष्य था इसलिए 'जय' बोलने के बजाय उलटा ही जवाब दिया—

'करों का नाश हो।'

इस बार फैसिस्टों ने कोई प्रतीकार नहीं किया, लेकिन देल्लाक्रोस भी 'अराजकवादी' ही लिखा गया।

न्याय के प्रतिनिधि के ठीक मुँह पर जब राफेल स्कार्पोन ने कहा—'मजदूरी चुकानेवाले लोगों का नाश हो।' तो बहुत अधिक सनसनी फैल गई।

मोटे आदमी ने उसे गिरफ्तार करना चाहा ; परन्तु राफेल ने जवाब देने से पहले ही घेरे से बाहर हो जाने की होशियारी की थी। दो छलाँगों में तो वह गिर्जाघर के पीछे पहुँच गया था, और उसके बाद हमें नहीं दिखाई दिया।

बाकी के कुछ अधिक समझदार थे। उनमें पहला ग्यासोबी लोसुर्डो था।

उसने जवाब दिया—'सबकी जय।' इससे अधिक निरापद जवाब सोचना मुश्किल था। परन्तु यह भी ठीक नहीं निकला

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा—'उदार' लिखो।

ग्योवानी युलिवा ने पवित्र आशय से कहा—सरकार की जय।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन-सी सरकार ?

युलिवा ने एक से अधिक सरकारों के बारे में कभी सुना ही नहीं था, तो भी उसने नम्रता की खातिर जवाब दिया—

'न्यायपूर्ण सरकार।'

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा—लिखो 'राज्य-द्रोही'।

पॉन्जियो पिलाटो ने भी अच्छाई के ख्याल से अपनी बारी आने पर 'सरकार की जय' ही कहा।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन-सी सरकार ?

'अन्यायी सरकार !'

मोटे आदमी ने कहा—'अपराधी' लिखो।

अभी तक सही जवाब कोई भी नहीं दे सका था। जितने ही ज़्यादा ग़लत जवाब इकट्ठे होते गये, सही उत्तरों का चुनाव क्रमशः अधिकाधिक परिमित होता गया। लेकिन, वास्तव में ग़लत जवाब देने पर कुछ चुकाना पड़ेगा या नहीं, इस बारे में हम अभी तक बिलकुल अँधेरे में थे। अकेले बेरार्डो को इस सम्भावना की कोई चिन्ता नहीं थी और वह अपने युवक मित्रों को 'अमुक की जय' के बजाय 'अमुक का नाश' वाले ढीठतापूर्ण जवाब सुझाकर स्वयं मजा लूट रहा था।

बेनेर्डी सेण्टो ने कहा—बैंक का नाश हो।

'कौन-सी बैंक ?' फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा।

बेनेर्डी ने, जिसे अच्छी तरह मालूम था, जवाब दिया—बैंक केवल एक है और जो सिर्फ ठेकेदार को ही रुपए देती है।

मोटा आदमी बोला—लिखो 'समाजवादी'।

गैस्पेरोन भी 'टोर्लोनिया का नाश हो !' जवाब के लिए 'समाजवादी' लिखा गया।

'ग़रीबों की जय !' इस जवाब के लिए पालुमो साम्यवादी लिखा गया।

इसी बीच बेरार्डो की दादी, मेरिया विन्सेन्ज़ा, चौराहे के दूसरी ओर से वहाँ आई। थोड़ी देर पहले ही हमने उसे मेरिया ग्रेज्या के घर में जाते देखा था।

वह बूढ़ी चिल्लाने लगी—बेरार्डो ! बेरार्डो कहाँ है ? इन डाकुओं ने हमारे घरों में क्या कर डाला ? हमारी औरतों के साथ इन्होंने क्या

किया ? और हमारे आदमी ? हमारे आदमी कहाँ हैं ? बेरार्डो, ऐ बेरार्डो !

बेरार्डो एकदम समझ गया या समझने का अभिनय किया। एक ही छलाँग में वह फिलिप्पो इलबेलो के सामने, जो भय से पीला पड़ गया था, जा पहुँचा और उसका गला पकड़कर उसने पूछा—

'एल्वीरा कहाँ है ? तुमने एल्वीरा का क्या किया ?'

बूढ़ी मेरिया ग्रेज़्या, जो इस समय तक गिर्जाघर की देहलीज पर पहुँच गई थी, घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगी—देवीमाता, हमें बचा, हमारी रक्षा कर, हमारी बाधाएँ हर !

वह प्रार्थना कर ही रही थी कि गिर्जाघर के बड़े घण्टे की आवाज़ ने हम सबका ध्यान मीनार के सिरे की ओर आकर्षित किया।

हमें वहाँ कटघरे पर अपने हाथों के सहारे झुकी हुई लम्बी, दुबली, बर्फ़ से सफ़ेद चेहरेवाली एक स्त्री की छायाकृति--एक प्रेतात्मा--दीखी।

हमारी साँस ही बन्द हो गई। इतने में वह आकृति ग़ायब हो गई।

'यह देवीमाता है ! यह देवीमाता है !' भय-विह्वल फिलिप्पो इलबेलो चिल्ला उठा।

दूसरे हथियार-बन्द आदमी भी चिल्लाने लगे—वह देवीमाता है ! वह देवीमाता है !

हथियार-बन्द आदमियों का घेरा तितर-बितर होकर गाँव के बाहर लॉरियों की ओर सिर पर पैर रखकर भागा।

हमने इञ्जिनों का 'स्टार्ट'—चालू—होना सुना। तब सामने की बिजलियाँ जलाये पहाड़ी के नीचे की ओर अन्धा-धुन्ध भागती हुई लॉरियाँ दीख पड़ीं। वे इतनी ज़्यादा थीं कि हम गिन नहीं सकते थे। उनका जुलूस समाप्त होता ही नज़र नहीं आता था।

पहाड़ी के तले, आखिरी मोड़ पर जहाँ पहाड़ी सड़क प्रधान सड़क से मिलती है, हमने लॉरियों का जुलूस एकाएक रुकते देखा। वे आधे घण्टे से ज़्यादा देर तक रुकी रहीं।

मैंने बेराडों से पूछा—वे किसलिए रुके हैं? क्या वे फिर आ रहे हैं?

उसने हँसते हुए जवाब दिया—उनके रुकने का कारण राफेल स्कार्पोन जानता है।

लॉरियों के फिर चालू होने तक काफी देर हो गई थी, इसलिए मैंने बेराडों से पूछा—क्या हम सोने चलें या एकाध घण्टा इन्तजार करने के बाद फ्युसिनो चल दें?

'सबसे पहला काम है चलकर यह देखना कि गिर्जाघर की मीनार में कौन है।' बेरार्डो ने कहा।

बेराडों भूत में विश्वास करता था, लेकिन देवीमाता में नहीं। यदि भूत दिखाई पड़ता तो वह विश्वास कर लेता, लेकिन देवीमाता के बारे में उसे बिश्वास नहीं आया।

हम मीनार पर चढ़े और वहाँ मेरी स्त्री और एल्वीरा को मुर्दे से भी बुरी हालत में पाया।

दूसरे दिन हमें मालूम हुआ कि सड़क पर रखे हुए एक वृक्ष के तने से पहली लॉरी टकराकर उलट गई थी और इसलिए पहाड़ी के नीचे लॉरियों का जुलूस रुक गया था। कई लोग घायल हुए थे, जिनमें कमर के चारों ओर तिरंगे पट्टेवाला वह ठिंगना और मोटा आदमी भी था।

—छः—

उस रात के दुःखद अनुभव से एल्वीरा बीमार पड़ गई।

कुछ ही पहले उसे रँगने और बुनने के लिए थोड़ा-सा ऊन मिला था; लेकिन बीमारी की वजह से काम करने की असमर्थता ने उसे बहुत ही बेचैन कर दिया था। हमारे यहाँ लड़ाई के समय से ही बुनने का धन्धा करीब-करीब मर चुका था। एल्वीरा का करघा अब भी थोड़े-से चालू करघों में से एक था, लेकिन उसके पास भी काम निरन्तर कम होता जा रहा था। आजकल कभी कदास ही कोई उसके पास कुछ गज

ऊन बुनवाने और रँगवाने लाता था। पास-पड़ोस के गाँवों में शताब्दियों से चलते आ रहे करघों की होली ताप ली गई थी। इसके कई कारण थे—स्थानीय भेड़ों का चला जाना, शहर में बने ऊनी माल का प्रचलन और किसानों की निरन्तर बढ़नेवाली ग़रीबी।

एल्वीरा ने बेराडे़ से आग के लिए लकड़ी काटने की मदद माँगी, जिसे उसने प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार कर लिया; परन्तु बदले में पैसा लेने को राजी नहीं हुआ। वह न केवल लकड़ियाँ ही काटता था, बल्कि एल्वीरा की देख-रेख में उसने ऊन की रँगाई भी शुरू कर दी थी।

एल्वीरा एक कोने में अपने पुआल के बिछौने पर पड़ी रहती थी। उस रात के सदमे से वह अभी तक अच्छी नहीं हुई थी और उसका पीलापन नहीं गया था। शायद इस पीलेपन की वजह से ही उसके काले बालों और काली आँखोंवाला गोल, साँवला चेहरा और दुबला शरीर अधिक सुन्दर दिखाई देता था। वह सूचनाएँ देती थी और बेराडे़ एक नौसिखिये बच्चे के उत्साह से उनका पालन करता था। कभी-कभी वह उसे परेशानी में डालनेवाले सवाल भी पूछ बैठता था जैसे यही कि नील में डालने से पीला कपड़ा मूँगिया क्यों हो जाता है?

वह जवाब देती—इसके सिवा वह और कुछ हो ही नहीं सकता।

'लेकिन क्यों', बेराडे़ पूछता।

'क्योंकि ऐसा ही होता है।' वह जवाब देती और तब अपनी बात के आधार के लिए पूछती—

'अच्छा, सूरजमुखी फूल के बीजों से प्याज क्यों नहीं उगते?'

जवाब में बेराडे़ कहता—दिल्लगी मत करो। यह तो उजागर है कि यदि सूरजमुखी फूल के बीज ही बोये गये हैं तो प्याज न उगकर सूरजमुखी ही उगेंगे।

इस तरह की बातचीत से कोई हानि—छेड़छाड़—होने की सम्भावना नहीं थी। जब-जब मैं रंगसाजी की दूकान में एल्वीरा के कुशल-समाचार पूछने गया, बेराडों, क़रीब-क़रीब आधे कमरे में फैली

हुई मिट्टी की दो बड़ी नादों के आसपास व्यस्त दीखा। कमरे की भाप से घनी हवा में या तो बेरार्डो नाँदों में उबलते हुए कपड़े एक लम्बे, काले लट्ठे से ऊपर-नीचे करता या ईंधन झोंकता दिखाई देता था।

एक रात मेरी उपस्थिति में एल्वीरा ने बेरार्डो को मेहनताने में कुछ रक़म देनी चाही, परन्तु उसने सदा की नाईं अक्खड़तापूर्वक लेना अस्वीकार कर दिया।

तब मैंने कहा—बेरार्डो पैसे नहीं लेता; क्योंकि वह चाहता है कि तुम वे पैसे शादी के लिए जमा करो।

एल्वीरा का चेहरा सेंदुर की तरह लाल हो गया और बेरार्डो ने ऐसा मुँह बनाया मानो मुझे पीटेगा।

मैंने मन-ही-मन कहा—मामला बेढब है। बेरार्डो शादी करनेवाला आदमी नहीं है।

दूसरे दिन सबेरे बेरार्डो की दादी मेरिया विन्सेञ्ज़ा मेरे पास आई और बोली—

'क्या तुमने बेरार्डो को देखा है?'

मैंने अचरज से पूछा—क्या, वह कल रात नहीं आया?

बुढ़िया यह कहकर कि 'ना, नहीं आया।' चली गई।

थोड़ी देर बाद बेरार्डो आया। वह बिना राम-राम किये ही दरवाज़े पर खड़ा हो गया और मैं भी कुछ नहीं बोला। जब मैं नीचे खेतों में जाने के लिए तैयार हुआ, तो वह बोला—

'मुझे कुछ सलाह चाहिए।'

जीवन में आज पहली बार ही वह सलाह माँग रहा था।

वह आगे बोला—विवाह के मामले की सलाह है। कल जब तुमने इस ओर इशारा किया तो यह इतना आवश्यक नहीं था, लेकिन अब है।

मैं समझ गया कि बेरार्डो ने रात एल्वीरा के साथ बिताई है।

'मेरी सलाह है कि तुम जल्दी-से-जल्दी एल्वीरा के साथ विवाह कर लो। तुम्हारा फायदा-ही-फायदा है, नुक़सान कुछ नहीं। और फाण्टामारा में उससे अच्छी लड़की और कोई नहीं है।'

बेराडों ने मुझे जवाब दिया—तुम नहीं समझते। क्या मैं खुद नहीं जानता? जानता हूँ। लेकिन मैं क्या हूँ? एक बे-खेत-खलिहान का किसान, एक बिना बिल का चूहा। मुझ बे-खेत-खलिहानवाले के साथ यदि एल्वीरा शादी करने को राजी है तो भी कोई लाभ नहीं। अगर एल्वीरा में अकल नहीं है तो मुझमें तो है। अकेले या अपनी दादी के साथ भूखों मरने में कोई हानि नहीं। लेकिन अपने घर में एल्वीरा के साथ भूखों मरना? आज इसके यहाँ और कल उसके वहाँ इस समय रोज-मजूरी करते फिरने में कोई हानि नहीं। लेकिन क्या एल्वीरा का पति रोज-मजूरी करता फिरे? क्या एल्वीरा का पति बे-खेत-खलिहानवाला किसान हो?

'यह सब तुमने पहले क्यों नहीं सोचा? कल रात, एल्वीरा के साथ सोने से पहले तुम्हें यह सब सोच लेना चाहिए था।'

'तुम नहीं समझते। इसका यह मतलब नहीं कि मैं एल्वीरा को छोड़ने के लिए राजी हूँ या किसी और को उसके साथ शादी करने दे सकता हूँ।'—उसे गुस्सा आ रहा था।

हर एक मामले में बेराडों इसी तरह से बहस करता था। उसके सारे दिन बहस करके भी कोई नतीजा नहीं निकल सकता था।

लेकिन इस बार बात बिलकुल साफ़ मालूम हुई; इसलिए जरा-से में निबटा देने के ख्याल से मैंने उससे एक सीधा सवाल पूछा—

'तुम एल्वीरा के साथ शादी करना चाहते हो या नहीं?'

'तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया और न कभी तुम समझोगे।' बेराडों ने कहा और चलता बना।

बेराडों बहुत ही उदास मालूम पड़ता था। वास्तव में उसके पास जमीन न होना ही उसके दुःख का मूल कारण था। अब तक वह अपने लम्बे-चौड़े तर्कों से इस समस्या को किसी तरह टालता आ रहा था, परन्तु घर बसाने की तात्कालिक आवश्यकता होते ही यह समस्या उसके सामने मुँह-फाड़े आ खड़ी हुई थी।

फाण्टामारा और पास-पड़ोस के अधिकांश किसानों के पास या

तो अपने निजी छोटे-छोटे खेत थे या फिर वे थोड़ी-बहुत ज़मीन के पट्टीदार थे। जिनके पास कोई जमीन नहीं थी ऐसे किसानों की संख्या बहुत थोड़ी थी। बिना जमीन का किसान घृणा और निरादर की दृष्टि से देखा जाता था। लगातार एक-सा काम न मिलने के कारण उसे अकसर अपने धन्धे बदलते रहने पड़ते थे और पिछले कुछ वर्षों में उसकी मज़दूरी निरन्तर घटती ही आई थी। जिस जमाने में ज़मीन सस्ती थी, खेत पर मज़दूरी करनेवाले आलसी, मूर्ख, पिछड़े हुए और मट्ठ समझे जाते थे, और कई ऐसे थे भी। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में काफी परिवर्तन हो गये थे। इस बीच न तो छोटे खेत-मालिक अपनी ज़मीन बढ़ा सके थे और न कोई मज़दूर खेती ही कर सका था। उलटे कई खेतवाले साहूकार के हाथों ज़मीन गवाँकर मज़दूरी करने लगे थे। अमीर किसानों के पास भी बहुत थोड़ी ज़मीन बची रह गई थी। बेरार्डो वॉयला के बारे में कोई कुछ भी कहे, लेकिन फाण्टामारा में एक भी उसकी बुद्धि और चरित्र की होड़ नहीं कर सकता था। यदि वह ज़मीन ही नहीं खरीद सका, तो इसका कारण बुरा समय था। वह जमाना ही नहीं रहा था कि मज़दूर बचत करके खेत खरीद पाते। फाण्टामारा के अधिकांश जवानों की दशा ऐसी ही थी।

यद्यपि समय बदल गया था, लेकिन लोगों के सोचने का पुराना ढंग अभी नहीं बदला था। बिना खेतवाले किसान अब भी हलकी निगाहों से देखे जाते थे। बेरार्डो अपनी स्थिति से समझौता नहीं कर सका था। अमेरिका या इटली के अन्य प्रान्तों में जाकर अपनी आकांक्षा-पूर्ति की वह हमेशा आशा किया करता था, लेकिन वह जाने में कभी सफल नहीं हुआ। अनिवार्य और आसन्न विवाह की संभावना सामने आने पर उसने अपने-आपको जीवन-भर के लिए अन्य किसानों से हीन स्थिति में पाया। इसके निराकरण का कोई उपाय नहीं था।

क्योंकि शहरों में काम की जैसी हालत थी उसकी जानकारी, एक

ऐसे आदमी से जिसे फाण्टामारा में फिर से देखने की कोई आशा नहीं थी, हमें अनपेक्षित रूप से मिली।

एक रात कन्धों पर थैला उठाये एक नाटा और बुढ़ापे से झुका हुआ आदमी हाँफता-काँपता फाण्टामारा के छोटे चौक में आया। वह देखने में न तो किसान और न शहरवाले जैसा था, या अधिक सही तौर पर शहरवालों की तरह कपड़े पहिने किसान जैसा था। हमने उसे एक देहाती ज्योतिषी समझा जो गाँव-गाँव घूमकर फ़सल का भविष्य बतलाते हैं, जादू-टोने से बीमारियाँ अच्छी करते हैं, औरतों और जानवरों को लगी नजर उतारते और फोड़ों के लिए एक रामबाण दवाई बेचते फिरते हैं।

जनरल बाल्डीसेरा ने उसे अपनी दुकान के आगे से निकलते देखा तो कुतूहल से उसके पीछे हो लिया, और मेरीटा सार्सानेरा, माइकेल ज़ोम्पा, बेरार्डो वॉयला और मुझे बुला लाया। 'तुम कहाँ से आते हो और काहे का भविष्य बतलाते हो?' उसने उससे पूछा।

छोटे क़द का बूढ़ा चौक के ठीक बीचोबीच आकर अपने थैले पर बैठ गया मानो अब अधिक खड़े रहने में असमर्थ हो और बोला—अपने घर में कोई भविष्यवक्ता नहीं है।

उसके कहने का मतलब हमारी समझ में नहीं आया।

उस बूढ़े का दिखाव बहुत ही विचित्र था। उसका सिर छोटा, बच्चे-सी पानी-भरी आँखें, पुराने ढंग की लम्बी मूँछें और नाक बड़ी-सी और अण्डे की तरह फैली हुई थी। ऐसा लगता था कि उस नाक को दबाते ही उसके अन्दर से कई तरह की शराबें निकल पड़ेंगी। सिर पर वह तरबूज के आकार की कड़ी टोपी पहने था और बदन में मखमली कॉलर का एक कोट, जिसमें चमकीले बटनों की दो कतारें थीं। उसका पायजामा सिपाही के जैसा भूरे रंग का था।

माइकेल ज़ोम्पा ने उससे कहा—किसी का भविष्य बतलाओ या और कुछ, पर पैसे मत माँगना।

'ज़रा ठहरो भाई, और पहले जाकर गिडिटा गोरियानो को तो बुला लाओ।' उसने कहा।

'वह तो मर गई।' माइकेल ने कहा। हम सब हँसने लगे; क्योंकि बूढ़े की भविष्यवाणी कुछ सच नहीं हुई थी।

उस नकली ज्योतिषी ने कहा—यदि गिडिटा जिन्दा नहीं है तो जाकर बेराडों गोरियानो को बुला लाओ।

'बेराडों गोरियानो भी लड़ाई से पहले ही मर चुका है।' अबकी बार सार्सोनेरा ने जवाब दिया।

'और पेपिनो गोरियानो? क्या वह भी मर गया है?' उस बूढ़े ने अबकी झुँझलाकर पूछा।

पेपिनो गोरियानो के बारे में विभिन्न मत थे। सार्सोनेरा की—उसका उसके साथ जवानी में प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था—राय थी कि वह कभी का रोम में मर गया है। बाल्डीसेरा का विश्वास था कि रोम में उसकी क़िस्मत खुल गई है और उसने एक धनाढ्य स्त्री से विवाह कर लिया है और अपने जन्म-गाँव का नाम तक भूले उसे कई दिन हो गये होंगे।

उस बूढ़े आदमी ने कहा—बहुत अच्छा, तो मैं तुम्हें पेपिनो गोरियानो का सच्चा हाल सुनाता हूँ—

"जिस साल बादशाह हम्बर्ट का वध हुआ, उसी साल पेपिनो गोरियानो फॉण्टामारा से रोम गया था। कितने साल हुए? गिनती लगाना बहुत सरल है। बादशाह हम्बर्ट की मृत्यु से धूमकेतु तक—पुच्छलतारा—जो त्रिपोली की लड़ाई के बाद दिखा था, दस वर्ष हुए। धूमकेतु से ट्रीस्ट की लड़ाई तक पाँच साल। पन्द्रह हुए। ट्रीस्ट की लड़ाई चार-पाँच साल चली, तो बीस हुए। पाँच साल तक ट्रेड्स युनियन का अधिकार रहा। बीस और पाँच पचीस और उसके बाद व्यवस्था-युग को आज दस वर्ष हो गये। यद्यपि हरएक यह कहता है कि इसका शीघ्र ही अन्त हो जायगा; क्योंकि तुर्कों के राज्य में रहना इससे अधिक बुरा नहीं हो सकता, तो भी दस साल होने आये; न तो

व्यवस्था युग खतम हुआ और न तुर्क ही आये और यह सब मिलाकर पैंतीस हुए।"

'अच्छा, तो पूरे पैंतीस वर्ष पहले पेपिनो गोरियानो इस इरादे से कमाई करने रोम गया था कि हाथ में पैसा आते ही वह फाण्टामारा लौटकर सोलह वर्ष की मेरीटा सार्सेंट्रोनेरो से, जिसके साथ उसका प्रेम था, विवाह कर लेगा।...'

'वह मैं थी', सार्सोनेरा ने झेंपते हुए कहा।

मेरीटा को एक निगाह ऊपर से नीचे देखकर वह बूढ़ा बोला—वह तुम थीं? असम्भव!

जब हम उसकी तरफदारी करने लगे तो बूढ़े ने विचलित होकर, उलझन में अपनी कहानी बन्द कर दी। थोड़ी देर बाद, किसी तरह, उसने फिर आरम्भ किया—

'पेपिनो गोरियानो ने हिसाब लगाया था कि वह कुछ ही वर्षों में पैसा जमा कर लेगा। रोम पहुँचते ही उसे 'इन्स्टीच्यूट ऑफ चैरिटेबल फ्रायर्स' (महन्तों की धर्मादा संस्था) में बर्तन मलने का काम मिल गया; लेकिन उसका भाग्य नहीं खुला। उसे रोज चौदह घण्टे काम करना पड़ता था और वह रहने-खाने को काफी पा जाता था, परन्तु शराब के लिए पैसा पूरा नहीं पड़ता था। संस्था के पुरोहितों का विश्वास था कि शराब से मनुष्य का पतन होता है, इसलिए वे अपने आश्रितों को पतित नहीं होने देते थे। संस्था में पतित होने का अधिकार केवल बाबा महन्तों को—बड़े महन्तों को था। लेकिन जहाँ बड़े महन्तों के पीने की शराब रखी जाती थी, पेपिनो गोरियानो उसी जगह अपना काम करता था। उसने वहाँ दो साल तक ईमानदारी से नौकरी की, लेकिन बाद में लगातार शराबखोरी की वजह से निकाल दिया गया। उसके बाद कुछ दिनों तक वह बेकार रहा। कभी-कभी उसे कुछ आने पैसे मिल जाते जो शराब तो क्या रहने-खाने को भी पूरे नहीं पड़ते थे। मौसम के अनुसार उसे बोटानिकल उद्यान, कोलोजियम, या इसेड्रा की ड्योढ़ियों (पोर्टिकों) में सोना पड़ता था। एक रात

उसे सपने में सैनरोको ने पड़ोस की परचूरन की दुकान में घुस गया। लेकिन वह पकड़ लिया गया और उसे आठ महीने की जेल हुई। मुक़दमे के समय उसने सैनरोको के बारे में समझाने की कोशिश की, लेकिन न्यायाधीशों को विश्वास नहीं हुआ। ऐसा नियम ही हो गया है कि न्यायाधीश आपद्ग्रस्तों पर कभी विश्वास नहीं करते।

'लेकिन जेल में पेपिनो की तक़दीर खुल गई; उसे आँखों की बीमारी हो गई। पहले आँखों में से एक सफ़ेद द्रव पदार्थ निकलने लगा और बाद में वे सूजकर छोटे टमाटर-जैसी लाल हो गईं। देखकर दया आती थी। आँखों की ऐसी बुरी दशा हो जाने पर पेपिनो जेल से छोड़ दिया गया और तब, जीवन में पहली बार उसने जी भरकर मजा लूटा। किसी परिचित की एक बालिका को उसने नौकर रख लिया और सबेरे उन गिर्जाघरों का चक्कर लगाने का नियम बना लिया, जहाँ नर-कस्थित आत्माओं के लिए प्रार्थना की जाती थी। दोपहर में दो-तीन मठों में जाकर भोजन माँग लाता था और साँझ होने से पहले समाधिस्थलों और नाट्य-शालाओं के मार्ग में मौके की जगह जा खड़ा होता था। बालिका को दो लीरा रोज देकर भी पेपिनो के पास रहने-बचाने को काफी हो जाता था। खाने की उसे कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी, क्योंकि खाना उसे मठों में से काफी मिल जाता था और वह उसका एक हिस्सा पोर्टासैन ग्योवानी के एक भठियारखाने में शराब के लिए बेच देता था। पेपिनो का इरादा कुछ वर्षों तक भीख माँगकर इतना पैसा जमा कर लेने का था कि वह फाण्टामारा लौटकर सार्सेंट्रोनेरो से विवाह...'

मेरीटा ने आह भरकर पूछा—उसने अपना इरादा क्यों बदल दिया?

'नित्य की भाँति ईर्ष्या उसकी आकांक्षा-पूर्ति के मार्ग में बाधक हुई। एक बुरा दिन आया कि पुलिस-सिपाही पकड़कर उसे आँखों का इलाज करवाने अस्पताल ले गया। पेपिनो गोरियानो ने आपत्ति भी की। उसने कहा—ये मेरी आँखें हैं और मैं इनका जो चाहूँ करूँ।

'परन्तु इटली में सच्ची स्वाधीनता थी ही कब ? थोड़े ही दिनों में उसकी आँखें तो अच्छी हो गईं, पर वह अपने व्यवसाय से हाथ धो बैठा। सुख और समृद्धि का समय चला गया और छोड़ गया पश्चात्ताप। वह ईंटें पाथने, गाड़ी ढोने और टाइबर पर नाव खेने जैसे छोटे-मोटे काम करने लगा, पर कहीं एक सप्ताह से ज़्यादा न टिका। शक्ति के समय लगन ने और लगन के समय शक्ति ने उसका साथ नहीं दिया। उसने हज़ारों अन्य उपायों से भाग्य-परीक्षा कर देखी।

'उन दिनों विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों लोग रोम में कमाई करने आते थे। जिनकी आकांक्षाएँ थोड़ी होतीं वे चौराहे झाड़ते, जूते साफ करते, खाना पकाते, बागवानी या साईसी करते और रोज कुछ-न-कुछ बचाते रहकर अपने योग्य छोटी-मोटी प्रतिष्ठा स्थापित कर लेते थे। लेकिन पेपिनो में अन्य देहातियों की तरह एक हज़ार लीरा जमा करने के लिए दस साल तक प्रतीक्षा करने का धैर्य नहीं था। वह एकदम भाग्यवान बनने के लिए कुबेर के खजाने के दरवाजे खोजता फिरता था। इसके लिए उसे बार-बार जेलखाने की हवा खानी पड़ती थी। कुल मिलाकर उसने चार साल पाँच महीने की सजा भुगती।

'इतनी असफलताओं के बाद पेपिनो गोरियानो हतोत्साह होने लगा। निराश होकर वह एब्रुज़ी से आनेवालों की तरह जो रोम में सभी तरह के हलके काम करते हैं, जीवन बिताने लगा। कुछ दिनों तक इकन्नी में लिफाफों द्वारा भाग्य बतानेवाला तोता लेकर वह स्टेशन और बारकों के आस-पास जाता रहा, परन्तु थोड़े महीनों बाद वह तोता मानसिक चञ्चलता से मर गया। तब पेपिनो ने एब्रुज़ी से सर्दियों के कुछ महीनों रोम में काम की तलाश में आनेवाले असंख्य लोगों से फ़ायदा उठाने की सोची। उसने स्त्रियों की परिचारिकाओं, नौकरानियों और आदमियों को इमारती मजदूर और बर्तन मलने-वालों का काम दिलवाने के लिए एक कारोबार खोला।

'इसी बीच पेपिनो का परिचय मॉन्सिग्नर कैलोगेरो नामक एक आदरणीय भद्र-पुरुष से हो गया जो कारमेलाइट का एक पदाधिकारी

था। पेपिनो उसके यहाँ गुमाश्ता हो गया। मॉन्सिग्नर अपनी अवस्था के मान से कहीं अधिक काम-पीड़ित था और एव्रूजी से आनेवाली किसान लड़कियाँ उसकी वासना-तृप्ति के मनचीते साधन थीं। पेपिनो को रहने-खाने के सिवा प्रत्येक किसान लड़की के पीछे, जिसे वह आदरणीय भद्र-पुरुष की शय्याशायिनी बनाता, दस लीरा अतिरिक्त मिलते थे। प्रारम्भ के कुछ महीने तो उनसे पूरी आत्म-परायणता से काम लिया और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो के लिए सार्वजनिक उद्यानों और वीथियों में नौकरानियाँ पटाता फिरा। इससे कुछ अधिक लाभ नहीं हुआ। क्योंकि मॉन्सिग्नर एक ही औरत को दो या तीन बार से ज्यादा पसन्द नहीं करता था और पेपिनो को सदा नई खोजते रहना पड़ता था। नौकरी बनाये रखने के लिए उसे वाया पेनिको मुहल्ले में प्रेम का व्यवसाय करनेवाली वेश्याओं की शरण जाना पड़ा। मॉन्सिग्नर कैलोगेरो को विश्वास दिलाने के लिए कि वे देहाती लड़कियाँ ही हैं। वह उन औरतों को प्याज और लहसुन खिलाता था। मॉन्सिग्नर को इस प्रवंचना का पता कई दिन बाद, जब उसे एक गन्दी बीमारी हो गई तब लगा। पेपिनो गोरियानो की नौकरी छूट गई और दुर्भाग्य ने फिर उसका पीछा किया।'

मेरीटा ने पूछा—वह फाण्टामारा क्यों नहीं लौट आया?

'भिखारी होकर फाण्टामारा लौटना? असम्भव था। वह रोम में ही रहा, क्योंकि वहाँ ग़रीबों के लिए अधिक काम था। उसने सैकड़ों काम-धन्धे किये; कुत्तों को सँवारा-नहलाया, गिर्जाघर की घण्टियाँ बजाईं, क़ब्रें खोदीं, सड़कों पर जूतों के फीते बेचे, गुग्लील्मो ओबेरडान की स्मृति में पोस्टकार्ड बेचे, आमोद-गृहों में बर्तन माँजे। लेकिन सभी धन्धे कमअज़ एक से थे।

'जो हलके काम दूसरे नहीं कर सकते उन्हें करने के लिए रोम में एव्रूजी के हजारों लोग जैसे वह रहा करते थे और आज भी रहते हैं। उनकी रहन-सहन दूसरों की अपेक्षा निचले स्तर का होता है। आजीवन वे गिर्जाघर के चूहों की तरह दरिद्र किसान ही बने रहते हैं।

सड़क पर देखते ही उन्हें पहिचाना जा सकता है। रविवार को जब 'दूसरे' मनोविनोद के लिए क्रीड़ाङ्गणों या पैरियोली के उद्यानों में जाते हैं तो वे किसी गये-गुजरे भठियारखाने में। 'दूसरों' ने जब ट्रीस्ट की लड़ाई के पक्ष-विपक्ष में प्रदर्शन किये तब पेपिनो रोम में ही था, और उस समय वह पोर्टा ट्रिवोनफेल के समीप एक छोटी, निकम्मी पान्थशाला में गया। लड़ाई के बाद जब लगभग सभी 'दूसरे' 'ट्रेड यूनियनों' में जाते थे, वह टेस्टासियो की एक पान्थशाला में जाता था। स्वेच्छा से वह कभी 'दूसरों' के बीच जाने की झंझट में नहीं पड़ता था; परन्तु सारे शहर में उथल-पुथल मच जाने पर यह कुछ उसके हाथ की बात नहीं रह गई थी। और एक बार उसे इसका बदला भी खूब चुकाना पड़ा।

'एक दिन जब पेपीनो गोरियानो वायाकोला-दा-रीन्जो से जा रहा था, लाल झण्डेवाले एक जन-समूह ने दुकानें लूटना शुरू कर दीं। वह भी उनमें जा मिला और जूतों की एक दुकान में घुस गया। जब बाहर निकला तो उसके पास बाएँ पाँव के दो जनानी नाचने के और दाहिने पाँव का एक ही बड़ा घुड़सवारी का जूता था। वह उनका क्या उपयोग करता? वह उन जूतों के जोड़ों की तलाश में प्रत्येक आने-जानेवाले से पूछता खड़ा था कि एक चुस्त आदमी ने आकर उसकी सहायता करने की इच्छा प्रकट की और पेपिनो को अपने घर तक चलने के लिए कहा। वह उसे घर ले जाने के बदले पुलिस-थाने पर ले गया और लूट-पाट करने के अपराध में गिरफ़्तार करवा दिया। पेपिनो मुक़दमे की चौकसी के लिए अदालत के कटघरे में कई मजदूरों के साथ खड़ा किया गया। उन मजदूरों ने कहा कि हमला करने में उनका उद्देश्य राजनैतिक था। लेकिन पेपिनो ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उसे जूतों की जरूरत थी और इसलिए उसे दूसरों से दुगुनी सजा दी गई।

'उन दिनों यदि बीच सड़क पर किसी का खून हो जाता और खूनी यदि कह देता कि उसने राजनैतिक कारणों से ऐसा किया है तो वह बिलकुल बरी कर दिया जाता था और कई बार तो पुरस्कृत भी

होता था; लेकिन यह कहने पर कि बेकारी से तंग आकर उसने ऐसा किया है, उसे कठोरतम सजा दी जाती थी। पेपिनो काफ़ी सोच-विचार के बाद इस निर्णय पर पहुँचा कि जीवन-भर उसके नगण्य बने रहने का एक मात्र कारण यह था कि उसने जो कुछ किया, उसका कारण राजनैतिक न होकर भूखों मरना था। अब जवान न होते हुए भी उसने निश्चय किया कि भविष्य में वह जो कुछ भी करेगा, राजनैतिक उद्देश्य से करेगा।

'जेल से छूटने पर पुलिस ने पेपिनो को बुलाया और कहा कि 'या तो हम कहते हैं वैसा करो, नहीं तो आज की रात ही फाण्टामारा लौट जाओ।' रेजिना कोएली से हाल ही में छूटे हुए उसके अन्य मित्रों के सामने भी ऐसे ही प्रस्ताव रखे गये। पुलिस द्वारा प्रस्तुत किया हुआ राजनैतिक काम करने का प्रस्ताव पेपिनो ने प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार कर लिया। उसे पेशगी पचास लीरा के साथ यह आज्ञा मिली कि उसी रात प्याज़ा वेनेज़्या पहुँचकर 'निट्टी ज़िन्दाबाद, 'फ्यूम मुर्दाबाद!' के नारे लगाये।'

'तुम कहते हो कि उसे खाली नारे लगाने के लिए पचास लीरा मिले?' माइकेल ने हमारा सन्देह प्रकट करते हुए उस बूढ़े से पूछा।

'बीच में मत बोलो। तुम राजनीति के बारे में कुछ नहीं समझते। उसी रात पेपिनो गोरियानो प्याज़ा वेनेज़्या गया, वहाँ लोगों की एक बड़ी भारी भीड़ थी और उसमें रेज़ीना कोएली के उसके बहुत-से साथी भी थे। उसने 'निट्टी ज़िन्दाबाद!' 'फ्यूम मुर्दाबाद!' के नारे लगाना शुरू किये। सैनिकों और अफ़सरों की एक टोली को अपनी ओर बढ़ते देखकर रेज़ीना कोएली के उसके अन्य साथी तो हड़बड़ाकर इधर-उधर भाग गये; लेकिन उसने अभी अपना राजनैतिक कार्य आरम्भ ही किया था और अपने धन्धे से हाथ धोना नहीं चाहता था, इसलिए बिना अर्थ समझे ही पुलिस ने उसे जो कुछ चिल्लाने के लिए कहा था, चिल्लाता रहा। अफ़सरों और सैनिकों ने पेपिनो को घेर लिया और उसके बाद जो कुछ हुआ वह उसे याद नहीं रहा, क्योंकि

वह बेहोश हो गया था और सैन ग्यासोमो के अस्पताल में पहुँचने के बाद ही उसे होश आया।'

जनरल बाल्डीसेरा ने, जो सैनिक अनुशासन के बारे में ऊँची राय रखता था, कहा—क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि अफ़सर लोग पुलिस के खिलाफ़ थे ? यह हो ही कैसे सकता है ?

'बीच में मत टोको। तुम राजनीति के बारे में जानते ही क्या हो ? पेपिनो राजनैतिक काम करता रहा, यानी पुलिस द्वारा निश्चित किये गये स्थानों और समयों पर मार खाता रहा। इसने पोर्टा सान्ता-क्रोस के ट्रामवे मजूरों, पोर्टा सैनपाओलो के गैस-मजूरों और पोर्टा ट्रथोनफेल के फाउण्ड्री-मजूरों के हाथों लहू-लुहान हो जाने तक मार खाई। जब उसने पुलिस के सिखाये नारे लगाये, वह पीटा गया। मार उसे अकेले ही खानी पड़ती थी, क्योंकि रेजिना कोएली के उसके अन्य साथी तो मामला गड़बड़ होते ही छू हो जाते थे।'

मेरीटा ने अत्यन्त विषण्ण होकर पूछा—पेपिनो भी क्यों नहीं भाग जाया करता था ?

'क्योंकि मार खाने पर ज्यादा पैसा मिलता था। पुलिस उसे पाँच लीरा रोज और जब कभी अस्पताल भेजा जाता तो पचीस लीरा अतिरिक्त आश्वासन के लिए देती थी। रहन-सहन के मान से पाँच लीरा काफ़ी नहीं था, अतएव उसके लिए मार खाना नितान्त आवश्यक था। यह कुछ बहुत अनुकूल नहीं था, परन्तु काम अनुकूल रहा ही कब है ? यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि उसके नारे हमेशा बदलते रहते थे। छः महीने तक 'निट्टी जिन्दाबाद' के बाद पेपिनो को पूरे सालभर तक 'निट्टी मुर्दाबाद' के नारे लगाने पड़े। लेकिन नतीजा हमेशा वही होता ; वह हमेशा पीटा जाता था। डेढ़ वर्ष तक राजनैतिक काम करने के बाद जब पेपिनो गोरियानो का शरीर कोड़े खाने के बाद ईसा के शरीर जैसा हो गया तो एक बार पॉण्टियस पाइलेट ने कहा—'इस आदमी को जरा ध्यान से देखो।'

'पेपिनो गोरियानो एक सच्चा राजनैतिक शहीद माना जा सकता

था। राजनीति के लिए किसी भी इटालियन ने कभी भी इतना कष्ट नहीं सहा होगा। वह स्वयं घर बना रहकर दूसरों को लड़ने के लिए भेजनेवालों में नहीं था। वह खुद अपने शरीर की बाजी लगाता था। उन दिनों कई इटालियन अपने आदर्शों के लिए लड़े थे, परन्तु कोई भी पेपिनो गोरियानो की समानता नहीं कर सकता। उसने सभी आदर्शों के लिए—प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद, साम्यवाद और धर्म तक के लिए अपना खून बहाया था। प्रत्येक में उसे कुछ-न-कुछ अच्छाई दीखती थी; उन आदर्शों की सेवा करके वह पाँच लीरा नित्य और अस्पताल जाने पर हर बार पचीस लीरा अतिरिक्त कमाता था।

'लेकिन जैसे पेपिनो का बुढ़ापा गया वह मार खाने में अधिकाधिक असमर्थ होता गया। राजनीति से निवृत्त होने की आकांक्षा उसे दुःख देने लगी। राजनैतिक संघर्ष अधिकाधिक भयंकर होता जा रहा था। प्रदर्शनकर्ता पत्थरों और लकड़ियों का उपयोग करना छोड़कर गोलियाँ चलाने लगे थे। राजनीति खूंरेज हो चली थी। राजनीति मार खाकर कमाई करने का पेशा नहीं रह गई थी। राजनीति का स्वरूप अब भयंकर और गम्भीर हो गया था और पेपीनो गोरियानो के चरित्र से वह बिलकुल ही मेल नहीं खाती थी।'

सार्सानेरा ने पूछा—लेकिन वे गोलियाँ क्यों चलाते थे?

'मैं पूरे पैंतीस वर्ष रोम में रहा और आज तक मुझे मालूम नहीं पड़ा। तो फिर तुम्हारे जैसी मूर्ख स्त्री, जिसने सारी उम्र फाण्टामारा में बिताई हो, कैसे समझ सकती है?' बूढ़े ने टालमटूल जवाब दिया और आगे बोला—

'राजनीति की ऐसी दशा थी। पेपिनो ने पुलिस के बुलावों का जवाब देना बन्द कर दिया। कुछ समय बाद खास तौर से बुलाकर पुलिस ने उसके सामने वही प्रस्ताव रखा। 'या तो हमारा कहना करो, नहीं तो इसी रात फाण्टामारा चले जाओ।' लेकिन इस बार मार खाने का मामला नहीं था। वह नये ढंग की राजनीति थी; बीस लीरा रोज

मेहनताना, ट्राम-गाड़ियों का फ्री पास, और मार खाने का नहीं, मारने का अधिकार।'

'अनर्गल बातें मत करो!' माइकेल ज़ोम्पा ने बीच में कहा। 'क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि पुलिस पेपिनो गोरियानो को बीस लीरा रोज और ट्राम-गाड़ियों का फ्री पास इसलिए देती थी कि वह लोगों को बिना किसी डर के पीटता फिरे? मूर्खता-पूर्ण बातें मत करो। बीस लीरा कमाने के लिए मुझे पूरे तीन दिन फ्युसिनो पर काम करना पड़ता है।'

नकली ज्योतिषी ने एक अनिश्चय में कहानी बन्द कर दी। लेनिक थोड़ी देर बाद माइकेल ज़ोम्पा के टोकने की अवमान्यता करते हुए आगे शुरू किया—

'इस बार यह एक नई, अनोखी और अभूतपूर्व ढंग की राजनीति थी। इसे ही 'फैसिज़्म' कहते थे। पेपिनो गोरियानो के 'फैसिज़्म' के बारे में क्या विचार थे? उसके ख़याल में यह सर्वोत्तम था। एक ग़रीब किसान से तिगुना अच्छा वेतन और बिना मार खाये लोगों को पीटने का अधिकार, और सरकारी संरक्षण ऊपर से।

'एक पुलिस सिपाही पेपिनो को 'ज्यार्नेल द' इटालिया' के छापा-खाने के पीछे एक बड़े हॉल में ले गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो हॉल अफ़सरों, विद्यार्थियों, कारकूनों, व्यापारियों और भड़कीली पोशाक-वाली औरतों से खचाखच भरा था। उनमें दो-चार पादरी और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो भी था। दीवालें तिरंगे झण्डों से सजाई गई थीं। सभी ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। इतने प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उप-स्थिति में पेपिनो डर-सा गया। लेकिन हॉल के एक कोने में रेजीना कोएली के उसके पुराने परिचितों का भी एक झुण्ड था, जिनमें अधि-कांश घरों में सेंध लगानेवाले थे। मंच पर आकर एक भद्र-पुरुष के बोलते ही शान्ति स्थापित हो गई। उसने पेपिनो गोरियाना और उसके साथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि कार-ख़ानों के मजदूरों में सबसे अधिक राजनैतिक-चेतनतावाला नये आभि-

जात्य मजदूरों का यह वर्ग देश के लिए अपने रक्त की अन्तिम बूँद तक बहाने को तैयार है। बाद में उसने जो कुछ कहा, वह बिलकुल ही समझ में नहीं आया।

'भाषण के बाद हाल खाली हो गया और पेपिनो गोरियानो तथा उसके मित्रों को पोर्टाप्या की विजय में भाग लेने के लिए रुकने का निमन्त्रण दिया गया।

'पास के एक शराबखाने में खिला-पिलाकर उन्हें लॉरी से लाब्रेस्या-स्मारक के समीप पोर्टाप्या ले गये। वहाँ लगभग घण्टे-भर तक वे प्रतीक्षा करते रहे। जहाँ वे प्रतीक्षा कर रहे थे वहाँ से उन्होंने कड़ाबीन-वाले सैनिकों और रॉयलगार्ड्स—शाही रक्षकों—की टुकड़ियाँ एक साम्यवादी पत्र के कार्यालय में घुसते और अन्दर के सभी लोगों को गिरफ्तार करके बाहर निकलते देखीं। एक पुलिस सिपाही पेपिनो गोरियानो और उसके साथियों को सावधान करने आया कि सब कुछ तैयार है और डर की कोई बात नहीं है और बेखटके अखबार का कार्यालय लूटा जा सकता है? उन्होंने वैसा ही किया; कार्यालय पर आक्रमण हुआ; फर्नीचर बीच सड़क में लाकर पुस्तकों और कागजों के साथ जला दिया गया। खिड़कियाँ, दर्वाजे, टाइपराइटर, तस्वीरें और अँगीठियाँ तोड़-फोड़कर चूर चूर कर डाली गईं; स्याही की बोतलें दीवालों पर फेंक-फेंककर फाड़ी गईं; तिजोरी वैज्ञानिक तरीके से तोड़-कर खोली गई, पर वह खाली निकली।

'विध्वस्त कार्यालय से रवाना होने के पहले, कई पत्रकारों द्वारा जो वहाँ आ पहुँचे थे, आक्रमणकारियों के फोटो लिये गये। पेपिनो आक्रमणकारियों के बीच एक मेज़ की टाँग तोड़ रहा था। दूसरे दिन 'पिक्कोलो' अखबार में उसकी तस्वीर छपी और उसके नीचे लिखा था 'पोर्टाप्या का नायक'।

'पेपिनो यश और प्रतिष्ठा के उन चिरस्मरणीय दिनों को कभी नहीं भूल सकता। वह समाचार-पत्रों के कार्यालयों में टँगा फिरता और सब कार्यालय उसे शराब पीने को पैसे देते थे। मार्किवनेस पारुक्चिनी

ने उसे निमन्त्रित भी किया, अपने मित्रों से उसका परिचय कराया, और अपने रसोईघर में और तब उसे अपने शयनकक्ष में ले गई, जहाँ पेपिनो को पोर्टाप्या की विजय से भी अधिक थका देनेवाले काम करने पड़े।

'पेपिनो ने इस नई कीर्ति का उपयोग बॉर्ज़ोप्यो के रात्रि-विश्रान्ति-गृह में चौकीदारी का काम पाने में किया। परन्तु सैन लॉरेंज़ो प्रान्त के मजूरों ने जब उसके एक साथी को मार डाला तो उसकी भी अकल ठिकाने आ गई और अब 'फैसिस्ट' प्रधान कार्यालय से बुलावा आने पर वह बीमारी का बहाना करने लगा। नई नौकरी से आमदनी अधिक नहीं थी, परन्तु अधिक खतरा भी तो नहीं था।'

सार्सानेरा ने जानना चाहा—फैसिस्टों के अधिकार ग्रहण करने पर उसने ज़्यादा अच्छी नौकरी पाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया ?

'तुम्हारे कथनानुसार 'फ़ैसिस्टों के अधिकार ग्रहण करते ही' उनके पुराने समर्थकों के बुरे दिन आ गये। पेपिनो चौकसी के लिए एक कमेटी के सामने बुलाया गया और उससे पूछा गया—'तुम फैसिस्ट हो ? तुम कितने अर्से से फैसिस्ट हो ? क्या तुम्हें कभी जेल भी हुई है ?' कमेटी ने निर्णय दिया कि चोरी के अपराध में कई बार के दंडित अपराधी फैसिस्ट पार्टी में नहीं रह सकते और परिणाम-स्वरूप पोर्टाप्या का नायक यशस्वी पेपिनो गोरियानो निकाल दिया गया। पेपिनो के रेज़िना कोएली के अन्य मित्रों के साथ भी यही बर्ताव किया गया; हाँ, जो अभी युवक थे, वे सेना में भर्ती कर लिये गये। उसी समय पेपिनो बॉर्ज़ोप्यो विश्रान्तिक गृह की चौकीदारी से भी हटा दिया गया और उसकी जगह 'मॉन्सिग्नर कैलोगेरो' के पुत्र के नाम से प्रसिद्ध एक युवक नियुक्त किया गया।

'बेकारी और कठिनाइयों के दिन फिर शुरू हुए। वह पुरानी अन्त-हीन क्षुधा, जिससे उसका कभी पीछा नहीं छूटा था, फिर आ धमकी। दिन-दिन जीना दूभर हो चला। सभी का यह खयाल था कि नई सरकार शायद ही दस साल चले, लेकिन उसे दस साल हो गये थे।

'रोम में रहना असम्भव हो गया। प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनता। यह सच है कि सभी सरकारें नये क़ानून बनाती हैं, परन्तु यह सरकार तो प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनाती है।

'शताब्दियों तक पाँच नियम, गिर्जा के पाँच आदेश लेकर, पोप शासन करते रहे। 'एक हजारी आक्रमण' के बाद गेरीबाल्डी ने केवल तीन नये क़ानून प्रचलित किये, चाकू का, खूनी झगड़ों का और शराबियों के उत्पातों का। लेकिन नई सरकार ने सभी चीजों के बारे में क़ानून बना डाले हैं। एक क़ानून है कि अमुक बातें मत करो, एक क़ानून है कि दिवालों के सहारे पेशाब मत करो, एक क़ानून है कि बाएँ से मत चलो, एक क़ानून है कि रात में मत गाओ या ट्राम में सामने से मत चढ़ो। विवाह नहीं करनेवालों के लिए और सब तरह की नौकरियों का नियन्त्रण करने के लिए और काम दिखलानेवाली एजेन्सियों की देख-रेख करने के लिए और नौकर तथा मालिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा करने के लिए अलग-अलग क़ानून बने हुए हैं।

'जितने ज्यादा क़ानून हैं उतनी ही अधिक गरीबी है और गरीबी जितनी ही अधिक बढ़ती जाती है वे उतने ही अधिक नये क़ानून भी बनाते जाते हैं। रोम में रहना बिलकुल असम्भव हो गया है। वहाँ की हवा तक में दुर्गन्ध आती है।

'उन्होंने उसे दूर करने के कई उपाय किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। किसी ने कहा कि दुर्गन्ध शायद चूहों के कारण आती है; इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने जहर बाँटकर चूहों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी और हजारों की संख्या में चूहे मारे गये। परन्तु दुर्गन्ध नहीं मिटी। तब किसी ने कहा कि दुर्गन्ध शायद मक्खियों के कारण है; इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने दवाइयाँ बाँटकर मक्खियों के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी और कई करोड़ मक्खियाँ मारी गईं। लेकिन बदबू दूर न हुई। दिन में कभी-कभी तो इतने जोर से दुर्गन्ध आती है कि जी खराब हो जाता है।'

माइकेल ने पूछा—दुर्गन्ध क्या कूड़े में से आती है ?

'किसी को अभी तक पता नहीं चला कि कहाँ से आती है ? ट्रास्टेवियर, सैन लॉरेञ्ज़ो, टेस्टाक्सियो, प्राटी और कारकूनों के मुहल्लों में जो नगर के प्रधान हलके हैं दुर्गन्ध तेज पर इतनी असहनीय नहीं है; परन्तु बीच नगर, मन्त्रियों के निवास-स्थान और सेण्टपीटर्स के चारों ओर तो बिल्कुल दम घोटनेवाली दुर्गन्ध उड़ा करती है। कोई नहीं जानता कि यह कहाँ से आती है। किन्हीं का खयाल है कि दुर्गन्ध रोम की प्राचीनता के कारण आती है। एक अनन्तकालीन नगर दुर्गन्धमय होगा ही। किन्हीं के ख़याल से यह सरकारी दफ़्तरों और पुलिस चौकियों के नीचे के तलघरों में छिपाई हुई लाशों की दुर्गन्ध है। किन्हीं का यह भी कहना है कि यह उन कपड़ों, परों, शिरस्त्राणों और कवचों की दुर्गन्ध है जिसे नई सरकार ने मन्त्रियों, राजदूतों और चपरासियों की वर्दियाँ बनाने के लिए म्यूज़ियम में से निकाला है। कई लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि बदबू गन्दे पानी की मोरियाँ बन्द कर देने से आती है। जुदे-जुदे लोगों के इस बारे में जुदे-जुदे सिद्धान्त हैं; परन्तु एक बात बिलकुल निश्चित है और वह यह कि दुर्गन्ध अब भी मौजूद है और दिनों-दिन बढ़ती जाती है।

'प्रति सप्ताह पुलिस एक नया षड्यन्त्र खोज निकालती है। रात में सभी मज़दूर-बस्तियों पर हज़ारों सशस्त्र आदमी चढ़-दौड़ते हैं। छत से फर्श तक घरों की तलाशियाँ होती हैं और सैकड़ों आदमी गिरफ़्तार कर लिये जाते हैं। कारण कोई नहीं जानता। सभी महसूस करते हैं कि एक दिन अपनी बारी भी आ सकती है। अधिकांश लोग निरन्तर एक भय की-सी हालत में दिन बिताते हैं।

'रोम में डर छूत की बिमारी-सा फैल गया है। दिनों और सप्ताहों तक सम्पूर्ण रूप से आतङ्क छाया रहता है। सड़क या शराबखाने में किसी की ओर घूरकर देखना काफी है; वह उसी वक्त पीला पड़ जायगा और फुर्ती से निकल जायगा। कारण क्या है ? डर।'

'डर काहे का ?' बेराडो ने पूछा।

'खाली डर।'

'लेकिन डर कैसा?' बेराडेी ने फिर पूछा।

'खाली डर। कारण कोई नहीं जानता। बस डर। जब सारी बस्ती में डर फैल जाता है तो कोई कारण नहीं दिया जा सकता। डर सब पर हावी हो जाता है। सरकार के विरोधी ही नहीं, खुद फैसिस्ट कहे जानेवाले भी सबसे ज्यादा डरते हैं। खुद वे भी कहते हैं कि इस तरह से नहीं चलता रह सकता और डरते हैं। डर के कारण ही वे अपने विरोधियों का खून करते हैं। डर के कारण ही वे निरन्तर पुलिस और सेना की संख्या-वृद्धि करते हैं। डर के कारण ही वे हजारों-लाखों निर्दोषों को जेलों में ठूँसते हैं। वे जितने अधिक अपराध करते हैं उनका डर भी उतना ही अधिक बढ़ता जाता है। अधिक डरकर वे और अधिक अपराध करते हैं। और इस तरह अधिकाधिक भय से अधिकाधिक अपराधों की सृष्टि होती है।'

'क्या सरकार शक्तिसम्पन्न है?' माइकेल ने पूछा।

'शक्तिसम्पन्न है सरकार का भय।'

'और पोप? वह क्या करते हैं?' मेरीटा ने पूछा।

'पोप भी डरते हैं। नई सरकार से उन्होंने बीस अरब लीरा स्वीकार किये हैं, एक मोटर खरीद ली है, एक वायरलेस लगा लिया है, यात्रा नहीं करते तो भी अपने लिए एक रेलवे स्टेशन बना लिया है और अन्य कई सुखोपभोग के सामान जमा कर लिये हैं और इतना सब मिल जाने पर अब डरने लगे हैं। रोम के गिर्जाघरों और मठों को पोप से एक पत्र मिला था कि वे गरीबों को दिये जानेवाले शोरबे की मात्रा बढ़ा दें। वह शोरबा डरका शोरबा था। पादरियों को धर्मादा संस्था से प्रति गुरुवार को बाँटे जानेवाले शोरबे में थोड़ासा मांस बढ़ा दिया गया है। वह डर का मांस है। उन दो अरब लीराओं को भुलाने के लिए अभी तो बहुत-सा मांस और शोरबा सामने आयेगा।'

'और अन्य प्रान्तों से रोम आनेवालों के साथ कैसी क्या गुज-रती है?'

'एब्रूजो के अमीरों का अच्छा और ग़रीबों का बुरा हाल है, परन्तु डरते दोनों ही हैं। पुलिस ने ग़रीबों में जाँच शुरू की है, जिसका मूल आधार डर है। प्रति सप्ताह सैकड़ों ग़रीबों को पकड़कर पुलिस उन्हें अपने गाँव भेज देती है। कितनों ही को तो रोम में रहते-रहते तीस-चालीस वर्ष हो गये थे और उनके जन्म-गाँव १९१५ के भूकम्प में बिलकुल नष्ट हो गये हैं। उनका एक भी सम्बन्धी आज जीवित नहीं बचा है। लेकिन पुलिस 'जनता की व्यवस्था के लिए' उन्हें भी भेज देती है। उन्होंने पेपिनो गोरियानो को भी यात्रा के लिए आवश्यक परवाने देकर ट्रेन में बिठाया और फाण्टामारा, जहाँ से आये उसे पैंतीस वर्ष हो गये थे, लौटने के लिए बाध्य किया। अच्छा, तो वह लौट आया है।'

मेरीटा ने उत्सुकता से पूछा—क्या तुम्हीं पेपिनो गोरियानो हो?

जनरल बाल्डीसेरा ने पूछा—पोर्टाप्पा के नायक क्या तुम्हीं हो?

हाँ, वही था।

—सात—

अपना निज का घर या कोई सम्बन्धी नहीं होने से पोर्टाप्पा के नायक ने मेरीटा सार्सानेरा की छत्रछाया में आश्रय ग्रहण किया।

शहर में कमाई करके मालदार बनने की लालसा बचपन से ही यदि उसे पथ-भ्रष्ट न कर देती तो जहाँ से वह जीवन प्रारम्भ करता, वास्तव में वहीं जीवन समाप्त करता दीखता था। एक भेड़िये के समान जो बूढ़ा होकर भी अपना दुर्गुण नहीं छोड़ता, मेरीटा सदा नये सिरे से जीवन प्रारम्भ कर सकती थी, परन्तु इसके विपरीत दुर्भाग्य से पेपिनो एक पुरुष के नाते अयोग्य था।

वह घण्टों छिपकली की तरह चुपचाप धूप में पड़ा रहता था।

यदि कोई उसके पास जाता तो वह पूछता—'हम किसलिए पैदा हुए हैं?'

हम इसका उत्तर नहीं जानते थे। भला, कौन जानता है कि हम किसलिए पैदा हुए हैं?

जनरल बाल्डीसेरा भी अब अधिक जानकारी का दावा नहीं करता था। शहर के बारे में अनोखी बातें सुनकर हममें सबसे ज्यादा असर उसी पर हुआ था। जिस पुरानी दुनिया में उसका दृढ़ता से विश्वास था, उसे बीते तीस वर्ष हो गये थे और उसका स्थान अविश्वसनीय घटनाओंवाली एक आश्चर्यजनक और अपरूप दुनिया ने ले लिया था।

किसान अब तक लकड़ी के हलों से ही खेत जोत रहे थे जब कि शहरवाले हवाई जहाजों के सहारे आसमान में उड़ने लगे थे। किसान जब कि पाई-पाई करके बीस लीरा बचा रहे थे, शहरवाले हजार लीरा नोट की बातें करते थे। किसान जब कि सुबह से साँझ खेत खोदकर भी भूखों मर रहे थे, शहर में लोगों को सड़कों पर भी पीटकर शीघ्रता से पैसा पैदा किया जा सकता था!

फाण्टामारा के बाहर स्वेच्छापूर्वक अफ्रीका जानेवाले ईसाई सेनापति को अब कोई नहीं जानता था और न कोई वह पुराना गीत ही गाता था :

रहना कालों से होशियार...

शहर में नई सरकार और उसके समाचार-पत्र जनप्रिय आमोद-गृहों, समाचार-पत्रों के कार्यालयों और वैयक्तिक भवनों के विरुद्ध प्युनिटिव (दण्ड-सम्बन्धी) हमलों का नेतृत्व करनेवाले कुछ बेहूदे नामवरों को गौरवान्वित करते थे।

एक दिन जनरल बाल्डीसेरा ने पोर्टाप्या के नायक से पूछा—आजकल शहर में कौनसा गीत प्रचलित है? उसकी आवाज पर से लगता था कि इसके उत्तर को वह बहुत ही अधिक महत्त्व देता है।

पेपिनो गाँव के बीच चौक में खड़ा होकर जोर-जोर से नई तर्ज का एक प्रचलित गीत गाने लगा :

फाड़ डालो
मेरा दिल ले लो
और मुझे फाड़ डालो...

रोम के स्टेशन पर पेपिनो को किसानों के लिए सरकारी मत का

प्रचार करनेवाली एक पुस्तक दी गई थी। हमारे प्रति सरकारी रुख का स्पष्टीकरण जानने के लिए एक दिन हम पेपिनो को घेरकर बैठ गये और उसे पढ़ने के लिए कहा।

पहला भाग एक कविता द्वारा कटाई करनेवालों को समर्पित किया गया था। मैंने वह कविता नक़ल कर ली थी और सदा इस आशा में उसे अपने साथ लिये फिरता था कि किसी दिन उसे समझनेवाला कोई मिल जायगा और मुझे समझा देगा। कविता यह है :

घर आनेवाली हरी-भरी फसल के विचारों से आनन्दित
हलवाहा अनन्त आकाश के बितान तले
सूर्य-रश्मियों में, पर्वतीय प्रदेश पर
हल चलाता है।

नीचे निर्जीव और दबे हुए मैदान को
जब हवा के सहारे
अल्पाइन की सुगन्धि शान्ति देती है,
पहाड़ी झोपड़ियाँ हिमाच्छादित शृंगों की गोद में
मधुर शान्ति और शीतल छाया का उपभोग करती हैं।

भेड़ों के समूह-सी, जलती दोपहरी में विश्राम करती
किसानों की झोपड़ियाँ, गहरी घाटी में
सोई हैं : दूर से सुन पड़ता है आशीर्वाद-सा—
सन्नाटे को मुखरित करता, पहाड़ी और घाटी पर
और पल्लवित बनपथ से होता—झरने का
मधुर कलनाद ; ऐसा आनन्द विफल नहीं हो सकता।

पुस्तक में के दूसरे अंश जिनमें कृषि-जीवन का वर्णन था, अधिक सरल थे। उनमें की कुछ दलीलें मुझे याद रह गई हैं :

'शुद्ध हवा और विश्राम की आवश्यकता होने पर शहरवासी कहाँ जाता है ?

'देहात में !

'ताजा मक्खन, शुद्ध तेल, गेहूँ का आटा, स्वादिष्ट फल कहाँ से आते हैं ?

'देहात से !

'शहरों के निवासी दुर्बल, कायर, पीले और उदास होते हैं।

'देहात के रहनेवाले सशक्त, आनन्दित, स्वस्थ और प्रसन्नचित होते हैं।'

नई सरकार ने किसानों के लिए जो कुछ किया है वह उस किताब में इस तरह लिखा हुआ था :

'नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घण्टे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता।

'किसानों को बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है।

'किसानों का जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिये गये हैं।

'किसानों की सहायता के लिए उधार देने का बैंक है।'

जब पेपिनो ने यह अंश पढ़ा तो हम एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। मानो कहना चाहते थे कि यह हमें धोखा दे रहा है।

पेपिनो ने पुस्तक माइकेल जोम्पा को दी और उसने यही बातें पढ़ीं। माइकेल जोम्पा ने पॉन्जियो पिलाटो को दी और उसने भी यही पढ़ा, तब उसने किताब मेरी ओर बढ़ाई और स्वयं मैंने भी पढ़ा :

'नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घण्टे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता।

'किसानों का बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है।
'किसानों को जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिये गये हैं।
'किसानों की सहायता के लिए उधार देने वाली बैंक हैं।'

पुस्तक के अन्त में लिखा था :

'उपसंहार में, शक्ति किसानों के हाथ में है। इटली एक कृषि-प्रधान देश है और यहाँ की सरकार मुख्यतः किसानों की है। किसानों के स्वार्थ सर्वपरि हैं। किसान देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।'

'यह किताब अवश्य ही सरकार की हँसी उड़ाने के लिए उसके किसी शत्रु ने लिखी है, या फिर पागलखाने में लिखी गई है।' माइकेल के इस सन्देह से हम सभी सहमत थे।

'हो सकता है, लेकिन मुझे तो यह कड़ाबीनवाले सैनिकों ने दी थी।' पेपिनो ने कहा।

बेरार्डो जानना चाहता था—कड़ाबीनवाले सैनिक इस तरह की किताबें किस लिए बाँटेंगे? राजकुमार टोर्लोनिया की सरकार और बैंकवाली सरकार ऐसी किताबें क्यों बाँटती है? यह किसानों को किसानों के ही नाम पर क्यों लूटती और क्यों उनकी हत्या करती है?

और तब प्रथम बार हमारी समझ में आया कि इस सरकार ने किसानों को किसानों के ही नाम पर भुखमरे की हालत में पहुँचा दिया है।

पोर्टाप्या के नायक ने समझाने का प्रयत्न किया—शासन सदा ही ग़रीबों के विरुद्ध रहा है। लेकिन वर्तमान शासन एक विशेष प्रकार का शासन है। यह भी ग़रीबों के प्रतिकूल है, परन्तु एक खास ढंग से। यह एक खास ढंग से ग़रीबों के विरुद्ध अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग करता है। ग़रीबों में से कइयों ने वर्तमान सरकार के लिए अपना खून बहाया है। मेरा मतलब स्वयं मुझसे और मुझ-जैसे अन्य

आदमियों से नहीं है, यद्यपि कोई नहीं कह सकता कि हम अमीर थे। लेकिन मेरा मतलब उन कारकूनों, ट्रामवे और रेलवे कामगारों और ईंटें पाथनेवालों से है, जो आदि-फॉसिस्टों में थे। अधिकतर वे करोड़-पति नहीं, ग़रीब किसान थे। उनकी सहायता के बिना वर्तमान सरकार अधिक समय तक टिक नहीं सकती। वर्तमान सरकार को उनकी आवश्यकता है। प्रिन्स टोर्लोनिया को और बैंक की सरकार को उनकी अपेक्षा है। शासन प्रिन्स टोर्लोनिया और बैंक के लिए जितनी ही अधिक सहूलियतें करता है उसे उनकी उतनी ही अधिक आवश्यकता पड़ती है और इसलिए उतना ही अधिक आवश्यक हो जाता है यह विश्वास कराना कि यह किसानों और मजदूरों की सरकार है।

पोटोप्या के नायक की बात हमारी समझ में बिलकुल स्पष्ट रूप से नहीं आई थी। पर इधर थोड़े दिनों से जो भी कुछ होता आ रहा था उसे हम साफ साफ नहीं समझ पा रहे थे।

एक सैनिक टुकड़ी का फाण्टामारा में आकर कई स्त्रियों के साथ बलात्कार करना बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन क़ानून के नाम पर और एक विशेष पुलिस अधिकारी की उपस्थिति में, उनका वैसा करना बिलकुल स्पष्टतया समझ में नहीं आता था।

फ्युसिनो में उन्होंने छोटे खेत-मालिकों का लगान बढ़ा दिया था। और बड़े जमींदारों का घटा दिया था। यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन ऐसा करने का प्रस्ताव स्वयं ग़रीब किसानों के एक प्रतिनिधि ने किया था और यही हमारी समझ में नहीं आता था।

जिनके खिलाफ कोई क़ानूनी शिकायत नहीं थी और जिनका एक मात्र दोष ठेकेदार के हक में अनुकूल होना नहीं था ऐसे कई निर्दोष व्यक्तियों को अनेकों बार उन फैसिस्ट कहे जानेवालों ने पीटा, घायल किया और मार तक डाला था; और यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन मारनेवालों का सर्वदा ही सरकार द्वारा पुरस्कृत होते रहना हमारी समझ में नहीं आ पाता था।

हमारी सभी विपत्तियाँ यदि अलग-अलग देखी जातीं तो नई नहीं-

थीं, क्योंकि ऐसी ही विपत्तियाँ भूतकाल में भी आ चुकीं। लेकिन इस बार वे बिलकुल ही नग्न और विचित्र ढंग से आई थीं।

सभी बातें हमारी समझ के बिलकुल परे थीं।

फाण्टामारा की गेहूँ की सारी फसल ठेकेदार ने मई में ही जब कि वह पकी भी नहीं थी, और खेतों में खड़ी थी, एक सौ बीस लीरा प्रति हंडरवेट (लगभग ५६ सेर) के हिसाब से खरीद ली थी। मई के महीने में कोई भी नये आनेवाले गेहूँ का बाजार भाव नहीं बतला लेकिन ठेकेदार ने जो सदा बहुत ही सतर्क रहता था उस समय गेहूँ की फसल खरीदी तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन पैसों की आवश्यकता होने के कारण हमने और पास-पड़ोस के दूसरे गाँवों ने उसे खेतों में खड़ी कच्ची गेहूँ की फसल ही बेच दी थी। कटनी के समय इसका भेद खुला। सरकार ने राष्ट्रीय उपज के सम्बन्ध में एक विशेष क़ानून बनाया था, जिसके परिणाम-स्वरूप गेहूँ का भाव एक सौ बीस लीरा प्रति हंडरवेट से बढ़कर एक सौ सत्तर लीरा हो गया था। इससे प्रकट होता है कि ठेकेदार को इस कानून का पता मई में ही लग गया था और इस तरह गेहूँ कटने से पहले ही उसे हमारे गेहूँ के प्रत्येक हंडरवेट पर पचास लीरा मुनाफ़ा मिल गया था।

इस तरह हमारे गेहूँ की फसल का सारा मुनाफ़ा ठेकेदार को मिला। जोतने, बोने, पहटाने; निराई, कटाई और मँड़ाई करने का साल भर के कठिन परिश्रम का सम्पूर्ण मुनाफ़ा ठेकेदार की जेब में चला गया। किसानों ने जमीन जोती और समतल की, बीज बोये और गोड़नी की, फसल काटी और मँड़ाई की और जब सब तैयार हो गया तो ठेकेदार बीच में आ कूदा और मुनाफ़ा वह ले गया। बैंक बीच में आ कूदी और मुनाफ़ा वह ले गई।

और हम विरोध भी नहीं कर सकते थे। सारा काररवाई क़ानूनन, पूरी तरह क़ानूनन थी। अगर ग़ैर क़ानूनी कुछ हो सकता था तो वह था हमारा विरोध करना।

किसानों पर होनेवाली लूट-खसोट बहुत दिनों से क़ानूनी हो

चुकी थी। यदि पुराने क़ानून काफी न होते तो वे झट एक नया क़ानून बना लेते थे।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा की ओर, उसके समाधिस्थल के पीछेवाले पुराने बग़ीचे में जो पिछले साल की बाढ़ में उजड़ गया था, अंगूर के रोपे लगाने की मज़दूरी के मेरे, बेरार्डो और राफेल स्कार्पोन के कुछ पैसे निकलते थे। एक रविवार को सबेरे हम 'जन-मित्र' के घर अपना हिसाब लेने गये।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने नशे में न होते हुए भी हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया।

उसने पूछा—मेरी ओर तुम्हारा कितने दिनों का हिसाब निकलता है?

बेरार्डो का पन्द्रह दिन का और मेरा और राफेल स्कार्पोन का बारह-बारह दिन का हिसाब था।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा जैसे पढ़े-लिखे आदमी के लिए इस हिसाब का पैसा जोड़ना कुछ बहुत कठिन नहीं था।

लेकिन 'जन-मित्र' का चेहरा मलिन पड़ गया। कई क्षणों तक वह बिलकुल मौन रहा, फिर उठकर तीन या चार बार कमरे में चक्कर लगाया। खिड़की के बाहर देख और दरवाजे के छेद से सुनकर निश्चय कर लिया कि कोई सुनता तो नहीं है। तब हमारे पास आकर अपनी विह्वलता को छिपाने का कठिन प्रयास करते हुए बोला—

'बड़ी कठिनाई है। सरकार जिस तरह हमारे पीछे पड़ी हुई है, उसका तुम अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। रोज हम पर एक नया क़ानून लादा जाता है। अब हम अपने पैसे के भी मालिक नहीं रहे।'

इसका हम पर काफी प्रभाव हुआ। तो, सरकार कुलीनों को भी तङ्ग करने लगी है! सचमुच!

बेरार्डो ने कहा—आपके कहने भर की देर है और सब किसान विद्रोह कर देंगे।

'नहीं, नहीं, नहीं। सवाल कुछ और ही है।' डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा डर गया था। 'मामला बहुत ही टेढ़ा है। यह देखो, मैंने तुम्हारे लिए

तीन लिफाफे तैयार कर रखे हैं। प्रत्येक में तुम तीनों के साथ तय की हुई मजदूरी की, प्रत्येक के लिए अलग-अलग रक़म है।'

टेबल पर तीनों लिफाफे रखे हुए थे।

'आपस में जो मजदूरी तय हुई थी, उसीके हिसाब से मैंने ये लिफाफे तैयार किये हैं। मैंने एक पाई भी बाक़ी नहीं रखी। मुझ पर तुम्हारा विश्वास है न?'

हम तीनों ने कहा—विश्वास क्यों नहीं है?

उसने फिर हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया। (हम उसका भरोसा कैसे नहीं करते? यदि उसी का भरोसा नहीं कर सकते, तो फिर दुनिया में भरोसा करते ही किसका?)

'अच्छा', वह आगे बोला—आज सवेरे बिलकुल ही अनपेक्षित रूप से इस प्रान्त के खेती पर काम करनेवाले मजदूरों की मजदूरी-सम्बन्धी ये नये नियम मेरे पास आये हैं। इन्हें पढ़ो।'

डॉन सर्कोस्टाञ्जा के फैले हुए हाथ से अखबार लेकर मैं उसमें लाल पेन्सिल से चिह्नित ये अंश पढ़ने लगा:

> 'खेती पर काम करनेवाले प्रथम श्रेणी के मजदूरों की (यानी जिनकी उम्र १९ से ६० वर्ष के बीच हो) वर्तमान मजदूरी चालीस प्रतिशत कम की जाती है।
>
> 'सत्रह और अठारह वर्ष के लड़कों की (दूसरी श्रेणी) मजदूरी उपर्युक्त कमी के सिवा बीस प्रतिशत तथा स्त्रियों और बालकों की (तीसरी श्रेणी) मजदूरी पैंतालीस प्रतिशत और कम की जाती है।'

'क्या यह बुरा नहीं है?' डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने हमसे पूछा—'बतलाओ, क्या यह बुरा नहीं है?'

मैं पढ़ता गया:

> 'सम्पत्ति या जमीन सुधारने-सम्बन्धी सभी काम, जैतून, फल

और अंगूर के रोपे लगाना, सफाई करना, खुदाई करना, खाइयाँ खोदना, गड्हे भरना, सड़क बनाना आदि काम बेकारों की सहायता के लिए खुले हुए सार्वजनिक कामों की श्रेणी में आते हैं, इसलिए इनकी मजदूरी उपर्युक्त दरों की अपेक्षा कम दी जाय और वह कमी किसी भी दशा में पचीस प्रतिशत से अधिक न हो।'

'क्या यह बिलकुल असहनीय नहीं है? मालिक और नौकर के आपसी सम्बन्धों में क़ानून की क्या आवश्यकता? अगर इसी तरह चलता रहा तो हमारी स्वाधीनता कहाँ रहेगी?' जन-मित्र ने कहा।

'हम उन तीन लिफाफों को, जो हमारे लिए हैं, ले लें और इसका फैसला हो जायगा।' यह कहते हुए बेरार्डो अपना लिफाफा उठाने के लिए बढ़ा, लेकिन डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने उसे रोक दिया।

वह नाराज़ होकर कहने लगा—क्या मेरे अपने घर में मेरे साथ पेश आने का तुम्हारा यही तरीका है?

उसकी आवाज़ और व्यवहार एकदम बदल गया था।

मैंने कहा—जब यह उसका लिफाफा है तब वह इसे क्यों न ले? हमने काम करने से पहले ही दिन और मज़दूरी ठहरा ली थी। अब आपकी ओर हमारा जो पैसा निकलता है, उसका हिसाब लगाना कुछ बहुत कठिन नहीं है।

'और क़ानून? क़ानून का क्या होगा? क़ानून तोड़ने की सजा तुम्हें मालूम है? इसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते, पर मैं तो जानता हूँ। तुम्हारे लिए मैं जेल जाने को तैयार नहीं हूँ। मैं अवश्य ही बहुत दुःखी हूँ; परन्तु मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे लिए जेल नहीं जा सकता और न जाऊँगा ही। क़ानून क़ानून है और उसकी मर्यादा पाली ही जानी चाहिए।' डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने साश्चर्य प्रकट किया।

मैंने कहा—मोसेज़ का कानून है: 'तुझे चोरी नहीं करना चाहिए।'

'आजकल हमारा सम्बन्ध मोसेज़ से नहीं मुसोलिनी से है। और

हर घड़ी क़ानून की मर्यादा देखने का काम मेरा नहीं है। यदि तुम्हारी यही इच्छा हो तो मैं सिपाहियों को बुला भेजूँ।'

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा बहुत ही उद्विग्न हो गया था। उसकी आँखें क्रोध से लाल हो आईं और वह कमरे में घूमते हुए बोला—

'जितना कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया है, उसके बाद तुमसे ऐसे व्यवहार की मुझे कभी आशा नहीं थी। ऐसा करने से तुम्हारा मतलब क्या है? क्या तुम मुझे बर्बाद करना चाहते हो? क्यों बर्बाद करना चाहते हो? मुझे साफ़-साफ़ बतलाओ कि तुम मुझे बर्बाद करना क्यों चाहते हो?'

तब वह थोड़ा शान्त हो गया और अपनी लिखने की मेज़ पर जा बैठा। उसने बेरार्डो का लिफाफा उठाकर उसमें से ८५ लीरा निकाले। तब एक काग़ज़ और पेन्सिल लेकर वह हिसाब करने लगा—

'क़ानून के अनुसार पहले चालीस प्रतिशत काटें। चालीस प्रतिशत के हुए पैंतीस लीरा। बाक़ी बचे इक्यावन। बेकारों की सहायतावाले क़ानून के अनुसार इसमें से पच्चीस प्रतिशत यानी तेरह लीरा कम किये। बेरार्डो के लिए बाक़ी बचे अड़तीस लीरा। मेरे प्यारे बेरार्डो, तुम बड़े अच्छे आदमी हो और मुझे तुम्हारे लिए बहुत दुःख है, लेकिन इसके लिए तुम्हें फासिस्टों को दोष देना चाहिए।'

तब मेरा लिफाफा उठाकर डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने उसमें से अठहत्तर लीरा निकाले और फिर से हिसाब लगाना शुरू किया—

'पहले क़ानून के अनुसार चालीस प्रतिशत कम किये। यानी पैंतीस लीरा। बाकी बचे अड़तालीस। इनमें से पच्चीस प्रतिशत बेकारों की सहायतावाले गये। यानी बारह। तो तुम्हारे हिसाब में बचे, चौंतीस लीरा।'

स्कार्पोन के लिए भी यही हिसाब दुहराया गया।

तब, उदारता का प्रदर्शन करते हुए डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने अपनी नौकरानी को बुलाकर हमारे लिए शराब लाने की आज्ञा दी। चूँकि नये क़ानून के अनुसार उसके लिए मज़दूरी में से प्रति सैकड़ा कुछ कटनेवाला नहीं था, हम उसे पी गये।

उसी सवेरे बाल्डोविनो सियारप्पा और उसकी पत्नी को डॉना ज़िज़ोला ने मिलने बुलाया था और वे शहर आये थे। बाल्डोविनो ने डॉन कार्लो माग्ना से ज़मीन का एक टुकड़ा लगान पर ले रखा था और कुछ दिन पहले ही लगान भरा था। डॉना ज़िज़ोला को लगान कम मालूम हुआ; क्योंकि पिछले साल बाल्डोविनो की स्त्री लगान के साथ ऊपर से दो दर्जन मुर्गी के अण्डे भी ले गई थी। डॉना ज़िज़ोला का कहना था कि प्रथावाले क़ानून के अनुसार उसे प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे भी मिलने ही चाहिएँ।

हमें जन-मित्र के ठीक दरवाजे के सामने बीच सड़क पर बाल्डो-विनो सियारप्पा अपनी घरवाली को पीटता मिला। वे दोनों डॉना ज़िज़ोला से मिलकर आ रहे थे और उन्हें प्रथावाले क़ानून के अनु-सार प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे देना मंजूर करना पड़ा था।

डॉना ज़िज़ोला को दो दर्जन अण्डे भेंट देने की सूझ बाल्डोविनो की ही थी, परन्तु अण्डे उसकी स्त्री ले गई थी और वहाँ उसने खुलासा नहीं किया था कि यह केवल एक बार की, अगले साल नहीं दुहराई जानेवाली, विशेष भेंट है। मतलब यह कि सारा कसूर उसकी स्त्री, का था। यों प्रथावाले क़ानून के अनुसार डॉना ज़िज़ोला को इस साल और दूसरे साल और आनेवाले कई सालों तक, वास्तव में बाल्डोविनो के जीवन-भर और बाद में उसके बेटे के जीवन-भर, उस कम्बख्त ज़रा-से ज़मीन के टुकड़े के लिए लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे पाने का अधिकार था।

एक बात बिलकुल स्पष्ट थी। प्रतिदिन ज़मींदारों के पक्ष में नये क़ानून बनते थे और जितने भी पुराने क़ानून किसानों के पक्ष में और उन्हें लाभ पहुँचानेवाले थे, केवल वेही रद्द कर दिये जाते थे। दूसरे चालू रहते थे।

इस तरह प्रथावाला क़ानून यदि वह किसी अच्छी प्रथा के बारे में होता, जैसे कि किसान को ठहराई हुई मजदूरी देना, तो मिटा

दिया जाता था ; जब कि प्रथावाला क़ानून यदि वह किसी बुरी प्रथा के बारे में होता, जैसे कि भेंट को 'अनिवार्य' करना, तो चालू रहता था ।

पुरानी चाल के दूसरे जमींदारों की तरह, एक पुरानी प्रथा के अनुसार डॉना जिज़ोला के पास असामियों द्वारा लाये जानेवाले अण्डे नापने की एक बाली थी। जो अण्डे इस बाली से छोटे होते और उसमें से आसानी से निकल जाते, उन्हें वह बाक़ायदा लौटा देती थी। अब बाली उस जमाने की थी जब मुर्गियाँ आज से ज्यादा बड़े अण्डे देती थीं और डॉना जिज़ोला अकसर छोटे अण्डे लौटाकर उनके स्थान पर निरन्तर बड़े अण्डों की माँग करती थी। लेकिन मुर्गियाँ पहले जैसे बड़े अण्डे नहीं देतीं, तो क्या यह भी किसान का अपराध था ?

उस समय तक गिर्जाघर की रखवाली करनेवाले त्योफिलो ने डॉन अबाक्च्यो के लिए फाण्टामारा आकर वहाँ वालों के लिए 'मॉस'— प्रार्थना—कहने का चन्दा जमा कर लिया था। चन्दा दस लीरा इकट्ठा हुआ था, लेकिन डॉन अबाक्च्यो ने यह कहकर आने से इन्कार कर दिया कि मॉस कहने की दक्षिणा बढ़ गई है और जब तक दस लीरा और न भेजे जायँगे तब तक वह न आयेगा। दूसरे दस लीरा बड़ी कठिनाई से पाई-पाई कर जमा हुए और तब एक रविवार को सबेरे डॉन अबाक्च्यो मॉस कहने आया।

गिर्जाघर धूल और जालों से भरा हुआ बड़ी बुरी दशा में था, दीवालें सीली होकर उधड़ रही थीं।

वेदी पर युचारिस्ट की तस्वीर ही एक मात्र सुन्दर चीज थी। ईसा अपने हाथ में एक सफेद रोटी का टुकड़ा लिये हुए थे। वह कह रहे थे—

'यह मेरा शरीर है।'

दूसरे शब्दों में, सफेद रोटी मेरा (ईश्वर का) शरीर है। सफेद रोटी परमात्मा की सन्तान है। सफेद रोटी सत्य और जीवन है।

ईसा न तो मक्का की रोटी की ओर जिसे किसान खाते हैं और न पादरी के, रोटी की बजाय अर्पण किये हुए बेकस और बेस्वाद फुलके की ओर इंगित कर रहे थे। ईसा अपने हाथ में एक सचमुच की सफेद रोटी का टुकड़ा लिये हुए थे और कह रहे थे—'यह (सफेद-रोटी) मेरा शरीर है।'

उनका मतलब ईश्वर-पुत्र के शरीर से था, जो सत्य और जीवन है। उनका मतलब था : 'जिसके पास सफेद रोटी है उसके पास मैं (ईश्वर) हूँ।' जिसके पास सफेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्का की बनी रोटी है, वह ईश्वर की कृपा से वंचित है ; ईश्वर को नहीं जानता है, सत्य को नहीं जानता है, जीवित नहीं है। जिसके पास सफेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्का की बनी रोटी है मानो उसके लिए ईसा का अवतार ही नहीं हुआ, मानो उसके लिए उद्धार—मुक्ति—अभी आना बाक़ी है।

हम अपने गेहूँ के बारे में सोचे बिना कैसे रह सकते थे ? साल-भर के कठिन परिश्रम के बाद हमने उसे पैदा किया था और जब वह पका भी नहीं था, बैंक ने उसे हमसे मई के महीने में ही छीन लिया था। हमने एड़ी-चोटी का पसीना एक करके उसे उत्पन्न किया था, लेकिन वह हमारे खाने के लिए नहीं था। वह शहर जाने को था, जहाँ सब उसे खायँगे, कुत्ते और बिल्लियाँ तक, लेकिन हम नहीं खा सकते थे। हमारे खाने के लिए तो वही मक्का की रोटियाँ थीं।

'यह मेरा शरीर है।' वेदी पर से यह कहते हुए ईसा मक्का की रोटी के एक टुकड़े की ओर नहीं, परन्तु सफेद रोटी के एक टुकड़े की ओर संकेत कर रहे थे। और परमपिता के इन शब्दों 'आज हमें हमारी रोटी दे', का मतलब मक्का की रोटी से नहीं, अपितु गेहूँ की रोटी से ही था।

अपने देशवासी किसानों की क्षुधा-निवृत्ति के लिए मछलियों के साथ जो रोटी ईसा के चमत्कार से बढ़ गई थी, वह मक्का की नहीं, अपितु गेहूँ की ही रोटी थी।

ईश्वर के नैवेद्य की प्रार्थनावाली रोटी :

ओ स्वर्ग की (परमात्मा की) सजीव रोटी

मक्का की बनी हुई रोटी नहीं है, अपितु गेहूँ से बनी हुई रोटी है (गेहूँ जो देहात में उगता है, परन्तु शहर में इस्तेमाल किया जाता है)।

इंजिल से प्रभु ईसा के चार चमत्कारों का पाठ सुनाने के पहले डॉन अबाक्च्यो ने हमारे सामने सैन बेरार्डो के बारे में एक छोटे-से धर्मोपदेश का प्रवचन किया।

सैन बेरार्डो एक किसान था, और वह सदा ही किसानों का सन्त रहा है। अपने जीवन-काल में जो अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण अलौकिल कर्म उसने किया था, वह था एक दुर्भिक्ष के साल पेसिना के किसानों में बहुत-सी रोटियाँ बाँटना। इसलिए उसे सफेद रोटियों का, गेहूँ से बनी रोटियों का सन्त भी कहते हैं।

एक अभावपूर्ण जीवन के बाद बुढ़ापे में सैन बेरार्डो की मृत्यु हो गई। ऐसा कहा जाता है कि मरने के बाद जब वह न्यायासन के सामने लाया गया तो सर्वशक्तिमान् ने, जो उसे जानते और उसपर प्रसन्न थे उसे गले से लगाया और कहा—

'तुम जो कुछ चाहो, तुम्हें मिल सकता है। अपनी इच्छित वस्तु माँगने में हिचकिचाओ मत।'

यह वर सुनकर सैन बेरार्डो बहुत ही अस्थिर हो गया।

उसने डरते-डरते पूछा—क्या मैं कोई भी चीज माँग सकता हूँ ?

सर्वशक्तिमान् ने उत्साहित करते हुए कहा—जो तुम चाहो। मैं स्वर्ग का स्वामी हूँ। यहाँ मैं जो चाहूँ, कर सकता हूँ। यहाँ कोई पोप नहीं है। फिर, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम जो कुछ माँगोगे, तुम्हें मिल जायगा।

लेकिन सैन बेरार्डो को अपनी इच्छा प्रकट करने का साहस नहीं हुआ। वह डरता था कि कहीं उसकी अपरिमित इच्छाएँ परमात्मा को क्रुद्ध न कर दें। परमात्मा को ओर से काफी समझाने-बुझाने और यह आश्वासन मिल जाने के बाद कि वह अप्रसन्न नहीं होंगे तब कहीं सैन बेरार्डो ने अपनी इच्छा प्रदर्शित की।

वह बोला—हे प्रभु, मुझे सफेद रोटी का एक बड़ा टुकड़ा प्रदान कीजिए।

ईश्वर ने अपना वचन निभाया और अप्रसन्न नहीं हुए, अपितु उस किसान सन्त को गले लगाकर रोने लगे। तब, अपनी घन-गम्भीर ध्वनि में उन्होंने बारह देवदूतों को बुलाकर आज्ञा दी कि सैन बेरार्डो को स्वर्ग की सर्वश्रेष्ठ सफेद रोटी दी जाय।

यह आज से चार सौ वर्ष पहले की बात है। इसके बाद कोई किसान स्वर्ग में नहीं गया।

सैन बेरार्डो की सच्ची कथा यह है, जो हमारे यहाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। तो भी पादरी इसे दूसरे ढंग से सुनाते हैं। वर्तमान पादरियों के अनुसार स्वर्ग में खाना-पीना नहीं होता। स्वर्ग में तुम बिना खाये ही परमेश्वर के दर्शनों से आनन्दित हो सकते हो। यदि यह सच है, तो पृथ्वी पर खाने का एक यह भी अतिरिक्त कारण मालूम पड़ता है। डॉन अबाक्च्यो भी प्रत्यक्ष रूप से ऐसा ही सोचता था, क्योंकि वह ग़जब का पेटू था; और मानो एक अनन्त-कालीन उपवास की प्रतीक्षा में आवश्यकता से अधिक मुटाने का प्रयत्न कर रहा था।

परमात्मा फाण्टामारा की रक्षा करे, इसके लिए एक विशेष अभिषेक—अनुष्ठान—की आवश्यकता के बारे में सुझाते हुए डॉन अबाक्च्यो ने अपना धार्मिक प्रवचन समाप्त किया।

वह बोला—'मॉस अच्छी चीज है लेकिन वह काफी नहीं है। मॉस आधे घण्टे में समाप्त हो जाता है। यदि किसी महत्त्वपूर्ण मुकदमे के बारे में वकील से बात करनी हो तो केवल एक बार बात कर लेने से सन्तोष नहीं होता। परमात्मा के विषय में भी ठीक ऐसा ही आग्रह आवश्यक है। परमात्मा अवश्य ही दयालु है, परन्तु उसे भी अपनी प्रार्थना सुनना अच्छा लगता है। विशेष अनुष्ठान के लिए एक पुरोहित का लोगों के खर्च से नौ दिन तक फाण्टामारा में ठहरना आवश्यक होगा। कुल मिलाकर पचास लीरा के लगभग खर्च...'

'खर्चा, खर्चा, हमेशा खर्चा।' बेराडो जोर से चिल्लाया और गिर्जा-घर से बाहर चला गया। बाकी के आदमियों ने भी उसका अनुसरण किया।

डॉन अबाच्च्यो ने भजन शुरू कर शीघ्रता से मॉस समाप्त किया और अपना लबादा और उपवस्त्र उतारकर खिसियाता हुआ—पाँवों में दुम दबाये कुत्ते की तरह—पूजागृह से निकल गया।

जब साल अच्छा होता है तब पादरी भी अच्छा काम करते हैं। वे मॉस कहते हैं, अभिषेक-अनुष्ठान करते हैं, ईसा की स्मृति में लाई जानेवाली पवित्र रोटी और शराब (होली कम्युनियन) ग्रहण करते हैं, लोगों का धार्मिक-क्रिया के अन्तर्गत परिमार्जन करते हैं, और अन्त्येष्टि-क्रिया करवाते हैं। और यदि वर्ष अच्छा है तो ठीक है, लेकिन यदि देश में दुर्भिक्ष है तो बेचारा पादरी क्या करे?

ऐसे समय आपस में एक दूसरे से झगड़ा करना ही किसानों का दुःख से एक मात्र छुटकारा है।

जिसकी किसी से अनबन न हो, ऐसा एक भी घर फाण्टामारा में निकलना मुश्किल ही था। भयंकर झगड़ों के लिए ज़रा-सा बहाना काफी होता था। झगड़े दिन में औरतों के बीच शुरू होते थे और साँझ को, जब आदमी काम पर से लौट आते तो फिर भभक उठते थे। ज़रा-सी खमीर जो उधार लेकर नहीं लौटाई गई हो, या एक ईंट, या एक झब्बी, या एक रकाबी, या लकड़ी का एक टुकड़ा, या मुर्गी का एक बच्चा, या ज़रा-सी घास उन झगड़ों के निमित्त होते थे।

जब अभाव होता है तो दिन में बीसियों चीज़ें झगड़ने के लिए निकल आती हैं। लेकिन सब चीज़ों में खास झगड़े की जड़ थी नाले का पानी।

सड़क सुधारनेवालों ने शीघ्रता से नई खाई खोद डाली थी। जिस दिन पानी का हिस्सा—बाँट—किया जानेवाला था, फाण्टामारा के वे सब किसान, जिनके पास सींचने को खेत थे, बँटवारा देखने गये।

पुराने बहाव की ओर जानेवाले और ठेकेदार की ओर जानेवाले

पानी का उचित नियन्त्रण करने के लिए जहाँ से पानी बाँटा जानेवाला था, उस जगह दो मोरियोंवाला एक बाँध बाँधा गया था। हम अभी तक उलझन में थे कि 'प्रत्येक को तीन चौथाईवाला' वह रहस्यमय बँटवारा कैसे किया जायगा ?

लगभग एक सौ कड़ाबीनवाले शहर से आये और सड़क पर तैनात कर दिये गये। एक दस्ते ने आकर हमें नाले से दूर अंगूर के बगीचों की ओर खदेड़ दिया। हमने पहले कभी इतने सैनिक नहीं देखे थे, इसलिए हम बिना विरोध किये हट आये।

थोड़ी देर बाद फैसिस्ट स्वयंसेवकों (मिलिश्या) का एक जत्था और सम्मानित अतिथि आये। उसमें ठेकेदार, दस्तावेज़ों का तस्दीक़-अफ़सर, डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा विचारक, डॉन सुकावासियो, डॉन सिकोन, डॉन पॉम्पोनियो, डॉन तारादेलाँ, काली कमीज़ें पहिने माननीय पेलिनी और अन्य कई भद्र पुरुष थे, जिन्हें हम नहीं पहिचानते; और सबके पीछे फिलियो इलवेलो और इन्नासेञ्ज़ो ला लेग्गी थे।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा सीधा हमारी ओर आया, हममें से प्रत्येक के साथ हाथ मिलाया और हमसे कहा कि हमारे लाभ के लिए हम सब कुछ उस पर छोड़ दें। यह तय हुआ कि पानी का बँटवारा देखने के लिए हम बड़े-बूढ़ों की एक कमेटी बनायें। पॉञ्ज़ियो पिलाटो, ग्यासोबी लोसुर्डो और मुझे मिलाकर तीन जनों की एक कमेटी बनी। दूसरे किसानों को सैनिकों के कतार के पीछे सड़क पर खड़े रहने की आज्ञा दी गई।

सब तैयारियाँ हो जाने पर दस्तावेज़ों का तस्दीक़-अफ़सर हमारी ओर आया और नाले के बँटवारे के सम्बन्ध में फाण्टामारा के लोगों और ठेकेदार के बीच जो समझौता हुआ था, उसे पढ़ सुनाया।

उसने कहा—समझौता बिलकुल स्पष्ट है। पानी का तीन चौथाई पंचायत द्वारा बनाई हुई नई खाई के रास्ते और बाकी बचे हुए का तीन चौथाई उसी पुराने नाले से बहता रहेगा।

पॉञ्ज़ियो पिलाटो ने चिल्लाकर कहा—यह ग़लत है। समझौता

कहता है कि प्रत्येक को तीन चौथाई, यानी आधा आधा, यानी तीन चौथाई हमें और तीन चौथाई ठेकेदार को। हरएक आदमी को उसका उचित हिस्सा !

'नहीं, नहीं, नहीं !' ग्यासोबी लोसुर्डो भी चिल्लाने लगा। 'समझौता कहता है कि पानी का तीन चौथाई हमारे लिए है, और यदि ज़्यादा बचता है तो; क्योंकि हर हालत में बहुत थोड़ा पानी बाक़ी बचता है।'

मैंने कहा—प्रत्येक को तीन चौथाई एक बिलकुल वाहियात बात है। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी बात नहीं सुनी। सच तो यह है कि पानी फाण्टामारा का है और वह फाण्टामारा के ही अधिकार में रहना चाहिए।

सैनिकों की कतार के पीछे, सड़क पर खड़े हुए किसान हमारे चिल्लाने और भंगिमाओं से यह समझकर कि पानी का बँटवारा हमारे प्रतिकूल होने जा रहा है, शोर मचाने लगे। खासकर राफेन स्कार्पोन अपने ऊधमी साथियों के साथ पागल की तरह चीखने लगा।

तब ठेकेदार ने यह घोषणा की :

'चूँकि फाण्टामारा-वासियों ने एक क्रोधात्मक प्रवृत्ति अख्तयार की है और पानी के बँटवारे के समय उपस्थित रहनेवाली कमेटी के सदस्यों का आपस में ही विरोध है, मैं पंचायत के प्रधान की हैसियत से मिलिश्या के अधिनायक माननीय पेलिनो और डॉन सर्कोस्टान्ज़ा को फाण्टामारा का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त करता हूँ।

छः कड़ाबीनवाले आकर हमें फाण्टामारा के दूसरे आदमियों के पास जब सड़क पर ले जाने लगे तो डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने पुकारकर कहा—

'शान्त हो ! शान्त हो ! मेरा विश्वास करो।'

नाले के पास जो कुछ हो रहा था उसे कड़ाबीनवालों की कतार के पीछे से देखना कठिन था। यों फाण्टामारा के अन्य निवासियों के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त होकर हमें मन-ही-मन एक तरह की प्रसन्नता ही

हुई। डॉन सर्कोस्टाञ्जा जैसे पढ़े-लिखे आदमी द्वारा हमारे स्वार्थों का रक्षित होना कहीं ज्यादा ठीक था।

पहले दस्तावेजों का तस्दीक़-अफ़सर, एक राज और बेलचे लिये हुए चार मजूर नाले पर पहुँचे। माननीय पेलिनो और डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने बारी-बारी से राज के साथ काफी देर तक सलाह-मशविरा किया।

सड़क के ऊँचे किनारे और पानी को नियन्त्रित करनेवाली नालियों के आस-पास खड़े कड़ाबीनवाले और अफसरों के झुण्ड के कारण हम 'प्रत्येक को तीन चौथाई' की व्याख्या कार्यान्वित होते नहीं देख सकते थे। लेकिन, कोई सौ गज नीचे जहाँ नाला ग्यासिण्टो बार्लेटा और पैवासिस्टो के बग़ीचे की ओर मुड़ता था, हम उसके बहाव को देखकर मालूम कर सकते थे कि हमारा पानी कितना कम हुआ है और कितना बचा है। इसलिए हम सबकी दृष्टि उसी स्थान पर केन्द्रित हो रही थी। हम ध्यान-पूर्वक देखते रहे और देखते रहे और कुछ ही गज़ों की दूरी पर अफ़सर तथा हमारे प्रतिनिधि जो कुछ कर रहे थे, उसके बारे में अनुमान लगाने का प्रयत्न करते रहे।

पहले-पहल राफेल ने सतह से पानी कम होते (उतरते) देखा। हममें से सभी का यह विश्वास था कि हमारे लिए पहले जितना पानी नहीं ही रहने दिया जायगा, लेकिन जब पानी सचमुच ही कम होते दीखा तो हम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और ठेकेदार तथा उसके मेहमानों को गालियाँ देने लगे।

हम 'चोर! चोर!' चिल्लाने लगे।

फ़िलोमेना क्वाटर्ना, क्च्युटा, कानारोज़ो की छोरी, गिडिटा स्कार्पोन, लिज़ाबेता लिमोना और दूसरी कई लुगाइयाँ घुटनों पर बैठकर चिल्लाने लगीं—

'भगवान् करे और इनकी आँखें फूट जायँ!'

'अरे हत्यारो, हमारा पानी चुराया है तुमने। राम करे और तुम्हारा उतना ही खून सूखे!'

'राम करे और तुम्हें मन-मन आँसू बहाना पड़े !'

'तुम्हारे पेट में मेंढ़क हो जायँ, तुम्हारे ! राम करे, तुम्हारे पेट में हाथ-हाथ भर के कीड़े पड़ें और डींडू निकलें ।'

'तुम्हारा सत्यानाश हो जाय रे तुम्हारा, और राम करे तुम्हारे छोरा-लुगाई मरें !'

'भगवान करे और हम दुःखियों की वाणी फले !'

इस बीच पानी सतह से इतना अधिक कम हो गया कि पेंदे में के कंकड़, सेवार और घास तक दिखाई पड़ने लगी ।

हमने डॉन अबाक्च्यो को कहते सुना—बँटवारा हो गया है ।

'हमारा सारा पानी ! उन्होंने हमारा सारा पानी ले लिया है ! हमारा सब पानी !' हम फिर चिल्लाने लगे । राफेल स्कार्पोन और वेनेर्डो सेण्टो, दूसरे युवकों की सहायता से कड़ाबीनवालों की कतार को धक्का दे-देकर नाले की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगे । सैनिक अपनी रक्षा के लिए हमें राइफलों के कुन्दों से मारने और डपटने लगे—पीछे हटो ! पीछे हटो !

इतने में डॉन सर्कोस्टाञ्जा की आवाज शोरगुल के ऊपर सुनाई दी—'शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ, तुम्हारे स्वार्थों की रक्षा करने के लिए मैं इधर हूँ । नासमझी से काम मत करो । सब मेरे भरोसे छोड़ दो !'

फिर हमारी ओर सड़क के किनारे-किनारे आकर वह अपने, सदा की तरह, बँधे-सधे शब्दों में कहने लगा—

'क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं रहा ? मुझ पर विश्वास नहीं होने से ही तो तुम्हारा नुकसान हो रहा है । क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे चिल्लाने और जोर-जबर्दस्ती करने से तुम्हें कुछ मिल जायगा ?'

तब ठेकेदार की ओर मुड़कर वह बोला—

'इन लोगों का असन्तोष न्याय-संगत है । कोई समझौता निकालना चाहिए । मैं आपकी मानवता से प्रजा-हितैषिता से 'अपील' करता हूँ । फाण्टामारा के इन लोगों का उचित आदर किया जाना चाहिए । नाले

के लिए नया रास्ता बनाने का खर्च पंचायत ने बर्दाश्त किया है। जो हुआ सो हुआ। ईसा का एक कथन है, जो सत्य है, सत्य है...'

डॉन अबाक्च्यो ने बीच में कहा—बिलकुल ठीक।

'इसलिए मेरी राय है कि एक अवधि मुकर्रर कर दी जाय जिसके बाद नाला पूरी तरह से फाण्टामारावालों को मिल जाना चाहिए। इससे फाण्टामारा-वासियों को सन्तोष हो जायगा। उनकी हानि न्याय-संगत लेकिन अनन्त नहीं है! अच्छा, तो कोई अवधि का समय सुझाये।

'पचास वर्ष!' ठेकेदार ने सुझाया।

एक घृणा-मिश्रित चिल्लाहट से हमने उसके इस बुरे प्रस्ताव का विरोध किया।

'हमारे गले काट लो; हमें जेल में डाल दो। चोर! लुटेरे!'

डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने फिर शान्ति स्थापित की और ठेकेदार की ओर मुड़कर कहने लगा—

'फाण्टामारा-वासियों की ओर से मैं पाडेस्टा का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता। पचास साल बहुत ज्यादा है। हमें इससे छोटी, बहुत ही छोटी अवधि निश्चित करनी चाहिए।'

'चालीस वर्ष।' डान अबाक्च्यो ने कहा।

'पैंतीस।' माननीय पेलिनो का प्रस्ताव था।

'पच्चीस।' दस्तावेजों के तस्दीक़-अफ़सर ने राय दी।

लेकिन प्रत्येक नये सुझाव की किसानों ने चिल्लाकर अवमानना की।

डॉन सर्कोस्टाञ्जा फिर आगे आया।

'फाण्टामारा के परिश्रमी और भले लोगों की ओर से मुझे एक दूसरा प्रस्ताव रखने की आज्ञा दीजिए। मेरा प्रस्ताव दस लस्टर (प्रकाश) की अवधि का है। मैं पाडेस्टा की दयाशीलता से यह महान त्याग स्वीकार करने की 'अपील' करता हूँ।'

हमारी खातिर इतना त्याग करने के लिए डॉन तारोंदेला, डॉन सिकोन, डॉन पाम्पोनियो, डॉन लुकाबासियो और विचारक ठेकेदार को घेरकर गिड़गिड़ाने लगे।

काफी आग्रह के बाद ठेकेदार ने दस लस्टर स्वीकार कर लिया।

एक काग़ज़ निकाला गया और दस्तावेज़ों के तस्दीक़-अफ़सर ने डान सर्कोस्टान्ज़ा के सुझाये हुए शब्द उसपर लिख लिये और तब उस पर ठेकेदार के दस्तख़त करवाये गये और फाण्टामारा की ओर से स्वयं उसने तथा माननीय पेलिनो ने हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए दस्तख़त किये।

[सच पूछा जाय तो हममें से यह कोई नहीं जानता था कि दस लस्टर कितने होते हैं।]

—आठ—

फाण्टामारा में इस विषय पर कि दस लस्टर कितने हो सकते हैं, काफी वाद-विवाद हुआ।

पोर्टाप्या के नायक के खयाल से दस लस्टर का मतलब सौ वर्ष से था; लेकिन बाल्डीसेरा का कहना था कि नहीं दस शताब्दियों से है।

मेरीटा सार्सानेरा ने भी अपनी बात कही। वह बोली—'क्या दस महीने नहीं हो सकते?' लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

फाण्टामारा के लिए हर हालत में दस लस्टर का मतलब था भूख। पहाड़ी के नीचे के बग़ीचे और खेत, जिन्हें पहले नाले का पानी सींचा करता था, अब अधिकाधिक उजाड़ दीखने लगे थे। ऐसा लगता था कि ईश्वर भी हमारे विरुद्ध ठेकेदार के गुट्ट में शामिल है, क्योंकि मई का महीना बीत चला था और अभी तक वर्षा आरम्भ नहीं हुई थी।

डॉन अबाक्च्यो ने इस अवसर से लाभ उठाकर अनुष्ठान करने की बात फिर से दुहराई; लेकिन अबकी सबसे पहले गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाले त्योफिलो ने ही जोरदार शब्दों में विरोध किया।

नीचे मैदान में सारी फसल धीरे-धीरे सूख चली थी। सूखी, झुलसी जमीन में बड़ी-बड़ी दरारें दिखने लगी थीं। पॉन्ज़ियो पिलाटो और एण्टोनियो रनॉक्च्यो के मक्का के खेत दूर से हरे-हरे दीखते थे—

पर केवल हरे दीखते ही थे। मक्का की डाँठें तो बड़ी-बड़ी हो गई थीं, पर भुट्टे कहीं-कहीं और छोटे-छोटे और जरा-जरा से दानोंवाले लगे थे। ज्यादा-से-ज्यादा उनका उपयोग जानवरों के चारे के रूप में हो सकता था।

मेरे, माइकेल जोम्पा और बाल्डोविनो स्यारपा के खेतों की हालत तो, जिनमें फलियाँ बोई गई थीं, और भी खराब थी। फलियाँ धूप में सूखकर घास-जैसी हो गई थीं। ग्यासिण्टो बार्लेटा, बेनेर्डी सेण्टो, एण्टोनियो ब्रास्योला और पेपासिस्टो के खेतों पर तो मानो पिघला हुआ लावा ही फिर गया था।

फाण्टामारा के लिए इसका अर्थ था भूखों मरना।

साधारणतया हमारी मालिकी की या पट्टे की जमीन से होनेवाली उपज कर और लगान चुकाने भर को होती थी जब कि सिंचाई के खेतों कि उपज सर्दी भर खाने को मक्का की रोटी और चटनी-भाजी पुराती थी। हमारे पानी की चोरी ने हमें सर्दियों में बिना चटनी-रोटी का करके छोड़ दिया था। मानवीय दृष्टिकोण से यह असम्भव था। इतना होते हुए भी हममें से एक ने भी आशा नहीं छोड़ी थी। लेकिन हम किसके पास जाते?

प्रत्येक को तीन-चौथाईवाले मामले के ऊपर इस दस लस्टरवाली चालबाजी ने कुलीनों में हमारे रहे-सहे विश्वास को भी नष्ट कर दिया था। दोनों अवसरों पर जिसे अपनी रक्षा का भार सौंपा था उसी आदमी ने हमें जान-बूझकर धोखा दिया था। ऐसा कोई नहीं था जिसका हम विश्वास करते! हम अपनी गुहार सुनाने कहाँ जाते?

इससे होनेवाली हमारी हानि दूसरों को समझाना बहुत कठिन है। किसी दूसरे दल के छल-कपट से रक्षा पाने, या विदेश जाने की आज्ञा प्राप्त करने, या अपने सैनिक लड़के की छुट्टी मंजूर करवाने, या शादी-गमी के मामले में सलाह लेने या और किसी मौक़े पर सहायता के लिए यदि किसान की एक या दूसरे दल तक (अकसर जिनका नेता कोई वकील होता) पहुँच नहीं होती, तो वह अपने-आपको धरती पर के कीड़े के समान अरक्षित समझता है।

इसलिए सभी किसान हमेशा शिक्षित समाज के किसी ऐसे सदस्य की, और खासकर वकील की, कृपा-दृष्टि प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जो काम पड़ने पर अपने किसी पदाधिकारी साथी के प्रभाव का सब प्रिफेक्ट के यहाँ और सब प्रिफेक्ट के प्रभाव का प्रिफेक्ट के यहाँ और इस तरह ठेठ रोम में सरकारी दफ्तरों तक उपयोग करवा सके। पढ़े-लिखे लोग इस लम्बे-चौड़े पेंचीदगी-पूर्ण षड़यन्त्र को शासन और राज्य कहते हैं। हमने पहले कभी इसे इतनी स्पष्टता से नहीं देखा था, परन्तु अब हमारी आँखें खुल गई थीं।

पहले फाण्टामारा का कोई भी किसान डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा को साथ लिये बिना छोटे-मोटे कामों के लिए भी, जैसे जन्म का प्रमाण-पत्र ही लेने, दफ्तरों में अकेले जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। यदि अकेला चला जाता तो उसी दम धक्के मारकर उसे बाहर निकाल देते थे। जनरल बाल्डीसेरा को याद है कि शुरू-शुरू में जब रोम और पेसारा के बीच रेलगाड़ी चली तो फाण्टामारा के लोग जब-जब टिकट खरीदने जाते, तो पूरे किराये के साथ डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा का एक विजिटिङ्ग कार्ड भी गम्भीरतापूर्वक पेश करते थे। आखिर तो, रेलगाड़ी सरकार की थी और सरकार का किसानों पर ऐसा क्या अनुग्रह था? कुछ भी नहीं। लेकिन जैसे-जैसे गाड़ियों में यात्रा करने का रिवाज बढ़ता गया और नई रेलगाड़ियाँ निकलती गईं, टिकट बाबू के पास डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा का विजिटिङ्ग कार्ड लेकर जाने की प्रथा भी मिटती गई। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा को जतलाये बिना ही फाण्टामारा के किसानों ने रोम तक की यात्रा की थी। लेकिन बाक़ी के सभी मामलों में बिना कुलीनों के संरक्षण के किसान बिना पानी की मछली-सा असहाय हो जाता है।

हम समाज की स्वाभाविक रचना ही इस तरह की समझते हैं, लेकिन बूढ़े लोगों की स्मृति में और तरह के दिन भी थे। एक वह भी जमाना था कि बिशप को लेकर तीन या चार बड़े-कड़े जमींदार थे, जो दो-तीन सीधे-सादे नियमों के आधार पर और जिन्हें सब कोई समझता था,

सब चीजों पर अधिकार और नियन्त्रण करते थे। तब पिड्माण्टेसी आये; और उन्होंने रोज एक नया क़ानून बनाया, और रोज एक नया अफ़सर नियुक्त किया, और अन्त में यह सब इतना जटिल हो गया कि बिना वकील की सहायता के समझ पाना और काम चलाना कठिन हो गया। यों कहने को क़ानून केवल जमींदारों के ही नहीं, सर्वसाधारण के पक्ष में भी वैसा ही था, लेकिन व्यवहार में इससे लाभान्वित होने के लिए, इससे बचने और इसका अपनी मनोरथ-पूर्ति में उपयोग करने के लिए वकीलों की आवश्यकता बढ़ती गई और बढ़ती ही गई।

मेरे बचपन में शहर में केवल दो वकील थे, जो नोटारी का—दस्तावेज तस्दीक करने का—काम भी करते थे। इस समय चार वकील और आठ नोटारी हैं, और पंच फैसलों में हस्तक्षेप करनेवाले गड़बड़िये मुख़्तारों की तो गिनती ही नहीं। कमाने-खाने के लिए ये क़ानूनबाज जबर्दस्ती दीवानी-फौजदारी के झगड़े कराते हैं; प्रति सप्ताह नये मुक़दमे चलाते हैं और छोटे मुकदमों को खींच-तानकर बड़ा रूप देते हैं। पुराने जमाने में जो झगड़े सरलता से निपट जाते थे, आजकल वकीलों के कारण बरसों चलते हैं, काफी पैसा खर्च करवाते हैं और अपने पीछे भयंकर घृणा-द्वेष छोड़ जाते हैं। वकीलों के कारण ही परिवारों के आपसी सम्बन्धों में तनाव बढ़ता जाता है। वकील हरएक बात में नाक घुसेड़ते हैं। उनके हाव-भाव, उनका स्वर-संपात, उनका कपड़े पहिनने का ढंग, उनकी अभिवादन-प्रणाली उनका खाना और पीना सब कुछ एक विशेष प्रकार का और किसानों को अभिभूत करनेवाला होता है।

एक किसान की चरम आकांक्षा किसी वकील को धर्म-पिता के रूप में पाने की होती है। बप्तिस्मा के दिनों बीसियों किसान बच्चे नये कपड़े पहिने शहर के प्रधान गिर्जाघर में अपनी माताओं के साथ वकीलों को घेरे रहते हैं। प्रत्येक पारिवारिक उत्सव पर, खासकर विवाह-भोज में, वकील सम्मानित अतिथि के रूप में निमन्त्रित किये जाते हैं, जहाँ वे दुलहिन के दायें बैठते हैं।

प्रत्येक दल दूसरे दल के साथ अपने अविरल संग्राम में कुछ उठा न रखता था। प्रत्येक मेयर, या पॉडेस्टा, या पुलिस मैजिस्ट्रेट, या कड़ाबीनवालों के कप्तान, या सब-प्रिफेक्ट, या पब्लिक प्रासीक्यूटर, या स्थानीय डिप्टी को अपनी ओर करने का प्रयत्न करता था। प्रत्येक दल का लक्ष्य म्युनिसिपल या सार्वजनिक दान-फंड हथियाने का होता था। अधिकारारूढ़ होनेवाला दल अपने पिट्ठुओं को नौकरी देता था, अनापशनाप कर लगाता था, सार्वजनिक कामके ठेके उड़ाता था और चुनाव के समय अनुपस्थित तथा मृतकों के नामों की भरमारवाली सूची प्रकाशित करता था।

इन कारणों से सारा-का-सारा गाँव एक ही दल के अधिकार में चला जता था। फाण्टामारा पर सदा डॉन सर्कोस्टाञ्जा अधिकार किये था, डॉन सुकावासियो कोलारमेल को हथियाये था, ओटेना पर डॉन सिकोन, विसेना पर डॉन ताराँदेला और सैन बेनेदेतो पर डॉन पाँम्पोनियो अपना-अपना कब्जा जमाये हुए थे। पुराने पुलिस मैजिस्ट्रेट, कड़ाबीनवाले और कारकून बदले जा सकते थे, परन्तु नये आनेवालों को या तो दल-बन्दी के आगे सिर झुकाना पड़ता था, या त्यागपत्र देना पड़ता था।

प्रतिद्वन्द्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर गाँव-के-गाँव एक दूसरे से लड़ते थे। पेसिना और सैन बेनेदेतो गाँवों की १९१३ में जो एक दूसरे से लड़ाई हुई, वह इसका एक खासा उदाहरण है। प्रतिद्वन्द्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर दोनों गाँवों के किसान एक दूसरे से जो भी हथियार हाथ में आ गया, लेकर लड़े और खूब लड़े। उन्होंने कुएँ जहरीले कर दिये, अंगूर की बेलें काट डालीं, खलिहानों में आग लगा दी और अन्त में गोलियाँ तक चलाईं। रोम से सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा। एक रेजीमेण्ट और कोई सौ घुड़सवार भेजे गये, तब कहीं बड़ी कठिनाई से लड़ाई बन्द हुई। लड़ाई तो समाप्त हो गई थी, परन्तु किसानों में दुश्मनी अभी तक बनी हुई है।

वे ही किसान दल-बन्दियों से परे रहते जिन्हें लाभ-हानि से कोई

सरोकार नहीं होता। यानी बिना खेत-जमीनवाले किसान या वे अपराधी जो बड़े घरों में चाकरी करते, गाँवों की चौकीदारी करते या इधर कुछ दिनों से फैसिस्ट हो गये हैं। ये लोग आँख मूँदकर दल-बन्दियों में नहीं पड़ते।

इधर कुछ वर्षों से हमारी ओर भी देश के अन्य प्रान्तों की भाँति राजनैतिक पार्टियों का संगठन होने लगा है। लेकिन ये नई पार्टियाँ पुरानी दल बन्दियों के नवीन नामकरण के सिवा और कुछ नहीं हैं। ग़रीब किसानों पर अपना सिक्का जमाये रखने के लिए डॉन सर्कोस्टान्ज़ा पीपल्स पार्टी का नेता बन गया और अपने-आपको स्वाधीनता का रक्षक कहता फिरता है। हमारे आगे उसने अपने-आपको बाहरी शोषकों की लूट-खसोट के विरुद्ध मार्सिका का रक्षक घोषित किया था, लेकिन असली शोषक से सामना होते ही उसने बड़ी खूबी से मोर्चा बदल दिया।

डॉन कार्लोमाग्ना और अन्य बड़े-बड़े जमींदारों को अवश्य ही बैंक से भारी हानि उठानी पड़ी थी। बाजार की तेजी-मन्दी और भाव अब उनके नहीं, ठेकेदार के हाथ में है। सरकारी ठेके भी वह उनसे बाक़ायदा छीन लेता है। वे उन्हीं मामलों में अब कुछ कर सकते हैं, जिनकी ठेकेदार कोई परवाह नहीं करता।

बड़े जमींदार एक ओर तो किसानों से बैंक द्वारा होनेवाली अपनी क्षति-पूर्ति का प्रयत्न करते और दूसरी ओर किसानों और पुराने सरकारी नौकरों को उकसाकर उन्होंने ठेकेदार के विरुद्ध एक गुप्त लड़ाई भी छेड़ दी थी। ठेकेदार के प्रति डान सर्कोस्टान्ज़ा और उसके साथियों का बर्ताव बिलकुल जुदे प्रकार का था। ठेकेदार की अपेक्षा अधिक चालाक और ग़रीबों को धोखा देने के पुराने फन में उस्ताद वे किसानों की मनोवृत्ति को ज्यादा अच्छी तरह समझने के कारण नये शासन और किसानों के मामलों में बीचवानी होकर अपना प्रभाव बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन संकट के प्रत्येक अवसर पर डान सर्कोस्टान्ज़ा ने ठेकेदार की ही सहायता की है।

यद्यपि पहले भी डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने अवश्य ही हमें सैकड़ों बार धोखा दिया था, लेकिन हमारे प्रति उसका व्यवहार सदा ही आदरणीय और मित्रतापूर्ण रहा है। वह हमेशा हमसे हाथ मिलाता और जब पिये होता, हमें गले भी लगाता था और हम सदा उसे क्षमा कर देते थे, विशेषकर इसलिए कि हमें उसके संरक्षण की आवश्यकता रहती थी। लेकिन 'प्रत्येक को तीन चौथाई' और 'दस लस्टर'वाली चालबाजियों ने पूरी तरह से हमारी आँखें खोल दीं।

हर कोई हमारे विरुद्ध था। एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता करनेवाले अनेक षड्यन्त्रोंवाली पुरानी सरकार का अन्त हो गया और उसका स्थान एक ही महान षड्यन्त्रवाले नये शासन ने ले लिया।

तो हम किसके पास जाते ?

बाल्डीसेरा कहता फिरता था—वह स्थिति आ गई है कि किसान भूखों मरे और मोची नंगे पाँवों फिरे और कुम्हार के घर की हाँड़ी फूटी ही रहे और जुलाहे के बदन पर कपड़े का तार भी देखने को न मिले। यह बैंक का जमाना है। प्रलय हो रहा है। अराजकवादियों का राज्य है (अधिक सही, कल्कि अवतार हो गया है)।

अपने पानी का अभाव हम सबको खलता था, परन्तु उसे वापिस पाने का उपाय हममें से कोई नहीं जानता था। माइकेल ज़ोम्पा और पाञ्जियो पिलाटो ठेकेदार पर मुकद्दमा चलाने की राय के थे, परन्तु मैं और बाकी के सब इसके विरुद्ध थे। ऐसे मुक़द्दमों का अन्त हम भली प्रकार जानते थे। मुक़द्दमा सौ वर्ष तक चलता, एक मैजिस्ट्रेट के पास से दूसरे मैजिस्ट्रेट के पास मारा-मारा फिरता, अपील-पर-अपील होती, किसानों की एक पीढ़ी की पूरी आमदनी चाट जाता और अन्त में घूम-फिरकर मामला वहीं आता, जहाँ से शुरू हुआ था। मार्सिका का प्रत्येक गाँव अमीरों और ग़रीबों के बीच ऐसे मुकद्दमों से अच्छी तरह परिचित था। उनका फैसला ही यह होता था कि मुक़द्दमा फिर शुरू से चलाया जाय। और यदि हम मुक़द्दमा भी चलाते तो वकील किसे करते ? डॉन सर्कोस्टाञ्जा को ? वह 'प्रत्येक को तीन चौथाई'

और 'दस लस्टर' जैसा कोई दूसरा ही फन्दा निकालता। तब डॉन सुकावासियो को ? या डान ताराँदेला को ? इनके बारे में जितना कम कहा जाय, उतना ही अच्छा।

पानी खोकर कोई भी सन्तुष्ट नहीं था। पूरी फसल खोकर कोई सन्तुष्ट नहीं था। आगामी शीत-काल में चटनी-रोटी भी नहीं मिलेगी, यह विचार सभी को भयावना लगता था।

पाझियो पिलाटो कहता था—यदि चोरी के लिए न्याय नहीं है, दण्ड नहीं है, तो समझो अन्त ही आ पहुँचा है।

एक रात बूढ़े मोची ने कहा—यदि क़ानून तोड़े जाने लगे हैं और उन्हें तोड़नेवाले सर्वप्रथम वे हैं जिनका काम उन्हें मनवाने का है तो समय आ गया है कि जनता की अदालत में जनता के क़ानून से काम लिया जाय।

'जनता का क़ानून क्या है ?'

'ईश्वर उसी की सहायता करता है जो स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होता है।' बालडीसेरा अन्त में बेरार्डो वायला के कटु सिद्धान्तों का समर्थक हो गया था।

किसी ने उसका विरोध नहीं किया।

अपनी जेब से दियासलाइयों की पेटी निकालकर राफेल स्कार्पोन ने कहा—

'यह है जनता का क़ानून।'

बेरार्डो कुछ भी नहीं बोला। अब यह पुराना बेरार्डो ही नहीं रहा था। उसका मन कहीं और था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसका मन बदल गया था। एल्वीरा बिस्तर से उठती नहीं दीखती थी। वह धीरे-धीरे मर रही थी। इतना सब होते हुए भी बेरार्डो बिना किसी लाज-शर्म और लोक-लज्जा की चिन्ता किये एल्वीरा के बूढ़े और लकवे से अपङ्ग पिता के सामने ही उसके साथ रातें बिताने लगा था।

मेरी स्त्री ने जब उससे कहा कि 'तुम उस छोकरी को मार डालोगे' तो उसने केवल कन्धे सिकोड़ लिये।

'दस लस्टर' वाली चालबाजी का उस पर कोई असर नहीं हुआ। पानी वापिस पाने की हमारी सभी योजनाओं के प्रति वह उदासीन ही रहा।

उसने कहा—तुम्हारे लिए बहुत ही बुरा हुआ। मेरे तो सींचने को खेत नहीं है। फिर मैं अब कुछ बच्चा नहीं हूँ और मेरी अपनी समस्याएँ भी हैं।

बेरार्डो के मन में एक ही विचार जम गया था, बाहर जाना, विदेश जाना और वहाँ जानवर की तरह रात-दिन काम करना, दूसरों से दुगुनी मेहनत करना और साल-छः महीने बाद फाण्टामारा लौट आकर जमीन खरीद लेना और शादी करना। किसी दूसरे विषय पर उससे बात करना असम्भव था। अब वह पहलेवाला आदमी ही नहीं रहा था।

उसकी एकमात्र इच्छा थी कि बाहर चला जाय; दस घण्टे, बारह घण्टे, चौदह घण्टे रोज काम करे और एक हजार लीरा कमाकर लौटे।

शहर में काम पाने के बारे में वह अकसर पोटपिया के नायक से बातें करता रहता था।

'मैं बड़ा काम चाहता हूँ; वेश्याओं और दासियों को काम दिलाना नहीं और मान्सिग्नर कैलोगेरो का काम नहीं; और न फैसिस्ट-प्रथा का काम ही। मैं सचमुच का ईमानदारी-पूर्ण काम चाहता हूँ।

नायक ने रोम के कई पतों पर लिखा और वहाँ से जवाब आया कि दस लीरा रोज पर कड़ी मजदूरी का काम मिल सकता है।

बेरार्डो मेरे पास आया और बोला—दस लीरा रोज अधिक नहीं हैं, लेकिन यह औसत मजदूरी होगी। मैं दूसरों से अधिक काम करके अधिक कमा लूँगा। रहा खर्चा-पानी सो मैं अपने पेट पर पट्टे बाँधकर दिन काट लूँगा।

बेरार्डो ने मुझसे सौ लीरा उधार माँगे और मैं इस शर्त पर राजी हो गया कि वह अपने साथ मेरे लड़के को भी ले जाय। बेरार्डो ने इसे स्वीकार कर लिया। एल्वीरा ने भी उसे पचास लीरा और उधार दिये।

रवाना होने से पहले मैं अपने लड़के के बारे में उसे कुछ सूचनाएँ

देने गया। नित्य की तरह वह मुझे रँगाई की दुकान में एल्वीरा के पुवाल के बिछौने के पैताने बैठा मिला।

'मैं नहीं चाहता कि मेरा लड़का वहाँ दस घण्टे रोज से अधिक कड़ा परिश्रम करे; और न मैं यह चाहता हूँ कि वह ऐसी सराय में ठहरे जहाँ बदमाश औरतें आ...'

मैंने बेरार्डो से कहना शुरू ही किया था कि राफेल स्कार्पोन के भीतर घुस आने से व्यवधान पड़ा। उसके कुछ और साथी बाहर ही रुके रहे।

घुसते ही वह बेरार्डो की ओर मुड़कर चिल्लाया—सल्मोना में विद्रोह हो गया है।

बेरार्डो ने पूछा—कैसा विद्रोह ? क्या हलवाइयों ने विद्रोह कर दिया है।

'नहीं, किसान उठ खड़े हुए हैं।' स्कार्पोन ने ऐसी आवाज में उत्तर दिया मानो वह हँसी-मजाक के लिए तैयार नहीं है।

'तुम्हें किसने कहा ?'

'बाल्डीसेरा ने ?'

'बाल्डीसेरा को किसने कहा ?'

'यह गुप्त है।'

'तब यह झूठ है।' बेरार्डो ने निर्णय दिया।

स्कार्पोन ने बाहर जाकर वेनेर्डी सेण्टो से, जो प्रतीक्षा कर रहा था, मोची को बुला लाने के लिए कहा। इस बीच हममें से कोई कुछ न बोला।

काफी कुरेदने के बाद तब कहीं बाल्डीसेरा ने हमें यह बतलाया—

'आज मैं चमड़ा खरीदने शहर गया था। वहाँ चौक में डॉना जिजोला से भेंट हो गई। वह गिर्जाघर से निकल रही थी। तुम जानते ही हो कि छुटपन में मैं उसके बाप के घर काम करता था। इसलिए हमारी आपस में अच्छी जान-पहिचान है, और जब कभी हम मिलते हैं तो ठहरकर थोड़ी देर तक अवश्य बातचीत करते हैं। डॉना जिजोला ने एक धीमी आवाज में मुझसे कहा। स्वयं सेण्टा एन्थोनी ने ही

तुम्हें मेरे पास भेजा है। ज़रा मेरे घर चलो। मुझे तुमसे एक मामले में बात करनी है।

'चमड़ा खरीदने के बाद कर्तव्य समझकर मैं उससे मिलने गया, पर मुझे मालूम नहीं था कि उसने किसलिए बुलाया है। दरवाजा खोलते हुए उसने मुझसे पूछा—'क्या तुमने यह खुशखबर सुनी है? सल्मोना में विद्रोह हो गया है। यहाँ के और अड़ोस-पड़ोस के सभी कड़ाबीनवाले वहाँ भेज दिये गये हैं।' डॉना ज़िज़ोला के अनुसार सल्मोना में भी एक ठेकेदार है, जिसने सभी को तबाह कर डाला है। विद्रोह तीन दिन पहले वहाँ के बाजार में आरम्भ हुआ था और अभी तक चल रहा है। 'क्या इसका यह मतलब नहीं है कि हमारे लुटेरे के पाप का घड़ा भी भर चुका है?' उसका मतलब अवश्य ही हमारे ठेकेदार से था, लेकिन मैंने उत्तर नहीं दिया। उसने मेरे कान में कहा—'दो महीने तक रात-दिन मैंने सेण्टा एन्थोनी की प्रतिमा के आगे मोमबत्तियाँ जलाईं और प्रार्थना की कि उसे कुछ हो जाय, लेकिन उसका अभी तक बाल भी बाँका नहीं हुआ।' मुझे चुप देखकर वह अधिक खुलकर बोलने लगी। 'लड़ाई छेड़ने का ठीक समय यही है। कड़ाबीनवाले सभी सल्मोना में हैं। ठेकेदार के प्रति विद्वेष की लहर चारों ओर फैल रही है। हम केवल संकेत की प्रतीक्षा में हैं। फाण्टामारा के किसान ही हमें अवसर दे सकते हैं। तुम्हें गिर्जाघर के समीप देखकर ही मैं समझ गई थी कि तुम्हें स्वयं सेण्ट एन्थोनी ने भेजा है।' मैंने उसे कहा कि मैं तो चमड़ा खरीदने शहर आया था, परन्तु उसका ध्यान किन्हीं दूसरी बातों पर था। वह बार-बार यही कहती रही—सेण्ट एन्थोनी ने ही तुम्हें भेजा है। आज सबेरे मेरी प्रार्थना के समय सेण्ट ने मुझे आदेश दिया कि 'मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता; केवल फाण्टामारा के किसान ही इस डाकू को दुरुस्त कर सकते हैं।' और गिर्जाघर से निकलते ही तुम मुझे मिले।'

डॉन कार्लो माग्ना की पत्नी ने बूढ़े मोची से यह भी कहा कि यदि फाण्टामारा के किसानों को पेट्रोल या हथियारों की आवश्यकता हो, तो

किसी विश्वासपात्र आदमी के मार्फत ये चीजें भी उन्हें मिल सकती हैं।

बाल्डोसेरा के समाप्त करते ही राफेल स्कार्पोन ने बेराडों की ओर मुड़कर कहा—अच्छा, तो बतलाओ कि अब क्या राय है?

बेराडों ने प्रत्युत्तर में पूछा—तुम्हारा अपना क्या खयाल है?

'यहाँ आने से पहले मैं और लुइजी देल्लाक्रास, एण्टोनियो स्पावेण्टा, बेनेर्डो सेण्टो, गैस्पेरीन और एण्टोनियो जापा आपस में मिल लिये हैं। वे बाहर खड़े हैं। उनकी ओर से मैं कह सकता हूँ कि हमें सल्मोनावालों का अनुसरण करना चाहिए। हमें किसी की मदद की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।' उसने ठेकेदार की कई इमारतें तोड़ने से आरम्भ करके रात में आक्रमण करने की एक योजना भी बना ली थी।

बेराडों ने पूछा—लेकिन तुम यह सब करना किसलिए चाहते हो?

राफेल को गुस्सा आ गया; वह बिगड़ उठा—

'भले आदमी, तुम रहते किस दुनिया में हो? ठेकेदार ने हमारे साथ जो-जो बुराइयाँ की, क्या तुम उन्हें भूल गये? इसके सिवा हमारे आगे और रास्ता ही कौन-सा है? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस बार सर्दियों में खाने को खाक-पत्थर कुछ नहीं है?'

बेराडों ने उसे तो कुछ नहीं कहा, परन्तु बाल्डोसेरा की ओर मुड़कर वैसी ही शान्त और स्वाभाविक आवाज में बोला—

'यदि डॉना जिजोला ठेकेदार से घृणा करती है, तो उसने सेण्ट एन्थोनी से प्रर्थना क्यों की? क्या उसका पति नहीं था? और यदि सेण्ट एन्थोनी डॉन जिजोला पर प्रसन्न हुए हैं तो उन्होंने हमें क्यों बतलाया? क्या उनके पास कोई देवदूत तैयार नहीं था?'

उसी आवाज में स्कार्पोन की ओर मुड़कर वह कहने लगा—

'ठेकेदार के कारखाने जलाकर क्या तुम यह सोचते हो कि सर्दियों में हम उनकी राख से पेट भर सकेंगे? यदि उसके सीमेण्ट, ईंट-भट्ठे और चमड़ा पकाने के कारखानों के कामगार बेकार हो जायँगे तो तुम्हीं बताओ कि हमारा क्या कुछ ज्यादा फायदा हो जायगा?'

तब अपनी आवाज बदलकर वह अपने मन की सच्ची बात कहने लगा—

'देखो, मेरा इन सब बातों से तिल-भर भी सम्बन्ध नहीं। किसी तरह भी देखो, हमारी अवस्था में कोई अन्तर नहीं पड़ता। प्रत्येक आदमी को अपने निजी काम की फिक्र करनी चाहिए। पहले मैंने व्यर्थ के कामों में, जिनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था, काफी सिर खपाया। आज मैं तीस वर्ष का हूँ और मेरे पास अपना कहने को खाली एक पुवाल का बिछौना है। मैं अब बच्चा नहीं हूँ और अब मुझे भी अपना आगा-पीछा सोचना पड़ता है। इसलिए मुझे तंग मत करो।'

'हम तुम्हें तंग कहाँ करते हैं? ठेकेदार ने ही हम सबको परेशान कर रखा है।' स्कार्पोन ने जवाब दिया।

बाल्डीसेरा ने कहा—बिलकुल ठीक है। मुझसे अधिक शान्त और शौनप्रिय दूसरा कोई नहीं मिलेगा। लेकिन अब न तो कानून है और न व्यवस्था, न सरकार है और न न्याय। अब निजी काम की फिक्र करने का समय नहीं रहा है; अब कोई भी शान्तिपूर्वक नहीं रह सकता। यदि न्याय की रक्षा करनेवाले रात में आकर तुम्हारे गाँव की औरतों के साथ बलात्कार करते हैं, तो क्या तुम खड़े रहकर यह कहोगे कि 'इनमें से एक भी मेरी बहू-बेटी नहीं है? यदि न्याय के रक्षक तुम्हारी धरती और पानी छीन लेते हैं और तुम्हें काम करने से रोकते हैं तो क्या तुम यह कहोगे कि 'मेरा इनसे कोई वास्ता नहीं है?'

बेरार्डो सिर हिलाता हुआ चुपचाप सुनता रहा। वह इन तर्कों को अच्छी तरह से जानता था। उसने स्वयं ही जनरल बाल्डीसेरा के सामने सैकड़ों बार इस तरह के तर्क रखे थे। लेकिन अब वह पहले की तरह बच्चा नहीं रहा था। अब वह अकेला फक्कड़ नहीं रहा था और इसलिए पहले की तरह खुशी-खुशी अपना-जीवन और अपनी आजादी दाँव पर नहीं लगा सकता था। अब उसे अपने साथ दूसरे के बारे में भ सोचना पड़ता था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसके विचारों में जबर्दस्त परिवर्तन हो गया था। जब कि सारा गाँव

बेरार्डो के सिद्धान्तों का पक्षपाती हो गया था, ऐन उसी समय उसने उनका परित्याग कर दिया।

'सुनो' वह बोला। 'मैं बिलकुल साफ कह देना चाहता हूँ। तुम्हारे पानी और तुम्हारी जमीन के लिए जेल जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है। मेरी अपनी समस्याएँ ही मुझे परेशान करने को काफी हैं।'

स्कार्पोन और बाल्डीसेरा उठकर चले गये।

'बेरार्डो डर गया है।' स्कार्पोन ने बाहर जाकर प्रतीक्षा में खड़े हुए युवकों से कहा। उसने यह इतनी ज़ोर से कहा कि हम सब सुन लें।

बेरार्डो फाण्टामारा के युवकों का आदर्श था। और वे उसके साथ खुशी-खुशी मौत के मुँह में भी जाने को तैयार हो जाते।

और यह स्पष्ट दीखता था कि उसके बिना कुछ भी नहीं हो सकेगा।

एल्वीरा इस बीच बिलकुल चुपचाप अपने बिस्तरे पर पड़ी रही। वह पहले से अधिक विवर्ण हो गई थी। इस झगड़े के समय उसने क्षण-भर के लिए भी अपनी आँखें बेरार्डो पर से नहीं हटाई थीं। पहले तो इस सन्देह से कि बेरार्डो मजाक कर रहा है, वह उसे कुतूहल से, तब विस्मय से और यह निश्चय हो जाने पर कि उसके कथन में सन्देह की कोई गुञ्जाइश नहीं है, वह उसे भय और चिन्ता से देखने लगी थी। दूसरों की उपस्थिति में उसे उसको रोकने का साहस नहीं हुआ। लेकिन बाल्डीसेरा और स्कार्पोन के चले जाने पर वह अपने को अधिक न रोक सकी और उसे झिड़कने लगी—

'यदि मेरी वजह से तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो, तो तुम्हें याद होना चाहिए कि आज से कुछ वर्ष पहले मैं तुम्हारी ओर इसीलिए आकर्षित हुई थी कि तुम्हारा बहस करने का ढंग दूसरों से न्यारा था।'

जब उसने पाया कि एल्वीरा भी उसके विरुद्ध है तो बेरार्डो पूरी तरह से अपने क्रोध को दबा न सका और उसके मुँह से कोई बहुत कड़ी बात निकल ही जाती, लेकिन उसी समय चुपचाप बिना बिदा तक माँगे चला गया।

जब मैं घर पहुँचा तो आधी रात बीत चुकी होगी। मैंने अपने

लड़के से कहा—कुछ भी हो, कल सवेरा होने से पहले ही तुम रवाना हो रहे हो। इसलिए लेट जाओ और नींद ले लो।

हम सब सोने का प्रयत्न या आँखें मूँदकर सोने का बहाना करने लगे थे। लेकिन नींद किसी को भी नहीं आ रही थी। अभी हम सब जाग ही रहे थे कि कोई दो बजे एकाएक गिर्जाघर के घण्टे की आवाज़ सुनाई दी। घण्टे का पहला और दूसरा ठोका बिलकुल स्पष्ट था, लेकिन उसके बादवाले पहले ठोकों की प्रतिध्वनि-से मालूम हुए।

मेरी पत्नी ने डरकर पूछा—क्यों, तुमने सुना?

मैंने जवाब में कहा—देवीमाता होंगी। चलो, सो जाओ।

वह कोई ठीक जवाब नहीं था। हम तीनों साँस रोके सुनते रहे, लेकिन और कुछ नहीं सुनाई दिया।

शायद आधे घण्टे बाद हमने दो या तीन ठोके और सुने, जो पहले-वालों से काफी धीमे थे।

मेरी स्त्री बिलकुल ही डर गई और उसने फिर पूछा—क्यों, तुमने सुना?

मैंने कहा—आँधी होनी चाहिए, चलो, सो जायें।

लेकिन हवा बिलकुल शान्त थी और आँधी नहीं हो सकती थी। इसके सिवा, तेज-से-तेज दक्षिणी आँधी ने भी कभी हमारे गिर्जाघर के घण्टे नहीं बजाये थे।

थोड़ी देर बाद हमने फिर एक ठोका सुना और वह इतना धीमा था कि यदि हम ध्यानपूर्वक सुनते न होते तो सुनाई नहीं पड़ता।

कुछ कहने की खातिर ही मैंने कहा—उल्लू होना चाहिए।

'उल्लू गिर्जाघर का घण्टा कैसे बजा सकता है?'

'यदि उल्लू नहीं है तो फिर नेवला होना चाहिए।'

'गिर्जाघर के मीनार में नेवला कहाँ से आयेगा?'

'अगर नेवला नहीं है तो फिर कोई डाकिन होगी।' मैं और जवाब ही क्या देता?

फाण्टामारा में उस समय बहुत कम लोग सोये होंगे। और उन

घण्टियों के अकारण बज उठने से जो पड़े-पड़े जाग रहे थे, शायद हमारी ही तरह अटकलें लगाकर मन को समझा रहे होंगे। लेकिन सभी को अपनी-अपनी फिक्र पड़ी थी और कोई भी उठकर यह देखने नहीं गया कि गिर्जाघर की मीनार में कौन है।

आगे जो कुछ हुआ, वह तुम्हें मेरा लड़का कहेगा।

—नौ—

दूसरे दिन सबेरे चार बजे मैं और बेरार्डो फाण्टामारा से शहर, रोम की गाड़ी पकड़ने निकले।

बेरार्डो उदास था। उसने मेरे अभिवादन तक का जवाब नहीं दिया। पर मैंने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैं यात्रा के ठीक प्रारम्भ में ही किसी तरह की अप्रियता नहीं चाहता था।

'क्या तुमने रात में घण्टे की आवाज़ सुनी थी?' वार्तालाप आरम्भ करने के इरादे से मैंने उससे पूछा। मैं मानो हवा से बातें कर रहा था। बाढ़ माता की देवरी के पास पहुँचने से पहले मैंने फिर प्रयत्न किया।

'क्यों, क्या रोम में पानी बरस रहा होगा?' लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

वह लम्बे डग मारता हुआ तेजी से चल रहा था और मुझे उसका साथ बनाये रखने के लिए भागना पड़ता था। शहर में घुसते ही हमने रेलगाड़ी की सीटी सुनी। हम उसे पकड़ने दौड़े, पर वह मालगाड़ी थी और हमारी गाड़ी आने में अभी काफी देर थी।

हम कोई आध घण्टे मुसाफिरखाने में बैठे होंगे कि फाटक पर राफेल स्कार्पोन दिखाई दिया।

बेरार्डो ने उसे नहीं देखने का बहाना किया। वह उसकी ओर पीठ फिरा दीवाल पर टँगी हुई एक सूचना पढ़ने लगा। लेकिन स्कार्पोन सीधा उसके पास आया और बोला—

'त्योफिलो फाँसी लगाकर मर गया है।'

बेराड ,ने उसकी ओर देखा भी नहीं ।

स्कार्पोन कहता ही गया—'जनरल बाल्डीसेरा ने गले में रस्सी बाँधे उसे मीनार की सीढ़ियों पर पाया । उसका शरीर तब तक ठण्ढा नहीं आ था । वह अवश्य ही रात-भर रस्से में लटका रहा होगा ।'

बेरार्डो ने अपना सिर बिना घु ये ही कहा—ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे !

'मैं डान अबाक्च्यो के यहाँ ग था।' मानो स्कार्पोन को बेरार्डो की उपेक्षा पर विश्वास नहीं हो रहा थ 'मैं डॉन अबाक्च्यो के घर से ही आया हूँ । पहले तो उसने मुझे इतना जल्दी जगा देने के लिए खूब गालियाँ दीं और तब साथ चलकर उसकी आत्मा को पाप-मुक्त करने से इन्कार कर दिया । मैंने उससे पूछा—"जिसने आजीवन गिर्जा की सेवा की, ऐसे गिर्जाघर के रखवाले को तुम अन्तिम आशीर्वाद देने से मना ही कैसे कर सकते हो ?" "फाँसी लगाकर आत्म-हत्या करनेवाला सीधा नर्क में जाता है और यदि वह गिर्जाघर का रखवाला है तो साक्षात् रौरव नर्क में ।" डॉन अबाक्च्यो ने यह जवाब दिया ।

बेरार्डो अविचलित ही रहा ।

उसने एक बार और कहा—उसकी आत्मा को शान्ति मिले ।

स्कार्पोन बोलता ही रहा—'हम त्योफिलो को गिर्जाघर के ठीक बीच में रखनेवाले हैं । यदि पादरी नहीं आता है, तो हम उसके बिना ही काम चला लेंगे । यदि वह कड़ाबीनवालों को भेजता है तो हम उन्हें रोकेंगे । हम त्योफिलो को गिर्जाघर के ठीक बीच में चौबीस घण्टों तक रखा रहने देंगे, जिससे ईसा, देवीमाता, सैन रोको, सेण्ट एन्थोनी, जोसेफ़, सैन बेरार्डो और दूसरे देवी-देवता उसे देख सकें । वे देख लेंगे कि हम कैसी कठिनाइयों के बीच आ फँसे...'

बेरार्डो ने दुहराया—उसकी आत्मा को शान्ति मिले !

हमारी गाड़ी आ पहुँची ।

एकाएक स्कार्पोन ने कहा—मत जाओ !

बेरार्डो ने साश्चर्य पूछा—क्यों ?

स्कार्पोन ने दुहराया—मत जाओ।

बेरार्डो गाड़ी की ओर बढ़ा। मैं उसके पीछे और मेरे पीछे व्याकुलता से सिर हिलाता हुआ स्कार्पोन आ रहा था। वह बोला—

'त्योफिलो के लिए कड़ाबीनवाले आ रहे होंगे! बेरार्डो, तुम मत जाओ।'

लेकिन हम नहीं रुके।

सारी यात्रा हमने चुपचाप ही की। कोई कुछ न बोला। बेरार्डो यात्रा-भर मेरे सामने बैठा हुआ खिड़की के बाहर देखता रहा। मैं गौर से उसकी ओर देख रहा था। एकदम मेरी समझ में आ गया कि वह अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए कुछ भी उठा न रखेगा। कोई शंका उसके मार्ग में बाधक नहीं हो सकती। अपनी कामना-सिद्धि के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के वह मुझे खिड़की से बाहर भी फेंक देता। डराने को उसके जबड़े ही काफी थे। मैंने मन-ही-मन सोचा कि यदि इसे भूख लगी, तो यह मुझे कच्चा ही चबा जायगा।

रोम पहुँचकर हम पेनीटेण्ट थीफ (पश्चात्तापी चोर) की सराय में ठहरे। इस सराय पर कैलवेरी के तीन क्रासवाला एक चिह्न बना हुआ था। खाली नाम पर से तुम यह मत समझ बैठना कि इस सराय के नाम का सम्बन्ध ईसा की दाहिनी ओर शूली पर चढ़ाये जानेवाले उस सुप्रसिद्ध चोर से होगा जिसने मरने से पहले ईसा को पहिचान लिया था और जिसे यह वरदान मिला था कि 'आज तू मेरे साथ स्वर्ग में जायगा।' वास्तव में सराय का यह नाम उसके स्वामी के कारण था। पोर्टाप्या के नायक की भाँति इसका स्वामी भी अनेक बार सजा भुगतकर बुढ़ापे में फैसिस्टों के हत्थे चढ़ गया था और नये शासन के विरोधियों पर प्युनिटिव हमलों में सम्मिलित हो-होकर सहकारी भंडार-गृहों और ट्रेड-यूनियनों को लूटने में निष्णात हो गया था। उसकी सेवाएँ इतनी अधिक प्रशंसित हुईं कि एक राष्ट्रीय उत्सव पर स्वयं पुलिस प्रधान ने उसे 'पेनीटेण्ट थीफ' (पश्चात्तापी चोर) की उपाधि प्रदान की थी।

दूसरे दिन बड़े सबेरे हम बाया बेण्डी सेटेम्बर के एक दफ़्तर में कड़ी मजदूरी का काम पाने की आशा से गये।

दरबान ने हमें तीसरी मंजिल पर जाने के लिए कहा। वहाँ पर बहुत-से आदमी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। हम भी उनमें जा खड़े हुए। दोपहर को जब हमारी बारी आई तो हमें पता चला कि हम तीसरी नहीं, चौथी मंजिल पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दूसरे दिन फिर हम तीसरी मंजिल पर गये। वहाँ पर अकेले हम दोनों तीन घण्टे तक एक बेञ्च पर बैठे प्रतीक्षा करते रहे। कई लोग हमारे सामने से होकर निकल गये, पर किसीने हमारी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अन्त में हमें पाँचवीं मंजिल पर जाने के लिए कहा गया। वहाँ दो घण्टे प्रतीक्षा करने के बाद हमें कोर्सा वितोरिया में एक पता बतलाया गया। तीसरा दिन इस तरह बीत गया।

कोर्सा वितोरिया के दफ्तर में उन्होंने हमसे हमारे परवानों के बारे में पूछा।

हमने आश्चर्य-चकित होकर जवाब दिया—कैसे परवाने ?

तब हमें एक खिड़की पर आने के लिए कहा गया जहाँ पर एक कारकून ने हमारे परवाने तैयार किये और उन पर बारह महीनों के बारह टिकट लगा दिये।

कारकून ने हमसे पैंतीस लीरा माँगे।

'पैसा, हमेशा पैसा,' बेरार्डो भिन्नाया। चाकू की पैंतीस चोटों से भी हमें इतनी अधिक वेदना न हुई होती। हमने पैंतीस लीरा दे दिये।

वहाँ से हम फिर उसी पहलेवाले दफ़्तर में गये और बोले—ये हैं हमारे परवाने।

हमें जवाब मिला—बहुत ठीक। कल एम्पलायमेण्ट एक्स्चेञ्ज जाना और वहाँ नये काम निकालने की सरकारी योजनाओं पर काम पाने के लिए बेकार और उम्मेदवार बनकर नाम लिखाना और दस्तख़त करना।

इस तरह चौथा दिन समाप्त हुआ।

इतना तो अवश्य कहना पड़ेगा कि बेरार्डो ने यह सब बड़ी शान्ति से किया। उसे सफलता की पूरी-पूरी आशा थी।

वह मुझसे बार-बार कहता था—काम मिलने में जितनी ही अधिक कठिनाई होगी, उसके मिल जाने पर हम उतना ही अधिक कमायेंगे।

दोपहर के बाद जब सभी दफ़्तर बन्द हो जाते, बेरार्डो मुझे शहर में घूमने ले जाता था।

पहली बार जब हम एक इमारत के पास से, जिसके ऊपर 'बैंक' लिखा था, निकले तो बेरार्डो उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ा—देखो, देखो।

बेरार्डो मोहित-सा कुछ क्षणों तक उसकी ओर ताकता रहा। तब उसने धीरे-से मेरे कान में कहा—

'ठेकेदार को सब रुपये यहीं से मिलते हैं।'

परन्तु थोड़ी दूर आगे हमें दूसरी, तब तीसरी और तब चौथी बैंक मिली। कुछ देर बाद हमने गिनना ही छोड़ दिया। यह बतलाना कठिन था कि उनमें से ठेकेदार की कौन-सी थी? रोम के मध्य में जहाँ हमें सेण्टपीटर्स देखने की आशा थी, सिवा बैंकों के और कुछ नहीं मिला।

हरएक नई बैंक के समीप पहुँचने पर बेरार्डो चिल्ला उठता था—देखो! देखो! एक-एक से बढ़कर शानदार और बड़ी थी। हरएक के आस-पास आदमियों और मोटर-गाड़ियों के आवागमन का ताँता लग रहा था।

बेरार्डो आश्चर्य प्रकट करते थकता ही न था।

एक साँझ हमने अपनी सराय के बाहर एक बड़ा-सा झुण्ड जमा देखा। एक फौजी घास-गाड़ी उलट गई थी और दीवार के सहारे बगल से पड़ी थी। बहुत-से लोग मिलकर उसे सीधी करने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन जैसी कि अकसर शहरी झुण्डों की आदत है, वे लोग बिना कुछ काम किये शोर ही अधिक मचा रहे थे।

बेरार्डो भीड़ चीरता हुआ अन्दर घुसा, अपना कोट-टोपी उतारा, घुटनों के बल रेंगकर गाड़ी के नीचे गया और सारा वजन पीठ पर उठा

लिया। सब लोगों के विस्मय और प्रशंसा के बीच उसने गाड़ी को धीरे-धीरे उठाकर फिर पहियों पर खड़ी कर दी।

इस घटना से बेरार्डो का पुराना बातूनीपन फिर कुछ हद तक लौट आया। उस साँझ वह मुझसे बोला—'बैंकों की शक्ति नष्ट करने के लिए डॉना जिजोला का सेण्ट एन्थोनी की प्रतिमा के आगे दो मोमबत्तियाँ रोज जलाना क्या एक बेहूदापन नहीं है?'

मैं समझ गया कि बेरार्डो स्कार्पोन के साथवाले वाद-विवाद को, जो यात्रा के प्रारम्भ में हुआ था, फिर शुरू करना चाहता है। लेकिन मेरी मनोदशा किसी तरह का वाद-विवाद करने जैसी नहीं थी। वह बोलता ही रहा।

'जब तक तुम जवान हो, जान-जोखिम के काम ठीक हैं। आग में मूँगफलियाँ सेंकना तो खैर बुद्धिमानी है, परन्तु ठेकेदार का घर जला देने से आखिर क्या फायदा?'

वह बोलना चाहता था, इसलिए मैंने उसे टोका नहीं। वह बोलता ही रहा।

'क्या तुम नहीं देखते कि इसमें वीरता की कोई आवश्यकता नहीं? स्कार्पोन भले ही समझ ले कि मैं डर गया हूँ, लेकिन यह झूठ है। दूसरों से अधिक कमाई करने के लिए मैं अपने प्राणों की बाजी लगा दूँगा। मैं अनुभव करता हूँ कि मुझमें काम करने की वह शक्ति है, जो अभी तक किसी में नहीं पाई गई होगी। वे कल हमें काम पर रख लेंगे, और जब हम आरम्भ करेंगे, तो तुम चकित रह जाओगे, और दूसरे भी और खुद मुकादम भी चकित हो जायगा।'

उसकी बकझक रोकने के इरादे से मैंने कहा—मुझे आश्चर्य है कि त्योफिलो का अन्तिम-संस्कार कैसे हुआ होगा? टोकने से वह खीझ गया और गुस्से में भरकर बोला—

'मैं तुमसे कहता हूँ कि वीरता की इसमें किसी तरह की कोई आवश्यकता नहीं; और न शक्ति ही आवश्यक है। क्या ठेकेदार ने हमारे विरुद्ध शक्ति का उपयोग किया था? नहीं। उसने वीरता और

शक्ति से नहीं, अपने दिमाग़ से काम लिया था। अपनी अकल के जोर पर ही उसने हमसे नाला ले लिया। उसने भी कहाँ लिया, फाण्टामारा-वालों ने स्वयं होकर दे दिया। पहले उन्होंने सरकार के नाम एक अर्जी पर दस्तखत करवाये, फिर प्रत्येक को तीन चौथाई और तब दस लस्टरवाली चालाकी बीच में घुसेड़ दी। ठेकेदार से और दूसरी आशा ही क्या की जा सकती थी? उसने हर तरह से पूरी कानूनी कार्रवाई की और अपने स्वार्थों का पहले खयाल रखा।'

बेरार्डो के दृष्टिकोण में इस हद तक परिवर्तन हो गया था।

वह अपने हार्दिक विचार प्रकट करता हुआ आगे बोला—जमीन की कीमतें अवश्य ही बहुत गिर जायँगी। नाले के बिना ज़मीन का दाम कम हो जायगा। उस पर खेती करने का ढंग भी बदल देना पड़ेगा।

घर जाकर वह जो जमीन खरीदना चाहता था, वह अभी से उसके ध्यान में थी।

पाँचवें दिन हम काम पाने के लिए एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्ज गये।

हमसे पूछा गया कि तुम किस प्रान्त से आये हो?

'एक्विला से,' हमने जवाब दिया।

'तब तुम्हें एक्विला एक्स्चेञ्ज में नाम लिखाना चाहिए।'

'एक्विला एक्स्चेञ्ज कहाँ है?'

कारकून ठहाका मारकर हँस पड़ा। उसने हमारा प्रश्न दूसरों को सुनाया और तब सारा दफ़्तर ठहाके लगाने लगा।

हँसी रुकने के बाद और इतनी हँसी से आँख में आये आँसू पोंछने के बाद वह कारकून हमसे बोला—एक्विला एम्प्लायमेंट एक्स्चेञ्ज एक्विला में है।

लेकिन इटली में भ्रमण करने की हमारी जरा-भर भी इच्छा नहीं थी।

बेरार्डो ने जोर देकर कहा—अब तक हम बहुत-से दफ़्तरों में फिर आये हैं। हम रोम में काम की तलाश में आये हैं, घूमने-फिरने नहीं।

परन्तु हमारा घूमना-फिरना बाक़ायदा जारी रहा।

माननीय डॉन एचिली पाजीज्ञा नामक एजुजी का एक वकील पेनीटेण्ट थीफ की सराय में रहता था। बिना समय गँवाये हमने उससे मदद माँगी। छठे दिन उसने हमें अपने शयन-कक्ष में, जो हमारे बराबरवाला और हमारे कमरे की ही तरह अँधेरा, सँकरा, गन्दा और अस्त-व्यस्त था, मुलाकात के लिए बुलाया। डान एचिली पाजीञ्ज्ञा बिस्तरे पर लेटा हुआ था। वह दमे का रोगी एक फटे-हाल बूढ़ा था। दस दिन से उसने हजामत नहीं बनवाई थी। हमसे मिलने के लिए वह एक पीली सूट, सफेद कपड़े के जूते, घास की एक टोपी पहने, छाती पर काँसे का तमगा लगाये, लकड़ी की दाँत-कुरेदनी से दाँत खोद रहा था। बिस्तरे के नीचे ऊपर तक भरा हुआ एक पीकदान रखा था।

डॉन पाजीज्ञा ने यह कहकर कि 'सलाह की फीस दस लीरा है,' वार्तालाप आरम्भ किया।

मैंने हताश होकर जवाब दिया—अच्छा, ठीक है।

'फ़ीस पेशगी देनी पड़ती है' उसने कहा।

हमने दस लीरा दे दिये।

'प्रत्येक के लिए दस-दस लीरा।'

हमने उसे दस लीरा और दिये।

तब वह बूढ़ा अपने बिस्तर पर से उठा और एक भी शब्द बोले बिना कमरे से बाहर चला गया। हमने उसे गलियारे में खाँसते हुए सुना। खाँसी धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरते और ठेठ नीचे जहाँ पेनीटेण्ट थीफ बैठा था, कुछ क्षण रुकते सुनाई दी। और सड़क के पार सामने-वाली सराय में बूढ़े के घुसते ही खाँसी की आवाज़ आना बिलकुल बन्द हो गई।

कोई एक घण्टे तक प्रतीक्षा करने के बाद खाँसी की आवाज़ फिर सुनाई पड़ी। हमने एक बार फिर उसे सड़क पार करते, क्लान्ति-पूर्वक सीढ़ियाँ रेंगते और हमारे दरवाजे के बाहर क्षणभर ठिठकते सुना। तब एक रोटी, लाल शराब की आधी बोतल और कबाब का एक आधा टुकड़ा लिये बूढ़ा भीतर आया। फिर बिस्तरे पर लेट जाने के बाद पाजीञ्ज्ञा

हमसे बोला—तुम्हारा मामला बहुत ही बिगड़ा हुआ है। हमने अभी तक उसे यह भी नहीं बतलाया था कि हम किस लिए आये थे।

बहुत देर तक चुपचाप विचार करने के बाद उसने हमसे पूछा—तुम्हारे पास कितनी रक़म बाक़ी बची है ?

हमने पाई-पैसा सब कुछ निकालकर रख दिया। कुल चौदह लीरा निकले।

निराश होकर वकील ने कहा—तुम्हारा मामला निरर्थक ही नहीं, एकदम गया-बीता है। एक बार फिर गौर से विचार करने के बाद उसने हमसे पूछा—क्या तुम फाण्टामारा से कुछ और रुपया मँगा सकते हो ?

'क्यों नहीं ?' बेरार्डो ने जवाब दिया, यद्यपि वह खूब जानता था यह बिलकुल असंभव है।

'और क्यों एक मुर्गी का बच्चा ? बस एक या दो ? और थोड़ी-सी पनीर ? और मेरी खाँसी के लिए थोड़ा-सा शहद ? क्यों ?' बूढ़े ने कहा।

'हाँ, हाँ ; अवश्य।' बेरार्डो ने शीघ्रता से उत्तर दिया, यद्यपि उसने अपनी उम्र-भर शहद नहीं देखा था।

वकील ने कोई चालीसेक पीले गन्दे दाँत दिखाकर हँसते हुए कहा—तुम्हारा मामला बिलकुल साफ है।

तब बेरार्डो ने उसे हमारी परिस्थिति समझाई।

डान पार्ज़ीज़ा उठा, अपनी छड़ी जो किसी पुरानी छतरी का निकाला हुआ हत्था था, तलाश की और उसे हवा में हिलाते हुए बोला—मेरे साथ चलो।

हम उसके साथ हो लिये। पहला मुकाम डाकघर पर हुआ।

डान पार्ज़ीज़ा ने यह तार लिखा :

'दो सौ लीरा, सात पौण्ड पनीर, दो पौंड शहद, कुछ मुर्गियों के बच्चे भेज़ो।'

उसने पूछा—तुम दोनों में से ज़्यादा मालदार कौन है ? किस पते पर भेजूँ ?

बेरार्डो ने, जिसका पिता उसके बचपन में ही मर गया था, जवाब दिया—मेरे पिता विन्सेञ्जो वॉयला के पते पर।

डॉन पार्जीज़ा तार देने ही वाला था कि बेरार्डो ने उसका कन्धा थपथपाकर पूछा—क्यों साहब, आपको शफ़तालू पसन्द नहीं हैं क्या ?

'खूब पसन्द हैं। वे खाँसी में बहुत मुफीद होते हैं।'

इसलिए तार में सात पौण्ड शफ़तालू और जोड़े गये। वकील ने तार की नकल कर ली। तब हमसे बोला—तार का महसूल चुकाकर साथ चलो।

तार का महसूल चुकाकर हम उसके साथ हो लिये। दूसरा मुकाम फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्ज पर हुआ, जहाँ से हम पहले दिन बेरंग लौटा दिये गये थे। डॉन पाजीञ्जा हमें गलियारे में खड़ा छोड़कर भीतर चला गया। एक खिड़की की राह वह हमें अन्दर एक अफ़सर से बोलता और जोर-जोर से हाथ हिलाता हुआ दिखाई दिया। उसने अफ़सर को वह तार दिखलाया जो फाण्टामारा भेजा गया था और उसमें अँगुली से महत्त्व की बातें दिखलाईं। अफ़सर को तार में कुछ आपत्ति दिखाई दी, क्योंकि हमारा वकील एकदम ढीला पड़ गया था। भागे-भागे आकर उसने हमसे पूछा—

'फाण्टामारा का पनीर खाने का होता है या पकाने का ?'

'ताजा खाने के और बासी हो जाने पर पकाने के काम आता है।' बेरार्डो के इस उत्तर से वकील को पूर्ण सन्तोष हो गया और उसने जाकर अफ़सर के सामने यही बात दुहराई।

अब कोई बाधा नहीं थी, क्योंकि डान पाजीञ्जा ने बाहर आकर हमसे कहा—

'सिलसिला लग गया है। एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्ज को आवश्यक काग़ज़-पत्र, जन्म का प्रमाण-पत्र, पुलिस-रेकार्ड और तुम्हारे अच्छे चाल-चलन के प्रमाण-पत्र लगेंगे। उनके आते ही तुम्हारा नाम बेकारों के रजिस्टर में दर्ज कर लिया जायगा। उसके बाद काम मिलेगा। एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्जवाले स्वयं तुम्हें बुला भेजेंगे।'

रोम में आने के सातवें दिन हमारी जेब में केवल चार लीरा बचे थे।

दो रोटियाँ खरीदने के बाद हमारे पास कानी कौड़ी भी नहीं बची।

बेरार्डो अपनी हिम्मत बनाये रखने के लिए मुझसे कहता रहता था—एम्प्लायमेन्ट एक्स्चेञ्ज से समाचार आने में अब अधिक देर नहीं हो सकती।

हम अब सराय से भी बाहर नहीं निकलते थे कि कहीं हमारी अनुपस्थिति में एम्प्लायमेण्ट एक्सचेञ्ज का बुलावा न आ जाय। और फिर भूख के मारे हममें घूमने-फिरने की शक्ति भी नहीं रही थी।

जरा-सा खटका होते ही हम दरवाजे की ओर झपटते थे।

डाकिये को देखते ही हम झपटकर नीचे भागते, जहाँ पेनीटेण्ट थीफ बैठता था।

माननीय पाज़ीञ्ञा भी हमारी तरह ही उत्सुक था। अन्तर केवल इतना था कि हम जहाँ काम की प्रतीक्षा में उत्सुक थे, वह बेरार्डो के पिता की ओर से आनेवाले मनीआर्डर और सामान की प्रतीक्षा में। दिन-भर हम तीनों बिस्तरे में पड़े रहते थे और ज़रा-सी आवाज होते ही झपटकर नीचे भागते थे। वापिस ऊपर आते समय एक दूसरे को कोसना प्रति-दिन बढ़ता जाता था।

डॉन पाज़ीञ्ञा बेरार्डो से कहता—तुम्हारा बाप बहुत ही हृदयहीन है। तुम्हें केवल दो सौ लीरा भेजने में ही उसने इतना समय कैसे लगा दिया ?

बेरार्डो जवाब देता—कुछ काम है भी या नहीं ? यदि काम है, तो हमें बुलाते क्यों नहीं ? यदि काम नहीं है, तो फिर इतनी रस्में किस लिए ?

'सामान के मामले में तो देर होना स्वाभाविक है और यह समझ में भी आता है। पार्सल, और खासकर जब उनमें बिगड़ सकनेवाला माल हो, तो हमेशा देर में पहुँचते हैं। लेकिन मनीआर्डर तो उसी दिन आ जाना चाहिये था। बेरार्डो तुम्हारा बाप महास्वार्थी सूअर है।'

बेरार्डो अपनी हाँकता—

'जन्म-पत्री का काम से भला क्या सम्बन्ध ! यदि एक आदमी काम

तलाश करता है तो बिलकुल साफ है कि वह पैदा हुआ है। पैदा होने से पहले, नहीं तो भला काम ढूँढ़ेगा ही कौन ?'

तीन दिन तक उपवास और प्रतीक्षा करने के बाद मैंने और बेरार्डो ने डाकिये के आने पर नीचे भागना भी छोड़ दिया।

हम सवेरे से साँझ तक बिस्तरे में पड़े रहते थे और खाली स्नान-गृह में जाकर नल से पानी पीने के लिए उठते थे।

डॉन पाजीज्जा हमसे कहीं अधिक धैर्यवान् और आशावादी था। दिन में तीन बार प्रत्येक डाक पर हम उसकी खाँसी बिस्तरे से उठते, कमरा छोड़ते, धीरे-धीरे उतरकर ठेठ नीचे जाते और थोड़ी देर बाद थक-कर ऊपर चढ़ते और दरवाजे के छेद के आगे आकर रुकते हुए सुनते थे। तब वह बूढ़ा फाण्टामारा को गालियाँ देता सुनाई पड़ता था। काँपती हुई आवाज में वह कहता—

'बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप सूअर है। तुम्हारा बाप मेरे विनाश का कारण है। तुम्हारे बाप के कारण मुझे मरना पड़ेगा। तुम्हारे बाप की वजह से ही मुझे खाना खाये आज तीन दिन हो गये। सब उसी का दोष है।'

बेरार्डो जवाब नहीं देता था। उसने वही पहलेवाली चुप्पी साध ली थी। वह एक भी शब्द बोले बिना घण्टों छत की ओर ताका करता था।

मैं कहता—हम क्या करेंगे ? बिना कुछ खाये तो हम अधिक दिन तक रह नहीं सकते।

लेकिन बेरार्डो जवाब नहीं देता था।

उपवास के चौथे दिन हमारे लिए एक अप्रत्याशित रोमांचकारी घटना हुई। कोई पाँच बजे का समय होगा। हमने डॉन पाजीज्जा और पेनीटेण्ट थीफ़ को खुशी से चिल्लाते हुए सीढ़ियाँ चढ़ते सुना।

वकील गा रहा था :

'कहाँ हैं विजय के स्वर्णिम पंख ?
रोम का दास वह है नियति से...'

वे हमारे कमरे के द्वार को बिना खटखटाये ही धक्का देकर अन्दर चले आये। पेनीटेण्ट थीफ बेरार्डो के नाम का एक तार उछाल रहा था, और डॉन पाजीञ्जा मदिरा की दो बोतलें लिये था।

वकील ने शोर मचाया—बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप बहुत अच्छा आदमी है। मनीआर्डर आ गया है!

बेरार्डो खुशी से बावला होकर विस्मयपूर्वक बोला—सचमुच! उसे कदापि यह विश्वास नहीं हुआ कि मनीआर्डर उसके बाप ने, जिसे मरे बीस वर्ष हुए, भेजा है; लेकिन चार दिन तक उपवास करने के बाद तुम किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार हो जाओगे।

उधर वकील मदिरा की बोतल खोलने में लगा था, इधर बेरार्डो ने तार लिया, खोला, पढ़ा, हमारी ओर देखा और उसे मोड़कर चुपचाप जेब में रख लिया।

मैंने पूछा—क्या है?

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा एकदम बदल गया। आँखें लाल हो आईं। फाण्टामारा से रवाना होने के बाद मेरी जान में प्रथम बार ही भावावेग का उस पर इतना स्पष्ट असर हुआ था।

जहाँ तक हो सकता था, मित्रतापूर्ण ढंग से मैंने एक बार फिर पूछा—क्यों, क्या है?

बेरार्डो एक भी शब्द नहीं बोला और बिस्तरे पर लम्बा हो गया। डॉन पाजीञ्जा और पेनीटेण्ट थीफ़ हैरान होकर वापिस चले गये। लेकिन वे अपने साथ मदिरा की दोनों बोतलें ले जाना नहीं भूले थे। मैं बेरार्डो का विश्वास प्राप्त करने उसी बिस्तर पर उसकी बगल में लेट गया और बड़ी देर तक चुपचाप पड़ा रहा। तब मैंने उससे एक बार फिर पूछा—

'क्यों, क्या है? क्या हो गया है? क्या कोई मर गया है?'

लेकिन उसने बिलकुल ही जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि फाण्टामारा में कोई-न-कोई मर गया है।

उसी साँझ आठ बजे हमारे बगलवाले कमरे में—मैं तुमसे कह चुका

हूँ कि उसमें डॉन पाज़ीञ्ज़ा रहता था—एकाएक कुछ गोल-माल हुआ। साथ ही हमारे कमरे का दरवाज़ा खुला और डॉन पाज़ीञ्ज़ा दीख पड़ा। वह भीतर नहीं आया, वहीं खड़े-खड़े चिल्लाया—

'फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्ज के प्रधान अधिकारी अभी मुझसे मिलने आये थे। तुम्हारे कागज़ात आ गये हैं। पॉडेस्टा के दस्तखतों-वाले तुम्हारे प्रमाण पत्रों में लिखा है : 'राष्ट्रीय दृष्टिकोण से चाल-चलन बिलकुल ही बुरा है।' ऐसे प्रमाण-पत्र की सिफारिश से तुम्हें काम नहीं मिल सकता। ऐसा प्रमाणपत्र होने से तुम्हें कभी भी काम नहीं मिल सकता। इसके सिवा पुलिस को सूचना दे दी गई है।'

वह जोर से किवाड़ ठेलकर चला गया।

पाँच मिनट बाद दरवाजा फिर खुला। इस बार पेनीटेण्ट थीफ था। वह बोला—तुम्हारे कमरे में दूसरा किरायेदार आनेवाला है। बस, आधे घण्टे में चले जाओ।

जब हमने सराय छोड़ी तो अँधेरा हो गया था।

'अब हम क्या करेंगे ?' मैंने बेरार्डो से पूछा। लेकिन वह भी क्या जवाब देता ?

भूख से मेरे पाँव बहुत कमजोर हो गये थे और सिर दर्द करने लगा था। प्रतिक्षण मुझे लगता था कि मैं बेहोश हो जाऊँगा। सड़क पर आने-जानेवाले हमें घूरते थे। हमें देखकर इस तरह कतराकर एक ओर हट जाते थे मानो हमसे डरते हों। बेरार्डो का दिखावा भी सचमुच ही डरावना था।

अनजाने ही हम स्टेशन के समीप तक निकल आये। वहाँ पर बहुत-सी पुलिस और सैनिक और कड़ाबीनवाले थे जो चौक में प्रत्येक आने-जानेवाले को रोककर पूछ-ताछ कर रहे थे। वे मोटरें रोककर उनकी भी तलाशी ले रहे थे। विस्मयपूर्वक हमारी ओर देखने के बाद एक युवक हमारे सामने आ खड़ा हुआ।

'नमस्ते।' उसने बेरार्डो से कहा।

बेरार्डो ने सशंकित होकर उसकी ओर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

युवक बोलने लगा—मैं तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था। यदि तुम मुझे यहाँ नहीं मिल जाते तो कल तुम्हारे लिए मैं फाण्टामारा जाने ही वाला था।

बेरार्डो ने कहा—मेरे पास एक कानी कौड़ी भी नहीं है। यदि तुम धोखा देना चाहते हो तो किसी और को तलाशो।

युवक हँसने लगा। वह आधा विद्यार्थी और आधा कमकर लगता था। वह लम्बा और दुबला था। उसके कपड़े साफ-सुथरे पर तड़क-भड़कवाले नहीं थे। उसके बोल-चाल और दिखावे में सन्देह की कोई गुञ्जाइश नहीं थी।

उसने बेरार्डो से पूछा—पिछली बार जब तुम अवेजानो गये थे तो उसकी तुम्हें याद है न? लाल बालोंवाला एक पुलिस जासूस, जिसकी दाढ़ी पर घाव का निशान था, तुम्हें और फाण्टामारा के दूसरे लोगों को एक आमोद-गृह में ले गया था? याद है न? जिसने तुम्हें उससे सावधान किया था, उसे भूल गये?

बेरार्डो ने उसे खूब अच्छी तरह देखा और तब पहिचान लिया।

जब मैंने देखा कि बेरार्डो अवसर निकल जाने दे रहा है, तो मैंने उस युवक से कहा—हमें भोजन करने के लिए कुछ पैसे दो।

अवेजानोवाला वह युवक हमें एक काफी-घर में ले गया और सूअर का गोश्त तथा अण्डे लाने को कहा।

बेरार्डो ने शंकित होकर पूछा—क्या यह हमारे लिए है? दाम कौन देगा? हमारे पास तो कुछ भी नहीं है।

उसे विश्वास दिलाने के लिए युवक ने गल्ले पर जाकर पेशगी दाम चुकाये। इस बीच बेरार्डो ने मेरी ओर देखा, मानो कहना चाहता हो: 'यह आदमी अवश्य ही पागल होना चाहिये।'

कुछ खा चुकने के बाद बेरार्डो ने उस युवक से पूछा—'ये सैनिक और कड़ाबीनवाले सब क्या करने में लगे हुए हैं?'

'भेदी आदमी को पकड़ने की आये दिन की धूम-धमाल है।' युवक ने उत्तर दिया, परन्तु हम कुछ समझ नहीं सके।

उस युवक ने हमें समझाया—कुछ समय से भेदी आदमी के नाम से पुकारे जानेवाले एक अज्ञात व्यक्ति ने सार्वजनिक शान्ति और सुरक्षा खतरे में डाल रखी है। विशेष न्यायालय के सामने प्रत्येक मुक़दमे में भेदी आदमी का उल्लेख हुआ है। वह गुप्त रूप से पैम्फलेट—पर्चे—छापता और बाँटता है। ग़ैरक़ानूनी पर्चे और पत्रिकाएँ रखने के अपराध में जो-जो भी पकड़े गये उन सभी ने स्वीकार किया है कि ये उन्हें भेदी आदमी से मिले थे। शुरू-शुरू में भेदी आदमी थोड़े-से बड़े कारखानों में ही काम करते थे, तब शहर के उपनगरों और बारकों में। तब एक बार वह विश्वविद्यालय में भी दीख पड़ा था। एक सबेरे एक ही साथ वह कई विभिन्न स्थानों पर देखा गया था और उसी दिन उसके सीमा-प्रान्त पर भी देखे जाने की रिपोर्ट है। इटली के दक्ष जासूस उसके पीछे छोड़े गये हैं, लेकिन वह अभी तक उनके हाथ नहीं आया। वे छः हजार गिरफ्तारियाँ कर चुके हैं और बार-बार सरकार ने विश्वास किया कि भेदी आदमी पकड़ लिया गया है। लेकिन थोड़े-से व्यवधान के बाद गुप्त छापाखाना फिर से अपना काम शुरू कर देता है और विशेष न्यायालय के काग़ज़ों में पुनः भेदी आदमी दिखाई देने लगता है। इधर कुछ समय से ऐसा मालूम पड़ता है कि वह एब्रुजी में ही है।

'एब्रुजी में?' बेरार्डो ने उत्सुकता से पूछा।

'सल्मोना, प्रेजा, अवेज़ानो और दूसरे-दूसरे स्थानों में भी। जहाँ कहीं वह दिखाई पड़ता है वहाँ के किसान विद्रोह करते हैं; और जहाँ कहीं किसान विद्रोह करते हैं वहाँ वह अवश्य पहुँचता है।'

'लेकिन वह है कौन? क्या वह शैतान तो नहीं है!' बेरार्डो ने पूछा।

अवेज़ानोवाले युवक ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—शैतान भी हो सकता है।

'अगर कोई उसे केवल फाण्टामारा का रास्ता-भर बतला दे।' बेरार्डो बोला।

उस आदमी ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया—वह पहले से ही जानता है।

उस क्षण एक पुलिस सार्जेण्ट और सैनिकों के एक दस्ते ने काफी-घर में प्रवेश किया और हमारे पास आये।

उन्होंने परवाने और परिचय-पत्र माँगे।

सैनिक काफी-घर की तलाशी लेने लगे और पुलिस सार्जेण्ट एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज से मिले हमारे कागज-पत्र और हमारे साथवाले युवक के कागजात और परिचय-पत्र और दूसरे बहुत से कागज-पत्र देखने लगा।

हमारे कागजात बराबर थे और पुलिस सार्जेण्ट जा ही रहा था कि सैनिक कपड़े में लपेटी हुई एक पार्सल लिये दौड़े आये, जो उन्हें 'हैट स्टैंड' के नीचे पड़ी मिली थी! पार्सल के अन्दर की चीजों ने सिपाही और सैनिकों को क्रोधोन्मत्त कर दिया। वे चिल्लाते हुए हमारी ओर झपटे: 'यह पार्सल किसकी है? इसे वहाँ किसने पटका?'

हमारी सफाई की प्रतीक्षा किये बिना ही वे लोग हमें गिरफ्तार कर पुलिस थाने ले गये।

बेरार्डो यह सोचकर कि पार्सल में चोरी की चीजें थीं और वे हमें चोर समझकर थाने ले जा रहे थे, रास्ते-भर चिल्लाता गया—

'हम चोर नहीं हैं। तुम्हें शर्म आनी चाहिये! चोर तुम हो! हम लुटे हुए ग़रीब लोग हैं, चोर नहीं। फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज वाले चोर हैं, उन्होंने हमारे पैंतीस लीरा चुरा लिये। डॉन पाजीजा चोर है—उसने हमारे बीस लीरा ले लिये। हम चोर नहीं हैं। ठेकेदार चोर है!'

कोतवाली पर शहर भर में हुई गिरफ्तारियों का ताँता लग रहा था।

आवेजानोवाले युवक ने बेरार्डो को कान में समझाया—भेदी आदमी की तलाश अभी तक चल रही है। तब बेरार्डो की समझ में आ गया कि हम चोरी के लिए नहीं पकड़े गये हैं और वह चुप हो गया।

कुछ रस्मों के बाद हम एक कोठरी में जिसमें पहले से ही दो और

क़ैदी थे बन्द कर दिये गये। मैंने और बेरार्डो ने एक दूसरे को सन्तोष की दृष्टि से देखा। कम-से-कम हमारे सिर पर एक छत तो थी और दूसरे दिन खाने को भी कुछ-न-कुछ तो मिलने ही वाला था। बाक़ी भविष्य के बारे में सोचने को काफी समय पड़ा था।

कोठरी के आधे हिस्से में जमीन से थोड़ा ऊँचा कंक्रीट का एक चबूतरा बना हुआ था, जो बिस्तरे के काम आता था। कोने में एक छेद भी था, जिसका उपयोग बिलकुल उजागर था।

दोनों क़ैदी जो पहले से ही कोठरी में थे, अपने घड़ी किये हुए कोटों का सिरहाने लगाये दूसरे कोने में हाथ-पाँव फैलाये पड़े थे। मैंने तत्काल ही उनका अनुसरण किया और अपना कोट सिरहाने लगा कर कंक्रीट पर लेट गया। अवेज़ानोवाला युवक और बेरार्डो कोठरी में चहल-क़दमी करते हुए उत्सुकता-पूर्वक बातें करने लगे। अवेज़ानोवाला युवक उन दो आदमियों की उपस्थिति के कारण फुस-फुसाहट में बोल रहा था, लेकिन काफी उत्तेजित होने के कारण बेरार्डो उतना धीमे नहीं बोल सक रहा था। इसलिए मैं जो कुछ बेरार्डो बोलता था वही सुन सका।

'यह भेदी आदमी वाला किस्सा मेरी समझ में नहीं आता। क्या भेदी आदमी शहर का रहनेवाला है या किसान? यदि वह शहराती होकर एब्रुज़ी जाता है तो अवश्य ही उसका कोई दूसरा मतलब होना चाहिए...

'लेकिन शहरवाले खुशहाल होते हैं। क्योंकि वे किसानों का शोषण करते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ कि शहर में भी ग़रीब लोग हैं। पेपिनो गोरियानो को बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं और पाज़ीन्ज़ा वकील भी कुछ मखमली गद्दों पर नहीं लोट रहा है। लेकिन वास्तव में ये एब्रुज़ी से आकर शहर में बसनेवाले लोग हैं।'

कई बार बेरार्डो भी जब फुसफुसाने का प्रयत्न करता तो मेरा सुनने का सिलसिला टूट जाता था, पर उनके हाव-भाव से मैं समझ जाता कि उसका और अवेज़ानोवाले युवक का मतैक्य नहीं हो रहा है। बेरार्डो यद्यपि कई बार अपनी आवाज़ निस्सन्देह धीमी कर देता था, परन्तु

कभी-कभी उत्तेजित होकर इतने जोर से बोलने लगता था कि हमारी कोठरी में के दोनों क़ैदी ही नहीं, पास-पड़ोस की कोठरियों में बन्द दूसरे लोग भी शायद सुन लेते होंगे—

'तुम कहते हो कि काफ़ी-घर में मिली पार्सल के अन्दर समाचार-पत्र थे ? क्या छपे हुए पर्चे ? काग़ज़ों की एक ऐसी पार्सल है ही किस योग्य ?'

युवक भला ही नहीं, धैर्यवान भी था। वह बेरार्डो को धीरे-धीरे बोलने के लिए कहता, और बेरार्डो स्वीकार भी कर लेता; परन्तु शीघ्र ही वह फिर जोर-जोर से बोलने लग जाता था—

'लेकिन शहरवाले सम्पन्न हैं, और किसान नहीं। शहरवाले अच्छा खाते-पीते हैं और उन्हें कर भी नहीं देने पड़ते। शहरवाले बिना कुछ काम किये ही काफी पैसा कमा लेते हैं। लोगों को पीटने के लिए बीस लीरा रोज और पीटे जाने का कोई डर नहीं। वे हमसे कपड़ों, जूतों और टोपियों के लिए कितना दाम वसूल करते हैं, जरा इसी ओर देखो…। हम किसान कीड़ों की तरह हैं। सब हमारा शिकार करते हैं। सब हमें पाँवों-तले रौंदते हैं। सब हमें धोखा देते हैं। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा तक हमारे विरुद्ध हो गया है, डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा तक।'

अवेज़ानोवाला युवक मन लगाकर सुन रहा था।

वह बड़बड़ाया—यह तो बहुत ही बुरा है। क्या सचमुच ही ऐसा है ? क्या सभी किसान तुम्हारी ही तरह सोचते हैं ?

थोड़ी देर बाद बेरार्डो फिर कहने लगा—मेरी समझ में नहीं आता कि शहरवाले अकारण ही पर्चे छापकर किसानों को क्यों देने लगे ? न मेरी यह समझ में आता है कि भेदी आदमी अपना काम छोड़कर दूसरों की समस्याओं में क्यों सिर खपाता है ? या वह काग़ज़ी तो नहीं है और अपना काग़ज़ बेचने के लिए तो अख़बार नहीं न छापता है ?

'और ये जेल जानेवाले जिनके बारे में तुम मुझे कह रहे हो, क्या सब-के-सब पागल तो नहीं हैं ? यदि नहीं, तो उनका उद्देश्य क्या है ? और वे जिनके बारे में तुमने कहा कि सरकार द्वारा गोलियों से उड़ा

दिये गये—उनका उद्देश्य क्या था ? क्या गोलियाँ खाना ही उनका उद्देश्य और उनका काम था ?'

अवेज़ानोवाला युवक समझ चुका था कि बेरार्डो ये सब शंकाएँ स्वयं अपने आपसे कर रहा है। अकेले अपने बारे में सोचने और काम पाने और ज़मीन खरीदने की बेरार्डो की सभी आशाएँ लुप्त हो गई थीं। सब मार्ग अवरुद्ध थे। पॉडेस्टा ने हमें राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बहुत बुरा करार दिया था और इसलिए सब रास्ते रुक गये थे। यही कारण होना चाहिए कि बेरार्डो फिर अपने पुराने तरीक़े से और इस बार अधिक दृढ़ता से सोचने लगा था। अवेज़ानोवाले युवक के सामने वह जो शंकाएँ रख रहा था, वे उसकी अन्तिम शंकाएँ थीं।

धीरे-धीरे दूसरे देशों और रूस के बारे में बातें होने लगीं और मैंने बेरार्डो को कहते सुना—

'रूस ? मुझे सच-सच बतलाओ। क्या सचमुच रूस नाम की ऐसी कोई जगह भी है जिसके बारे में लोग बाग इतनी सारी बातें करते हैं ? रूस के बारे में बातें तो सभी करते हैं, लेकिन अभी तक वहाँ गया कोई नहीं। किसान अमेरिका, अफ्रिका, फ्रान्स सर्वत्र जाते हैं ; लेकिन रूस अभी तक कोई नहीं गया।'

बेरार्डो कुछ मामलों में बिलकुल अडिग था—जैसे, अब आज़ादी की बात छिड़ी तो उसने पूछा—

'बोलने की आज़ादी ? हम वकील नहीं हैं। छपने (प्रेस) की आज़ादी ? हम मुद्रक नहीं हैं। तुम काम मिलने की आज़ादी के बारे में, सबको खेत मिलने की आज़ादी के बारे में, बात क्यों नहीं करते ?'

इस समय मुझे अनजाने ही नींद आ गई होगी। मैं कुछ घण्टों तक सोता रहा हूँगा कि बेरार्डो ने मुझे जगाया। वह मेरे पैताने युवक की बगल में बैठा हुआ था।

उन्हें तब तक जागते और बातें करते हुए देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। बेरार्डो ने मुझसे कहा—क्षमा करना, लेकिन मैं तुम्हें अधिक समय

तक जागता नहीं रखूँगा। क्या तुम्हें प्रिन्स टोर्लोनिया के बारे में सच्ची कहानी मालूम है ?

मैंने जवाब दिया—मेरा मन नहीं है। राजकुमारों के बारे में सब सच्ची कहानियाँ मेरे लिए एक-सी हैं। मुझे सोने दो।

'मुझे तुम्हें कह देना चाहिए कि तथाकथित राजकुमार टोर्लोनिया न तो एक राजकुमार ही है और न उसका नाम टोर्लोनिया है।'

'तुम सपना तो नहीं देख रहे हो ?'

'मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूँ कि जिस कथित राजकुमार टोर्लोनिया को किसान भूस्वामी समझकर पूजते हैं, वह एक फ्रान्सीसी रेजीमेण्ट के साथ सौ वर्ष पहले इटली आया था। वह राजकुमार तो नहीं ही था, परन्तु उसके नाम के आगे-पीछे डॉन पाजीझा की तरह कोई सींग-पूँछ तक नहीं थी। वह शराब और कबाब बेचनेवाला था। उसका नाम टार्लोनिया नहीं, टोर्लोन था। वह एक फ्रान्सीसी सटोरिया था। उसने लड़ाई का सट्टा किया ; उसने नमक का सट्टा किया ; उसने पादरियों और पिडमाण्टेर्सो से रुपए कमाये। उसने दायें-बाएँ सब तरफ लूट मचाई और ड्यूक बना दिया गया और तब राजकुमार...'

'तुम सपना तो नहीं देख रहे हो ?' मैंने बेरार्डो से पूछा लेकिन बेरार्डो मेरी ओर से मुड़कर अबेजानोवाले युवक से बातें करने लग गया था। अब दोनों में कोई विरोध नहीं था। बेरार्डो के बोलने और हाव-भाव पर से प्रकट होता था कि उसकी सभी शंकाओं का समाधान हो गया है। वह फिर वही पुराना बेरार्डो हो गया था।

टोर्लोनिया के बारे में उसकी कही बातें मुझे परी की कहानी जैसी लगीं परन्तु पहलेवाला बेरार्डो परी की ऐसी कहानियों का बहुत शौकीन था।

वे बातें कर ही रहे थे कि मैं फिर ऊँघ गया। जब फिर मेरी आँख खुली तो सबेरा हो गया था। बेरार्डो बन्द पींजड़े में शेर की तरह कोठरी में चक्कर लगा रहा था। अवे जानोवाला युवक मेरे बग़ल में लेटा हुआ था, लेकिन उसे नींद नहीं आई थी। वह बिलकुल मेरे पास ही, मानो मेरे जागने की प्रतीक्षा करता हुआ लेटा था।

उसने मेरे कान में कहा—तुम्हें बेराडों पर विश्वास है ?

'हाँ !' मैंने उसे जवाब दिया।

युवक बोला—प्रत्येक किसान को उसपर विश्वास करना चाहिये। फाण्टामारा में तुम प्रत्येक को उस पर विश्वास करने के लिए कहना। वह एक असाधारण आदमी है। यह उसका सौभाग्य ही है कि उसे उनसब कठिनाइयों में से होकर गुजरना पड़ा। मुझे विश्वास है कि सारी इटली में उसके जैसा एक भी किसान नहीं है। फाण्टामारा में तुम लोगों से यह कहना। तुम बेरार्डो का कहना मानना। आज या कल में तुम दोनों अवश्य ही छोड़कर घर भेज दिये जाओगे। मेरा भाग्य जुदा हो सकता है। यदि मैं तुम्हें अभी न बतला सकूँ, तो बुरा मत मानना। बेरार्डो फाण्टामारा में तुमसे सब कह देगा। पहला काम है बेरार्डो और राफेल स्कार्पोन में समझौता करवाना। बाक़ी बेरार्डो जानता है।

आठ बजे पुलिसवाले हमारे लिए एक टीन काफी लाये। बेरार्डो ने अपनी चहल-कदमी रोककर वार्डर से कहा—

'मैं इसी समय पुलिस-अधिकारी से बात करना चाहता हूँ।'

'तुम्हारी बारी आने तक प्रतीक्षा करो।' वह जवाब देकर चला गया।

अवेजानोवाले युवक ने भी ये शब्द सुने और बेरार्डो की ओर डरी हुई आँखों से देखने लगा। उसे उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई, परन्तु विश्वासघात का डर उसकी आँखों में बना हुआ था।

नौ बजे हम तीनों पुलिस अधिकारी के सामने पेश किये गये।

बेरार्डो ने आगे बढ़कर कहा—

'साहब, मैं सब कुछ बता देने को तैयार हूँ।'

पुलिस अधिकारी ने कहा—शुरू करो।

'स्टेशन के पासवाले काफी-घर में मिली वर्जित पर्चों का पार्सल मेरा था। वे पर्चे मैंने किसानों में बँटवाने के लिए छपवाये थे। भेदी आदमी मैं हूँ।'

—बस—

तो भेदी आदमी आखिर पकड़ ही लिया गया।

उसकी गिरफ्तारी के समाचार सुनकर पत्रकारों, फैसिस्ट प्रधानों और ऊँचे सरकारी अफसरों की भीड़ थाने पर, जहाँ वह बन्द था, इकट्ठी होने लगी। तो भेदी आदमी किसान था।

पुलिस उसे शहर में ढूँढ़ रही थी, पर शहर का एक भी निवासी क्या उनसे छिपा था? एक-एक के सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी उनके पास थी। खासकर सरकार के विरोधी की तो पूरी तरह से सही-सिक्कों वाली सूची, निगरानी और जानकारी थी। पर किसान? किसान को कौन जानता है? किसानों को जाननेवाली सरकार इटली में भी है? और भला वे एक-एक किसान के नाम की सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी रख ही कैसे सकते थे?

तो भेदी आदमी एक किसान निकला। जब तक बेरार्डो कोठरी से बाहर इस या उस अफ़सर के सामने ले जाने को निकाला जाता था, जो उससे कुछ पूछना या उसे देखना-मात्र चाहता था। सतर्कता के लिए बेरार्डो, मैं और अवेज़ानोवाला युवक रात के समय तीन कोठरियों में अलग-अलग बन्द कर दिये जाते थे। लेकिन कुछ दिनों तक दिन के समय विशेष पूछ-ताछ करने के लिए वे हम तीनों को एक साथ लाते थे।

पुलिस अधिकारी बेरार्डो से बहुत-सी बातें मालूम करना चाहता था। वह गुप्त छापाखाने का ठिकाना, मुद्रक का नाम, पता और यदि हो तो, इस काम से उसके अन्य साथियों की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता था। लेकिन बेरार्डो कोई जवाब नहीं देता था। बेरार्डो यह बतलाने को कि मैं कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हूँ, इतनी जोर से ओठ काटता कि खून निकल आता था।

हरएक तफ़तीश पर उसकी हालत बुरी होती गई। पहली तफतीश के समय उसकी दाहिनी आँख के नीचे केवल एक नीला निशान था, लेकिन बाद-बाद में तो चोटों के कारण उसे पहिचान सकना भी मुश्किल हो गया था। ओठ, नाक, कान, भौंह सर्वत्र चोट के निशान थे। लेकिन वह फिर भी नहीं बोलता था। वह पुलिस अधिकारी के एक भी सवाल का जवाब नहीं देता था। जब वह अपने फटे हुए ओठ अधिक समय तक बन्द नहीं रख

सकता था तो पुलिस अधिकारी को अपनी चुप्पी का निश्चय बतलाने के लिए जोर से दाँत खींच लेता था।

एक दिन मैं भी 'विशेष तफतीश' के लिए ले जाया गया। एक तह-खाने में ले जाकर मेरे दोनों हाथ चमड़े के पट्टे से पीठ पीछे बाँधकर मुझे लकड़ी की एक मेज पर पटक दिया। तब मानो मेरी पीठ पर आग-सी बरसने लगी, मानो मेरी पीठ में छेद बनाकर अंगारे उँड़ेले जाने लगे, मानो मेरी पीठ फाड़कर एक अथाह गड्ढा बनाया जाने लगा।

जब मुझे होश आया तो मेरे मुँह से खून निकलकर मेज पर बह रहा था। मेरा गला जल रहा था, इसलिए मैं उसे जबान से चाट गया।

दूसरे दिन अवेजानोवाला वह आदमी छोड़ दिया गया।

मैं और बेरार्डो एक ही काल-कोठरी में एक और आदमी के साथ, जो पुलिस के भेदिये-सा लगता था, बन्द कर दिये गये। मैंने अपना सन्देह बेरार्डो के कान में कहा, लेकिन उसने जवाब दिया :

'कोई हर्ज नहीं। मुझे जो कुछ कहना था, मैं पहले ही कह चुका हूँ।'

लेकिन जब मैंने यह कहा कि अवेजानोवाला आदमी रिहा कर दिया गया है, तो वह बोला—

हमें भी छुटकारे का कोई उपाय सोचना चाहिये। यदि जल्दी ही समाप्त हो जाय तो यह खेल बुरा नहीं है।'

खेल शुरू करना बहुत सरल था, लेकिन उसे समाप्त करना इतना सरल नहीं था।

बेरार्डो के कहने पर कि उसका पहलेवाला बयान झूठा था, पुलिस अधिकारी ने हँसते हुए यह कहकर उसे फिर काल-कोठरी में बन्द कर दिया कि या तो तुम जो कुछ जानते हो, सच-सच बतला दो; नहीं तो काफी तकलीफ उठानी पड़ेगी।

उसी साँझ बेरार्डो फिर दूसरी तरह की विशेष तफतीश के लिए बुलाया गया। बेरार्डो की विशेष तफतीश बहुत आतंकमयी होती थी। बेरार्डो सामना करता था। वह बिना मारे मार खाने को तैयार नहीं था। उसके हाथ पाँव बाँधने को आठ-नौ वार्डर लगते थे। उस साँझ उसने

ऐसा बहाना किया मानो बिना मुक़ाबला किये ही यन्त्रणा सह लेगा। लेकिन जब एक वार्डर झुका हुआ रस्सी से उसके घुटने बाँध रहा था तो उसने उछलकर इतने जोर से उसकी गुद्दी में दाँत गड़ा दिये कि छुड़ाने के लिए बेरार्डो के जबड़ों पर दूसरे वार्डरों को हथौड़े चलाने पड़े। अन्त में वे उसे हाथ-पाँव टाँगकर इस तरह कोठरी में लाये जैसे सलीब पर से उतारने के बाद ईसा को ले गये थे।

दूसरे दिन सवेरे बेरार्डो ने मुझसे कहा—वह बाहर है और मैं यहाँ भीतर। आखिर तो, वह हृदय से भी शहरवाला ही है। वह बाहर गुल-छर्रे उड़ा रहा है और मैं उसके लिए यहाँ अपनी जान दे रहा हूँ। मैं सब कुछ क्यों न कह दूँ? सब कुछ, जो मैं जानता हूँ और जो मैं नहीं जानता और केवल खयाल कर सकता हूँ और इसके सिवा जिसका मैं ख़याल तक नहीं कर सकता, वह भी क्यों न कह दूँ?

(जिस कैदी को हम भेदिया समझते थे, उनसे अपने कान खड़े किये।) दूसरी बार जब हम पुलिस अधिकारी के सामने बुलाये गये तो मैंने सोचा कि बेरार्डो जेल से छूटने के लिए अवेज्ज़ानोवाले आदमी ने उससे जो कुछ कहा था सब कह देगा। मैं तय नहीं कर पाया था कि उसका ऐसा करना उसके हक़ में बुद्धिमानी होगी या नहीं।

'तुम सच-सच बतलाने को तैयार हो?' पुलिस अधिकारी ने उससे पूछा।

'हाँ,' बेरार्डो ने जवाब दिया।

पुलिस अधिकारी ने उसके सामने एक अखबार किया, जिसमें बड़े-बड़े अक्षरों में यह शीर्षक था:

"बेरार्डो वॉयला जिन्दाबाद!"

'गिरफ्तार होने के दिन से आज तक पुलिस की ओर से तुम्हारे साथ जो बर्ताव हुआ, उसकी अच्छी जानकारी गुप्त-रूप से छपे हुए इस समाचार-पत्र में दी हुई है। जब कि तुम सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हुए हो, तो पहले यहीं से शुरू करो कि तुमने काल-कोठरी से इस गुप्त अखबार को समाचार कैसे भेजे।'

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

'इस अखबार में फाण्टामारा के बारे में बहुत कुछ है। एक नाले का बहाव बदलने का जिक्र है, एक चरागाह का उल्लेख है, फ्युसिनो-समस्या का उल्लेख है, किसी स्योफिलो की आत्म-हत्या का उल्लेख है, और किसी एल्वीरा की मृत्यु का और दूसरी बहुत-सी बातों का उल्लेख है। इससे प्रकट होता है कि फाण्टामारा के निवासी के सिवा इसे और कोई नहीं लिख सकता। अच्छा तो अब यह बतलाओ कि तुमने काल-कोठरी में से इस गुप्त अखबार को समाचार कैसे भेजे !'

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। वह पुलिस अधिकारी के हाथवाले उस अखबार की ओर, जिसमें उसका और एल्वीरा का नाम और बड़े शीर्षकों में 'बेरार्डो जिन्दाबाद !' था, स्तब्ध होकर ताकने लगा।

अधिकारी ने बार-बार कहा—मुँह तो खोल, भले आदमी !

बेरार्डो ने कहा—मैं नहीं बतला सकता। मर भले ही जाऊँ।

पुलिस अधिकारी उसे समझाने-बुझाने लगा। लेकिन बेरार्डो का मन कहीं और था। वह न तो पुलिस अधिकारी को ही देख रहा था और न सुन ही रहा था। वह उस आदमी की तरह जिसने दान-पत्र लिख दिया हो और मरने को तैयार हो फिर अपनी काल-कोठरी में भेज दिया गया।

उस रात हम दोनो में से कोई न सोया।

बेरार्डो ने हाथों से इस तरह सिर थाम रखा था मानो फटा ही जाता हो। वह सब कुछ बतला देने का निर्णय करता। तब बदल देता। फिर इरादा करता फिर बदल देता। वह हाथों में इस तरह सिर थामे था कि कहीं फट न जाय। मैं जेल में क्यों सड़ूँ ? जेल में तीस वर्ष की उम्र में प्राण क्यों दूँ ? विश्वास के लिए ? एक आदर्श के लिए ? लेकिन मैंने राजनीति में भाग लिया ही कब था ? इसी तरह कई घण्टे बीत गये। बेरार्डो बॉयला अपने आप से और मुझसे बोलता रहा जब कि कोठरी में का तीसरा आदमी कान लगाकर प्रत्येक शब्द सुनता रहा। उसके अन्दर एक संघर्ष हो रहा था।

वह कहने लगा—मेरे विश्वासघात करने से सब कुछ नष्ट हो जायेगा।

मेरे विश्वासघात से फाण्टामारा का सदा के लिए सर्वनाश हो जायगा। यदि मैं विश्वासघात करता हूँ तो फिर से ऐसा अवसर आने के लिए शताब्दियाँ लग जायेंगी। और यदि मुझे मरना पड़े ?...तो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए मरनेवाला मैं पहला किसान हूँगा। दूसरे किसानों के लिए, किसानों की एकता के लिए, मरनेवाला पहला किसान !

यह उसकी सबसे बड़ी खोज थी। इस शब्द ने मानो उसकी आँखों पर से पट्टी हटा दी। ऐसा लगा कि मानो हमारी कोठरी में एकाएक प्रकाश भर गया हो।

'एकता', वह कहने लगा। 'एकता क्या है ? क्या तुमने कभी यह शब्द सुना था ? यह एक नया शब्द है। एकता। यह है—मिल-जुलकर रहना, सोचना और काम करना। यह है—शक्ति। यह है—स्वाधीनता। यह है—जमीन (बिना लगान की)। तुमने कभी यह शब्द सुना था ? कैसी सीधी-सी बात है ? तुम यह शब्द अवश्य ही फाण्टामारा ले जाना। यदि मैं मर जाऊँ'—उसने मुझसे कहा—'तो तुम्हीं यह शब्द फाण्टामारा ले जाना। एकता वहाँ तुम सबसे कहना—सबसे पहले राफेल स्कार्पोन से और तब दूसरे लोगों से, माइकेल जोम्पा, जनरल बाल्डोसेरा, पाञ्जियो रनाक्च्यो और बाक़ी सबसे कहना। एकता। किसानों के आपसी द्वेष का अन्त होना चाहिए। किसानों और मजदूरों के बीच द्वेष का अन्त हो। हममें केवल एक ही चीज की खामी है, वह है—एकता। बाक़ी सब अपने आप आ जायगा।'

दो दिन बाद मैं पुलिस अधिकारी के सामने बुलया गया, जो असाधारणतया नम्र था।

उसने मुझसे कहा—कल रात बेरार्डो वॉयला ने आत्महत्या कर ली। निराशा में उसने अपनी कोठरी के जँगले से लटककर फाँसी लगा ली। इसकी सत्यता में तो सन्देह नहीं, परन्तु कोई गवाह नहीं है। एक गवाह नितान्त आवश्यक है। क्या तुम इस आशय के लेखी बयान पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो कि कल रात बेरार्डो ने खुद फाँसी लगा ली ? अगर हस्ताक्षर कर दोगे तो तुम अविलम्ब रिहा कर दिये जाओगे।

बेरार्डो के मरने का सुनते ही मैं फूट-फूटकर रोने लगा।

अधिकारी ने एक लिखित बयान तैयार किया और मैंने बिना पढ़े ही उसपर दस्तखत कर दिये। तब मुझे पुलिस प्रधान के दफ़्तर में ले गये।

'क्या मरा हुआ बेरार्डो वॉयला तुम्हारा मित्र था?' उसने मुझसे पूछा।

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक अकसर आत्महत्या करने की सोचा करता था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही मृतक को प्रेम-सम्बन्धी एक भयंकर निराशा का सामना करना पड़ा था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक ही कोठरी में मूँदे गये थे और जब तुम सो रहे थे, वह जंगले की एक छड़ से फाँसी लटक गया?'

'जी हाँ।'

तब उसने मुझसे एक लिखित बयान पर दस्तखत करवाये और मुझे जाने दिया।

वहाँ से मैं 'न्याय-महल' में न्याय-मूर्ति के समक्ष पहुँचाया गया।

न्याय-मूर्ति ने मुझसे पूछा—

'क्या मृतक बेरार्डो वॉयला तुम्हारा मित्र था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही मृतक को प्रेम-सम्बन्धी भयंकर निराशा का सामना करना पड़ा था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक कोठरी में मूँदे गये थे और जब तुम सो रहे थे, वह जंगले की छड़ से फाँसी लटक गया।'

'जी हाँ।'

उसने भी मुझसे एक लिखित बयान पर हस्ताक्षर करवाये और तब मुझे जाने दिया।

दोपहर को मेरी रिहाई हुई। मैं पहरे में स्टेशन लाया गया और यात्रा करने के अनिवार्य परवाने देकर अवेज़ानोवाली रेलगाड़ी में बैठा दिया गया। अब बाक़ी का हाल तुम्हें मेरे पिताजी सुनाएँगे।

अभी मेरे लड़के ने तुम्हें जो कहा उसमें से बहुत कुछ हम उसके फाण्टामारा आने से पहले ही भेदी आदमी से मालूम कर चुके थे।

किसानों का अपना पत्र—किसानों का पहला पत्र छापने के लिए भेदी आदमी से हमें मिले हुए छापने के पत्थर और दूसरे सामान के आस-पास हम कोई पन्द्रह-बीस आदमी जमा हुए ही थे कि ठीक उसी समय मेरा लड़का आ पहुँचा। एक लकड़ी की पेटी में, ढक्कन के नीचे लीथोग्राफ जैसा एक छापे का पत्थर और तेजाब और स्याही थी, जिनसे तुम सफेद कोरे काग़ज़ पर कोई-सी भी हाथ की लिखावट लिखकर छाप सकते थे और मन-चाही प्रतियाँ निकाल सकते थे।

सड़क के बीच, सार्सानेरा की मेज़ पर वह छापे का पत्थर रखे, जैसा कि मैंने तुम्हें बतलाया, हम क़रीब पन्द्रह आदमी उसके आस-पास जमा होकर पत्र की रूप-रेखा के बारे में बहस कर रहे थे।

वहाँ पोर्टोप्या का नायक था। उसकी लिखावट हम सबमें साफ थी और वही सफेद कोरे काग़ज़ पर लिखनेवाला था। जनरल वाल्डीसेरा भी, जो व्याकरण और हिज्जे जानता था, वहाँ था। राफेल स्कार्पोन भी वहाँ था, जिसे भेदी आदमी ने छापे के पत्थर का उपयोग करना समझाया था। और वहाँ मेरे और सार्सानेरा के सिवा एण्टोनियो ब्रास्योला, पास्केल सिपोला, सिरोप्ति रोण्डा, विन्सेञ्ज़ो स्कॉर्ज़ा, ग्यासिण्टो बार्लेटा, ग्योवानी टेस्टोन, एनाक्लेटो दर्ज़ी, एल्बर्टो सेकोन और माइकेल जोम्पा थे।

हमारी पहली बहस पत्र के नाम के बारे में थी।

पोर्टोप्या का नायक शहर के पत्रों का-सा नाम जैसे 'सन्देश',

'जागृति' या ऐसा ही और कुछ चाहता था ; लेकिन राफेल स्कार्पोन ने, जिसका बोलने और बहस करने का ढंग बिलकुल बेरार्डो जैसा था, उसे चुप कर दिया।

उसने कहा—हमारे पत्र में हम किसी की नक़ल नहीं करेंगे। यह अपने ढंग का पहला पत्र होगा।

माइकेल जोम्पा ने एक बहुत ही अच्छा अर्थ-गम्भीर नाम सुझाया, 'सत्य'।

लेकिन स्कार्पोन ने उसे भी नहीं माना।

उसने कहा—सत्य? सत्य को कौन कम्बख्त जानता है!

माइकेल ने जवाब दिया—हम नहीं जानते, पर हम जानना चाहते हैं।

स्कार्पोन ने पूछा—और जब जान लोगे तो उसका क्या करोगे—भाजी बनाओगे या शहद लगाकर चाटोगे?

यह था उसके बहस करने का ढंग।

जनरल बाल्डीसेरा को दूसरा अच्छा विचार सूझा : 'न्याय'।

स्कार्पोन ने कहा—तुम तो पागल हो। क्या न्याय सदा हमारे विरुद्ध नहीं रहा है?

उसके कहने का मतलब समझने के लिए तुम्हें ध्यान में रखना चाहिये कि हमारे लिए हमेशा 'न्याय' का मतलब था कड़ाबीनवाले। न्याय के हाथों पड़ने का मतलब था, कड़ाबीनवालों के हाथों पड़ना। न्याय के हक में साहाय्य करने का अर्थ था कड़ाबीनवालों को खबर देने-वाले और उनके भेदिये बनना।

बूढ़े मोची ने अधीर होकर कहा—मेरा मतलब सच्चे न्याय से है। सबके लिए समान न्याय।

राफेल स्कार्पोन ने जवाब दिया—वह तुम्हें स्वर्ग में मिलेगा।

इसका कोई जवाब नहीं था। पत्र के नाम के लिए सासोनेरा का प्रस्ताव था 'किसानों का शंखनाद', लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

स्कार्पोन ने कहा—हम क्या करें?

नायक ने कहा—हमें एक अच्छा-सा नाम खोज निकालना चाहिये। तुम्हीं कुछ सुझाओ।

'मैं तो पहले ही कह चुका हूँ—'हम क्या करें ?' '

उसके तीन बार दुहराने पर तब हमारी समझ में आया कि स्कार्पोन का पत्र के नाम के लिए प्रस्ताव ही वास्तव में 'हम क्या करें ?' था; हम विस्मय से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

नायक ने कहा—लेकिन यह कोई नाम नहीं है। हमें पत्र के ऊपर ख़ूबसूरत लिखावट में लिखने के लिए एक नाम चाहिये। समझे न ?

'बहुत अच्छा, तो तुम्हारी ख़ूबसूरत लिखावट में पत्र के ऊपर की ओर लिखो 'हम क्या करें ?' और यह हो जायगा तुम्हारा नाम।' स्कार्पोन ने कहा।

नायक ने आपत्ति की—लेकिन यह एक हास्यास्पद नाम है। यदि हमारे पत्र की एक प्रति रोम जायगी तो वे लोग हँसेंगे।

राफेल स्कार्पोन का मिजाज बिगड़ गया। यह पत्र किसानों का पहला पत्र होनेवाला था, किसानों के लिए और किसानों द्वारा लिखा जानेवाला पहला किसान-पत्र। रोमवाले इसके बारे में कुछ भी सोचें, इस बात की उसे जरा भी परवाह नहीं थी।

बाल्डीसेरा स्कार्पोन के विचारों से सहमत हो गया, इसलिए उसका प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया।

इस बीच नायक अनिच्छा-पूर्वक बैठकर पत्र का नाम लिखने लगा और हम बाक़ी के लोग पहले लेख के बारे में बहस करने लगे।

माइकेल ज़ोम्पा ने कहा—पहला लेख होना चाहिये : 'उन्होंने बेरार्डो वायला को मार डाला।' इसे तुम सभी मंजूर करोगे।

स्कार्पोन ने इसे मंजूर कर लिया, लेकिन वह इसे यों चाहता था :

'उन्होंने बेरार्डो वॉयला को मार डाला। हम क्या करें ?'

माइकेल ने बतलाया—'हम क्या करें ?' तो पहले ही अखबार के नाम में आ गया है।

स्कार्पोन ने कहा—एक बार काफी नहीं है। हमें इसे हर बार दुहराना

चाहिये। यदि हम इसे नहीं दुहराते हैं, तो नाम व्यर्थ है। 'हम क्या करें?' प्रत्येक लेख में दुहराया जाना चाहिये। 'उन्होंने हमारा पानी छीन लिया। हम क्या करें?' आया तुम्हारी समझ में? 'पादरी हमारे मुर्दे नहीं दफ़नाता। हम क्या करें?' 'वे क़ानून के नाम पर हमारी औरतों के साथ बलात्कार करते हैं। हम क्या करें?' 'डान सर्कोस्टाञ्जा दोगला है। हम क्या करें?'

तब स्कार्पोन का भाव हमारी समझ में आया और हम राजी हो गये।

बेरार्डो के नाम के बारे में भी एक छोटी-सी बहस हुई। बाल्डीसेरा का कहना था कि वॉयल्ला दो 'ल' से लिखा जाना चाहिये, पर माइकेल जोम्पा के विचार से एक ही 'ल' काफी था। लेकिन नायक ने यह कहकर बहस समाप्त कर दी कि वह इस खूबी से लिख सकता है जिसमें पढ़नेवालों की समझ में न आयेगा कि एक 'ल' है या दो।

जैसे ही मैंने देखा कि अब किसी चीज पर बहस करना बाक़ी नहीं है तो मैं अपने लड़के के साथ एकान्त में समय बिताने घर चला गया; क्योंकि मैं उसे खो ही चुका था और वह एक तरह से नया जन्म लेकर ही मेरे पास लौट आया था।

जब स्कार्पोन मेरे पास हमारे पत्र 'हम क्या करें?' की करीब तीस प्रतियाँ लेकर आया तो रात काफी बीत चुकी थी। वह चाहता था कि मैं उन्हें सैन बेनेदेतो जाकर जहाँ मेरे कई परिचित थे, बाँट आऊँ। दूसरे किसान भी अगले दिन दूसरे-दूसरे गाँवों में पत्र बाँटने जा रहे थे। कुल मिलाकर कोई पाँच सौ प्रतियाँ छापी गई थीं।

मेरी स्त्री का परिवार सैन बेनेदेतो में रहता है, और हम तीनों ने वहाँ जाकर जेल से अपने पुत्र की रिहाई का उत्सव मनाना तय किया। वहाँ जाकर ही हमारी रक्षा हुई।

दूसरे दिन दोपहर के बाद हम सैन बेनेदेतो के लिए रवाना हुए। पत्र बाँटने में मुझे आधा घण्टा लगा। उस रात हमने अपना ब्यालू सैन बेनेदेतो में ही किया और नौ बजते-बजते फाण्टामारा की ओर चल दिये। हम आधी दूर आये होंगे कि हमें दूर से गोलियों की आवाज सुनाई दी।

'आज कौन-से सन्त का दिन है?' मेरी पत्नी ने यह जानने के लिए कि गोलियों की आवाज़ कौन-से गाँव से आ रही है, पूछा।

वह कौन-से सन्त का दिन था, यह अनुमान करना कठिन था। सन्त लुई का दिन कभी से बीत गया था और सन्त एन के दिन को अभी काफी देर थी।

मैंने कहा—अरे, आवाज़ तो फाण्टामारा से आ रही है।

स्थानीय शहर की ओर से आता हुआ मैनाफोर्नो का एक गाड़ीवान उसी क्षण उधर से गुज़रा।

'हेई, तुम फाण्टामारावासी!' वह बिना रुके ही चिल्लाया—'फाण्टामारा में लड़ाई हो रही है।'

हम चलते ही गये।

'लड़ाई? लड़ाई क्यों?' हमने एक दूसरे से पूछा।

'फाण्टामारा के लोगों की आपस में एक दूसरे से लड़ाई? यह असम्भव है।' हमने एक दूसरे से कहा।

तो क्या ठेकेदार फाण्टामारा के लोगों से युद्ध कर रहा है? पर क्यों?

जब-तब गोलियाँ रुक जाती थीं और फिर चलने लगती थीं। जैसे-जैसे हम समीप पहुँचते गये, साफ मालूम पड़ने लगा कि गोलियों की आवाज़ फाण्टामारा से आ रही है और वह आवाज़ राइफलों की थी।

'हम क्या करें?' हमने एक दूसरे से पूछा।

यही प्रश्न स्कार्पोन ने पूछा था। 'हम क्या करें?'

प्रश्न पूछने की अपेक्षा उत्तर देना कहीं कठिन था। साथ ही हम चलते भी गये।

पेसिना और फाण्टामारा की सड़कों के चौराहे पर हमें पास्केल सिपोला मिला।

'तुम कहाँ जा रहे हो? फाण्टामारा? तुम पागल तो नहीं हो?' पैसिना की ओर भागकर जाते हुए उसने चिल्लाकर हमसे कहा।

हम पास्केल सिपोला के पीछे-पीछे भागने लगे।

'लेकिन फाण्टामारा में क्या हो रहा है? ये गोलियाँ क्यों चल रही हैं?' मैं उसके पीछे चिल्लाया।

उसने जवाब दिया—यह लड़ाई है ! यह लड़ाई है। किसानों खिलाफ लड़ाई है—अखबार के खिलाफ लड़ाई है।

'दूसरे सब लोग क्या हुए ?'

'जो भाग सके, भाग गये। जो बचकर निकल सके, बच निकले सिपोला ने बिना रुके जवाब दिया।

मेरे लड़के ने पूछा—क्या स्कार्पोन बच निकला ?

सिपोला ने क्रास का चिह्न बनाते हुए कहा—परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे।

'क्या बेनेर्डो सेण्टो बच निकला ?'

सिपोला ने क्रास का चिह्न बनाते हुए कहा—परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे।

'और पॉन्जियो पिलाटो ?'

'वह पहाड़ों के ऊपर निकल भागा।'

'और माइकेल जोम्पा ?'

'उसने ओर्टोना की सड़क पकड़ी।'

'और जनरल बाल्डीसेरा ?'

'परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे।'

इसी समय हमने टापों की आवाज अपनी ओर आती सुनी। सम्भवतः कड़ाबीनवाले पेसीना से फाण्टामारा जा रहे थे।

बचने के लिए हम खेतों में घुस गये। अँधेरे में पास्केल सिपोला कहीं खो गया। उसके बाद हमने आज तक उसके बारे में नहीं सुना।

और न हमने किन्हीं दूसरों के बारे में ही—जो मर गये थे या जो भाग निकले थे, और न हमने हमारे मकान और न हमारी जमीन के बारे में ही कुछ सुना।

अब हम यहाँ हैं। मेरी आदमी ने देश से निकलने में हमारी सहायता की। लेकिन हम अधिक समय तक विदेश में भी नहीं रह सकते। हम क्या करें ?

इतने लम्बे संघर्ष और व्यथा और आँसुओं के बाद, चोटों और रक्तपातों, घृणा और निराशा के बाद हम क्या करें ? आखिर क्या करें